CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0152,1J96x [illegible]
B0
[illegible]
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0152,1 J96x
B0
१७४९

कृपया यह ग्रन्थ नीचे निर्देशित तिथि के पूर्व अथवा उक्त तिथि तक वापस कर दें। विलम्ब से लौटाने पर प्रतिदिन दस पैसे विलम्ब शुल्क देना होगा।

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय, वाराणसी।

मुमुक्षु भवन वेद वेदांग विद्यालय
आगत क्रमांक 1869
दिनांक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

0152,1J96x
BO

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
आगत क्रमांक ...... 1741 ....
दिनांक..

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अस्सी, वाराणसी।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

श्रीगणेशायनमः॥श्रीगुरुभ्यो
नमः॥ अथसुंदरविलासलिख्य
ते॥ अथगुरुदेवकोअंगप्रारंभः
इंदवछंद॥ मोजकरीगुरुदेवद
याकरि॥ शब्दसुनायकह्योहरिने
रो॥ ज्यौंरविकेप्रगटेनिसिजातसु
दूरकियोभ्रमभांनअंधेरो॥ काय
कवायकमांनसहूकरि॥ हेगुरुदेव
हिवंदनमेरो॥ सुंदरदासकहेकर
जोरिके॥ दादूदयालकोहूंनितचे
रो॥१॥ पूरणब्रह्मविचारनिरंत
र॥ कामनक्रोधनलोभनमोहे॥ आ
नखचारसनाअरघ्राणसु॥ देखि
कछूकहूँनैननमोहे॥ ज्ञानसरू
पअनूपनिरूपन॥ जासगिरासु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नमोहनमोहे। सुंदरदासकहेंकस्जो
रिको॥ दादूदयालहिमोरिनमोहे॥२॥
धीरजवंतअडिगजितेंद्रिय। निर्मल
ज्ञानगह्योदृढआदू॥ सीलसंतोषछि
माजिनकेघट। लागिरह्योसुअना
हदनादू॥ भेषनपक्षनिरंतरलक्ष
ज॥ औरनहिकछुवादविवादू॥ ए
सबलछनहेंजिनमांहिसु॥ सुंदरके
उरहेंगुरुदादू॥३॥ भोजलमेंवहिजा
तहुतेजिन। काढिलीयेअपनेंकर
आदू॥ औरसंदेहमिटायदीयोस
व। कौननटेरसुनायकेनादू। पूर
नब्रह्मप्रकासकीयोपुन। छूटग
योयहवादविवादू। ऐसीकृपाजव
रिहमऊपरसुंदरकेंउरहेंगुरुदादू
४। कोईकगोरषकोंगुरुथापतकोई
कहतदिगंबरआदू। कोउककंथ

रकोउकमरथारकोउकवीरकोराष
तनाद्रू॥कोउकहेंहेगीदासहमारेजे
योंकरिठांनतवादविवादू ओरतो
संतसवहीसिरऊपरसुंदरकेऊर
हेंगुरुदादू॥५॥कोईविभूतजटानष
धारिकहेंयहमेषहमारोहेआदू
कोईककांनफरायपिरेंमुनकोईक
सिंगीवजावतनादू॥कोईककेस
लुचाईकरेव्रतकोईकजंगमकेसि
ववादू॥योंसवमूलपिरेजितहितित
तसुंदरकेउरहेंगुरुदादू॥६॥जोगिक
हेंगुरुजैनकहेंगुरुवोधकहेंगुरुजं
गममांने॥भक्तकहेंगुरुन्यासीकहे
वनवासीकहेंगुरुआवरवांने॥शे
षकहेंगुरुसोफिकहेंगुरुयाहीतेंसुं
दरहोतहेरांने॥वाहूकहेंगुरुवाहकै
हेंगुरुहेंगुरुहेंगुरुसोईसवेभ्रमभां

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नैं ॥ ७ ॥ सो गुरु देव लिपैं न छिपैं कछू स
त्व रजो तम ताप निवारी ॥ इंद्रिय देह म
पा करि जो न नसी तलता समता अरधा
री ॥ व्यापक ब्रह्म विचार अखंडित है न
उपाधी सबै जिन टारी ॥ शब्द सुनाय सं
देह मिटावत ॥ सुंदर वा गुरु की बलिहा
री ॥ ८ ॥ है गुरु को उर ध्यान हमारे ॥ पूरन
ब्रह्म बताय दीयो जिन ॥ एक अखंडि
त व्यापक सारे ॥ राग रु द्वेष करैं अब को
न से ॥ जोई है मूल सोई सब डारे ॥ संसए
सोक मिट्यो मन को सब तत्व विचार
कह्यो निरधारे ॥ सुंदर सुध कीये मल
धोई कैं है गुरु को उर ध्यान हमारे ॥ ९
ज्यौं कपडा धरजी गहि ब्यौंतन काष्ठ
हिकौं बढई कसि आनैं ॥ कंचन कौं जु सो
नार कसै पुनि लोह कौं घाट लोहार
हि जानैं ॥ पाहन कौं कसि लेत सिलाव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ट पात्र कुं मार के हाथ निपानें ते सें हि
शिष्य कुं सें गुरदेव जु सुंदर दास तत्व
मन माने १० ॥ छंद मनहर ॥ ऐसे गु
रुदेव को हमारि जु प्रनाम है सत्रु हूं न
मित्र कोउ जाके सब है समान देह को
ममत्व छांडि आतमा ही राम है और
हू उपाधि जाके कबहू न देषीयत सुष
के समुद्र में रहत आठों जांम है रिद्धि अ
रु सिद्धि जाके हाथ जोरि आगे षरी सुं
दर कहत ताके सब ही गुलाम है अ
धिक प्रसंसा हम के सें करि कहि सकें
ऐसे गुरदेव को हमारें जु प्रनाम है ११
ज्ञांन को प्रकास जाके अंधकार भयो
नास है अभिमान जिन तज्यो जांन सा
रषी सोई सुष सागर उजागर वैराग
र ज्यों जाके बैन सुंन त बिलात हैं विकार
थी अगम अगाध अति कोउ न हि जां

नेगतिआत्माकोअतमवअधिकअ
पारधी॥ऐसेगुरदेववंदनीकतिहू
लोकमांही॥सुंदरविराजमांनसोम
नउहारधी॥१२॥सोईगुरदेवजाकेदू
सरीनवातहे॥काहूसोंनरोषनोषका
हूसोंनरागद्वेषकाहूसोंनवेरभावका
हूकीनघातहे॥काहूसोंनवकवादका
हूसोंनहिविषाद॥काहूसोनसंगनतो
कोउपक्षपातहे॥काहूसोनदुष्टवेनउ
नतेंन॥काहूसोंनलेंनदेंन॥ब्रह्मकोवि
चारकछूऔरनसुहातहे॥सुंदरकह
तसोईईसनिकोमहाईस॥सोईगुरदे
वजाकेदूसरीनवातहे॥१३॥सबशिष्य
पलटेंसोसतगुरुजानीयें॥लोहकोंजो
पारसपषांनहूंपलटलेत॥कंचनछू
वतहोतजगमेंप्रमांनीयें॥द्रुमकोंजो
चंदनपलटकेलगायवास॥आपके
समांनताकोंसीतलतांआनीयें॥की

टकोंज्यों भ्रंगहूपलटके करत भ्रंग
सोउडिजायताको अचरज मांनी
यें ॥ सुंदर कहत यह सगरे प्रसिध बा
तसद सिषपलटें सो सद गुरु ज्ञानी हैं
१४ गुरु विन ज्ञांन नहीं गुरु विन ध्या
न नहीं गुरु विन आतमां विचार नल
हतुहे ॥ गुरु विन प्रेम नहीं गुरु विन प्री
त नहीं ॥ गुरु विन सील हू संतोष न गह
तुहे ॥ गुरु विन प्यास नहीं वधी को प्रका
स नहीं भर्म हू को नांस नाहीं संसे ई रह
तुहे ॥ गुरु विन वाट नांही कोडी विन हा
ट नांही सुंदर प्रगट लोक वेद यों कह
तुहे ॥ १५ ॥ पढे केन वेठो पास अक्षर न वां
च सके विन ही पढे तें केसें आवत हे पार
सी ॥ जो हरिके मिले विन गुरु विन जानें
कोई हाथ न गली येर हे संसय न टार
सी वैद हु न मिल्यो कोउ वूटी को वता
य देत भेद विन पापे रा के ओषद हे छा

रसी सुंदर कहत मुख वंच हू न देखो जा
कुगुरु विन ज्ञान ज्यौं ही अंधेरे मे आरसी
१६ ॥ गुरु के प्रसाद वुद्धि उत्तम दसा को
गहें ॥ गुरु के प्रसाद भव दुःख विसराई
ये ॥ गुरु के प्रसाद प्रेम प्रीत हू अधिक वा
ढै ॥ गुरु के प्रसाद राम नाम गुन गाईये ॥ गु
रु के प्रसाद सव जोग की जुगति जानै
गुरु के प्रसाद सुंन्य मे समाधि लाईये ॥
सुंदर कहत गुरु देव जो कृपाल होई
तिन के प्रसाद तत्त्व ज्ञान पुनि पाईये ॥ १७
जग मैं न कोई हितकारी गुरु देव सो ॥ वू
डत भौसागर मे आप के वंधावे धीर पा
र ऊलंमाय देत नाव को ज्यौं षेवसो ॥ प
र ऊपगारी सव जीवनि के सारे काजक
वहू न आवे जाके गुननि को छेव सो ॥ व
चन सुनाय भय भ्रम सव दूर करे सुंद
र दिखाय देत अलष अभेव सो ॥ और
हू सनेही हम नी के करि देषे सोधि जग

मेंनकोउहितकारीगुरुदेवसो ॥ २६ ॥ गु
रुतातगुरुमातगुरुबंधुनिजगातगुरु
देवनखशिषसकलसंवास्योहे ॥ गुरु
दियेदिव्यनैनगुरुदियेमुःखवैनगुरु
देवश्रवनदेसवदउचास्योहे ॥ गुरुदि
येहाथपांवगुरुदियेसीसभावगुरुदे
वपिंडमांहीप्रानआयडास्योहे ॥ सुंदर
कहतगुरुदेवजुकृपालहोईफिरघा
टघडिकीमोहिनिसतास्योहे ॥ २७ ॥ को
उदेतपुत्रधनकोउदेतवलघनको
उदेतराजसाजदेवरिषीमन्योहे ॥ को
उदेतजसमानकोउदेतरसआनको
उदेतविद्याज्ञानजगतमेंगन्योहे ॥ को
उदेतरिद्धिसिद्धिकोउदेतनवनिधिको
उदेतओरकछूनातेसीसधुन्योहे ॥ सुं
दरकहतएकदीयोजिनरामनाम ॥
गुरुसोउदारकोईदेष्योहेनसुन्योहे ॥
२८ ॥ गुरुकेअनंतगुनकापेकहेजातहें ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भोंमी हू की रेंन की तो संख्या को ऊ कहत
हैं ॥ भार हू अठार द्रुमतिन के जो पात हैं ॥
मेघन की संख्या सो ऊ ऋषि ने कहि विचा
र बूंदनि की संख्या ते ऊ आय के विलात
हैं ॥ तारन की संख्या सो ऊ कही हैं पुरान
मांही ॥ रोमनि संख्या पुनि जितनेक गा
त हैं ॥ सुंदर जहां लों जंत तिनही को आवे
अंत गुरु के अनंत गुंन कापे कहे जात हैं
२१ ॥ गुरु की तो महीमा अधिक है गोविंद
तें ॥ गोविंद के कीये जीव जात हैं रसातल
कों ॥ गुरु उपदेसे सो तो छूटें जम फंद तें ॥
गोविंद के कीये जीव वस परे कर्मनि के गु
रु के निवाजे सु फिरत हैं स्वछंद तें ॥ गोविं
द के कीये जीव बूडत भोसागर में ॥ सुंदर
कहत गुरु काढे दुःख द्वंद तें ॥ और हू कहां
लों कछू मुःष तें कहों वनाय ॥ गुरु की तो
महीमा अधीक है गोविंद तें ॥ २२ ॥ ऐसी
कोंन भेट गुरुदेव आगे राषीये ॥ चिंताम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निपारसकलपतरूकांमधेनुओरहूअ
नेकनिधिवारिनाषियें जोईकछूदेषीयें
सोसकलविनासवंत बुधिमेंविचारक
रिवहूअभिलाषीयें तातेंमनवचनकर्म
करिकरजोरीसुंदरचरनसीसमेलही
नभाषीयें वहूतप्रकारतीनोलोकसब
सोधेहम असीकोंनभेटगुरूदेवआगे
राषीयें २३ महादेववांमदेवऋषभक
पिलदेवव्यासदेवसुकहूजेदेवनामदे
वजु रामानंदसुषानंदकहीयेंअनंतानं
द सुरसुरानंदहूकेआनंदअछेवजु।
रैदासमोतादासपीपादासदासभावही
कीदेवजु सुंदरकहतसंतप्रगटजगतमां
ही तेसेंगुरूदादूदासलागेहरिसेवजु
२४ गुरूदेवसर्वोपरिअधिकविराजमा
न गुरूदेवसवहीतेंअधिकगरिष्ठहें गु
रूदेव दत्तात्रयनारदसुकादिमुनिगुरूदे
वज्ञानघनप्रगटवलिषहें गुरूदेवपर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मश्रानंदमयदेषीयतगुरुदेववरखविरीनकु
वीन्हहें॥सुंदरकहतकछुमहीमाकहीनजा
य॥ऐसेगुरुदेवदादूमेरेसिरऊपरहें॥१५॥
जोगीजैनजंगमसंन्यासीवनवासीबो
धश्रोरकोऊभेषपक्षसवभ्रममांन्योहै
तापसहिऋषीस्वरसवनिकोमतदेषी
तत्वपहिचांन्योहे वेदसारतत्वसारसुम
तिपुरांनसारग्रंथनिकोसार सोईसि
देमांहीश्रांन्योहे॥सुंदरकहतकछुमही
माकहीनजाय॥ऐसोगुरुदेवदादूमे
रेमनमांमान्योहें॥१६॥जीतहेंजुकामक्रो
ध॥लोभमोहदूरकीयें श्रोरसवगुनन
कोमदजिनभांन्योहें॥उपजेंनतापको
ई॥सीतलस्वभावजाकोसवहीमेंसम
तासंतोषउरआंन्योहें॥काहूसोनराग
दोषरेनसवहीकोंतोष॥जीवनहीपा
योमोक्षएकब्रह्मजांन्योहें॥सुंदरकहत
कछूमहीमाकहीनजाई॥ऐसोगुरु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

देखदादूमेरेमनमांन्योहें २८॥इतिश्री गुरुदेवकोअंगसंगसंपूर्ण॥१॥अ थउपदेसचिंतामणिकोअंगलिख्यते हंसालछंद॥रामहरिरामहरिबोलसू वा॥तोसहीचतुरसुजांनपरवीनअति॥ परेजनिपिंजरेमोहकूआ॥पायउतमज नमलायलेचपलमन गायगोविंदगुन जीतजूवा॥आपहिआपअज्ञांननलनि वंधोविनाप्रभुविमुषकैवारमूवा॥दासमुं दरकहेपर्मपदतोलहे रामहरिरामहरि बोलसूवा॥१ कहतुंकहनूंबोलनोना॥ नफससेतांनकोंआपनिकेदकर क्याउ निमेंपिसाषायगोना॥हेगुन:गार भीगुना हीकरतहे षायगामारतव फिरेगोना॥जिं नतुझेषाकसेंअजचपेदाकीयातूंउसे क्योंफरामोसहोना॥दाससुंदरकहेसर मतवहीरहेहकतुंहककनूंबोलनोना॥२ भीनहीभीतहीबोलतूंनी आवकीवूंह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगमेकहोकोंनरहेहें ३९ ॥ इतिउ
पदेसचिंतामणिकोअंगसमाप्तः ॥
२१ ॥ अथकालचिंतामणिकोअंगप्रा
रंभः ॥ छंदइंदव ॥ मंदिरमालविला
यतहेंगजऊंठदमांमांदिनाइकहो
हें ॥ तातह्मातत्रियासुतवंधवदेष
षोंधामरहोनविछोहें ॥ जूठप्रपंचसो
राचिरह्योसठ काठकीपूतरीज्योंक
पिमोहें ॥ मेरीहिमेरीकहेंनितसुंदर
आंषिलगेकहीकोंनकोकोहे १ ॥ ये
मेरेदेसविलायतहेंगजएमेरेमंदी
रएमेरेथाती ॥ येमेरेमातपितापुनि
वंधवसोयेमेरेपूतसोएमेरेनाती ॥
एमेरीकामनिकेलकरेनित ॥ येमेरे
सेवकहेंदिनराती ॥ सुंदरवेसेंहिछांड
गयोसवतेलजस्योसुवूजीजववाती
२ ॥ भूलोकहेंनरमेरीईमेरीहिंदिनचा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२विश्रांमलीयोसठनेरेकहेवाछूटेगई
नेरी जेसेंहीवापहाहागएछांडिमृ ते
सेंहीतूंनजिहेंपलफेरी मारिहेंकाल
चपेटअचांनकहोईगरीकमेंराबकी
ठरी सुंदरलेनचलेकछूपेसंगनभूली
कहेनरमेरीईमेरी ३ केपहदेह जराप
कें छारकीपाकिकीपाकि कीपाकिकी
याहे केपहदेहजमीमहीषादहीयाके
हीयाकेदीपाकेदीयाहें केयहदेहराहे
दिनचारजीपाकेजीयाकेजीपाकेजी
याहे सुंदरकालअचांनकआईलीपा
केलीपाकेलीयाकेलीपाहें ४ देहस
नेहनछांडतहेंनरजांनतहेंथिरहेय
हदेहता छीजतजायघटेदिनहीदिन
हीसतहेघटकोनिनछेहा कालअचां
नकआयमहेकरतहगिराईकौरेतन
वेहा सुंदरजानीयहेनिहचेधरिएक

न होई॥ हरि को भजन करि हरि मे समा
ई ये॥ २४॥ घरी घरी घटत छीजत जात छिं
न छिंन भीजत ही गारी जात माटी के सो
ठेल है॥ मृत्यु के द्वारे आई सावधान कों
न होई बार बार चढत न श्री या को सोने
ल है॥ करि ले सुकृत हरि भजन अरु लेइ
न रे याही में अंतर परे या में ब्रह्म मेल है
मनुष जनम पुह जीत भाव है॥ २५॥ अब
सुंदर कहत या में जू आ के सो षेल हैं॥
२६॥ देषत ही है षन वूढापो दोरी आयो
है॥ जोवन को गयो राज॥ और सब भ
यो साज॥ आपनी दोहाई फेर दमामो द
जायो है॥ लकुटि हथियार लीयें नैन कं
रढाल दयो॥ चैन वार भयो ताकों नं
वू सोत नायो है॥ दसन गये सु मांनों द र
व न दूर कीये जो गरी परी सु आंन विछ
नों विछायो है॥ सीस कर कंपत सु सं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

द्रानिकास्योरिपु देषत नहीदेषत नूठापो
द्रोरीआयोहे ९४ देहकोनदेहकछु दे
हकोममत्वछांडदेहतोदमामोंदीयेदे
हदेहजानहैं घटतोघटनघरींघटना
महोनघटकेगऐतेंघटकीनफिरवा
तहैं पिंडपिंडमाहीपिंडपिंडकोंऊपावत
हैं पिंडपिंडषातपनपिंडहिकोपातहैं
सुंदरनहोयजांसोंसुंदरकहतजगसुं
दरचेतन्यरूपासुंदरविष्यातहे ९५ ॥छं
दइंद्रवजय॥ग्रीवलचाकटिहेलट
कीकचऊपलटेंग्रजहूरतवांमीदंत
गयेमुषकेउषरेनषरेनगयेसुषरा
षरकांमीकंपनदेहसनेहसुदंपत
संपतजंपतहैंनिसजांमी सुंदरग्रंत
हूभौनतज्योनभज्योभगवंतसलों
नहरांमी ९६ देहघटीपगमोमीमंडेन
हीग्रोलषियांपनहायलईजू आंषिहू

औजूद पैदा कीया ॥ नैंन मुष नासिका कर
संजूती ॥ ष्याल ऐसा करें उहीलीयां फिरैं।
जागके देषवा करें सूती ॥ भूल ऊस षस
कौं कांम नैं क्या कीया ॥ वेग है याद कर मरनि
षूती ॥ दास सुंदर कहैं सर्व सुषनोल हैं भीत
हीं भी तुही बोलनो तो ॥ ३ ॥ अेकतूं अेकतूं बो
लमैंना ॥ अवल वुस्ताद के कदंम की षाक
हैं हिरस गुजार सब छोड फेनां ॥ यार दिलदा
र दिल माहीं तूं याद करहे तु गैपास तुं देषनै
नो जांन का जांन हैं जिंह का जिंद हैं सषुन
का सषुन कछू समझ सेनां ॥ दास सुंदर क
हे सकल घट मैं रहे ॥ अेक तूं एक तूं बोल
मैंनां ॥ ४ ॥ मनहर छंद ॥ कांन के गअे तें
कहा कान ऐसे होत मूढ ॥ नैंन के गयेतें क
हा नैंन अेसे पाइयें ॥ नासिका गयेतें कहा
नासिका सुगंध लेत ॥ मुःष के गयेतें अेसे मु
ष कहां गाइयें ॥ हाथ के गअेतें कहा हाथ
अेसो कांम होत ॥ पाव के गयेतें ऐसे पाव
किन धाइयें याहीतें विचार देष सुंदर क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हतनोहि देहकेग एतेंऐसे देह विनसा
ईयें ५ वारवारकहेंतोहीसावधांनक्यें
नहोई ममताकीमोटशिरकाहेकोंधर
तुहे मेरोधनमेरोधांममेरेसुतमेरीवां
ममेरेपसुमेरेगांम भूल्योहिफिरतहैते
तोभयोवावरोविकायगईवुधीतेरीये
सोअंधकूपपरेहतामेंतूपरतहे ६ सुंदरक
हततोहीनेकहूनआवेलाजकाजकों
विगारकेंअकाजवोकरतहे ईतेरेतो
कोंपेचपरोगांठिअतिघूरिगई ब्रह्मा
आईछोरेक्योंहीछूटतनजतवहू तेलसो
भिजोईकरिचीपरालपेटराषेकूकरके
पूंछसुधेहोतनहीनवहू मासहैतेसीष
वहूकीरीकोंगिनतजाई कहत कहता दि
नवीतगएसवहू सुंदरअज्ञानीयेसो
छोड्योनहीअभिमान निकसतप्रांनल
गवेसोनहीकवहू ७ वालमांहीतेलन
हीनिकसतकाहूविध यथरनभीजेव
हूवर्षतघनहे पानीकेमथेतेंकहूंघी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रनहीपाईयत॥ कूकसकेकूटेकहूंनि
कसतकनहेसुंन्महीकीमूठीभरीहाथ
नपरतकछू॥ उमरकेवोहेकहानिपज
तअनहे॥ उपदेसऔषदसोकोंनविधि
लागेनाही॥ सुंदरअसाधरोगभयोजाके
मनहे॥ ५ वेरीघरमाहीतेरेजांनतसनेही
मेरे हारामुततवितनेरोषोसिषोसिषांय
गें॥ औरहीकुटंवलोगलूटेंचहूऔरही
तेंमीठीमीठीवातकहीतोसींलपटांये
गे॥ संकटपरेगेंजवकोईनहीतेरोतव
अंतहीकठनवांकीवेर॥ ऊठजांअगे॥ सुं
दरकहतनातेंजूठोईप्रपंचसव॥ स्वप्नें
कीन्यांईसवदेषतविलांयगे॥ ६ वाहूके
मंदिरमांहीवेठीरह्योस्थिरहोय॥ राषत
हेंजीवनकीआसकेऊदिनकीपलप
लछीजतघटतजातघरीघरी॥ विन
सतवारक्रहाषवरनछीनकीकरत

उपायन्नूठलेनदेंनषांनपांनमूसाइतउनपि
रेंताकीरहीमिंनकी सुंदरकहतमेरीमेरी
करिमूलोसठ चंचलचपलमायाभईकिं
नकिंनकी १० श्रवनलेजाईकरिनादकी
लेडारेफासीनेंनवालेजाईकरिरूपवसक
स्योहेनासिकालेजायकरिवहूतसुंगावेगं
धरसनलेजाईकरिस्वादमनहस्योहेच
र्महूलेजाईकरिनारीसोंस्पर्सकरेसुंदर
कोईकसाधुठगनितेंडस्योहेकामठग
क्रोधठगलोभठगमोहठगठगनीकीनग
रीमेंजीयआईपस्योहे ११ पायोहेमनष्य
देहअसरवन्योहेआईयेसीदेहवारंवा
रकहांकहापाईये भूतलहेवारंरतत्र
वकेसीपानोहोईरतनअमलसोतोका
हेकूंठगाईये समकिविचारिकरिठगनि
कोसंगसागठगवाजिहैरवीकरिमननपू
लाईये सुंदरकहततातेसावधानव्है

नाकपरेसुःखतेंजलसींसहलेकटिघी
चनईजू।ईस्वरकोंकबहूनसंभारतदुःष
परेतबहाईदईजू।सुंदरतोहिविषेसुः
षबंछत।घोरेगयेबगेनगयेजू।१०।पा
इअमोलकदेहयहेनरक्युंनविचारक
रेदिलअंदर।कामहुक्रोधहुलोभहुमो
हहुलूटतहेंदसाहुदिसिहूंदर।तेंअब
बंछतहेसुरलोकहिकालहुपाइपरेसु
पुंदर।छांडिकुबुद्धिसुबुद्धिहृदेधरिश्रा
नमरामभजेक्युंनसुंदर।११।इंद्रनिके
सुःषमाननहेंसठपाहीहीनेंबहूनेंदु
षपावे ज्योंजलमेंझषमांसहीलीलत
स्वादबंध्योजलबाहिरआवे।ज्योंकपिमू
ठनछांडतहेंरसनावसबंधपरयौविल
लावे।सुंदरक्योंपहीलेनसंभारतजोग
रषाईसुकानविधावे।१२।कोंनकुबुद्धि
भईघटअंतर।तूंअपनेंप्रभसोंमनचो

रे॥मूलगयोविषयासुषमेंसठ लाल चिलागिरह्यौग्रतिथोरे॥ज्योंकोऊकंच नछारमिलावनलेकरपाथरसोंन गफोरे॥सुंदरयानरदेहअमोलकगी रलगीनोकाकिनवोरे॥२०॥देषनकेन रसोभतहेंसेंजेंआहीअनोपमकेलि कोषंभा॥भीतरतोकछूसारनहींपुनी ऊपरछीलकग्रवरहेंभा॥वोलनहेंप रनांहीकछूसुधज्योंहिवयारतेंवाज तकुंभा॥ह्रूसरहेकपिज्योंछिनमांही नें याहीतेंसुंदरहोतग्रचंभा॥२१॥देष नकेनरदीसतहें॥परिलछनतोपसु केसवहीहें॥वोलतचालतपीवतषा तमु॥वेघरवेवनजानतहीहें॥प्रातगये रजनीफिरिआवतसुंदरयांनितभा रवहीहें॥औरतोलछनआईमिलेस व येककुमीसिरसंगनहीहें॥२२॥पेत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भयोकिपिसाचभयोकिनिसाचरसो
ऊंनहींतिनडोले॥ तूंअपनीसुधभू
लिगयो॥ अपनेंकछूऔरकीऔररहींबो
ले॥ सोईरूपाईकरेंजंमरेपचिबंधन
लोकबहूनहींषोले॥ सुंदरजानतनमेह
रिपावतसोननामकीयोमतिभो
लें॥२३॥ पेटतेंबाहिरहोतहिबालक
आईकेंमातपयोधरपीनों॥ मोहबं
ध्योदिनहिदिनऔरतरूनभयोत्रय
केरसभीनों॥ पुत्रप्रपौत्रबंध्योपरिवा
रसुयेसेंहिभांतगयेपनतीनों॥ सुंदर
रामकोनामबिसारकेंआपहिआपको
बंधनकीनों॥२४॥ मातपितासुतभा
ईबंध्योजवतिकेकहेकहाकामकरे
हेंचोरिकरेंबटपारिकरेंकीरषीवन
जीकरिपेटभरेहें॥ सीतसहेसिरघाम
सहेकहेंसुंदरसोरनमांहमरेहेंबाधि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ह्वोममनासबसोंनरयाहीतेंबांध्यो ईवांध्योफिरैहैं॥२५॥तेरीहीचातुरीतो हीलेवो रैं॥तूंठगकेधनऔरकौल्यावै न॥तेरोऊंचोघरऔरहीफोरैं॥आग लगैंसवहीजरिजाईसुनूंदमरीद मरीकरजोरैं॥हाकमकोडरनांहीन सूझतसुंदरएकहिवारनिचोरैं॥तूं षरचेनहीआपनषाईसु॥तेरेहीचा तुरीतोहीलेवोरैं॥२६॥छंदमनोहर॥ करतप्रपंचइनपंचनीकेवसपरो परदारारतभैंनआंननबुराईको॥ परधनहरेपरजीवकीकरनघात मद्यमांसषाईलवलेसनभलाई कोहोयगोहिसावनवमुषतेंनआ वेजावसुंदरकहतलेषोलेनराईको इहांतोकीयेविलासजमकीनत्रोही त्रासउहांतोनहीहेकछूराजपोपांवा

ईको ॥२७॥ दुनीयांकों दोडना हे ओर तन
कोंलोडना हे औ जूद कों मोडनां हे ब
टोईका ॥ मुरगीकों मोसना हे बकरी
कोंरेंसना हे गरीबांकों घोंसना हे बे
महेरगाईका ॥ जुलमकों करना हे ध
नीसोंन डरना हे ॥ दोंजगकों भरना हे
षुजॉनां बलाईका ॥ होयगा हिसाब त
नब आवेगा न जाब कछू ॥ सुंदर कह
त गुनेगार हें षुदाईका ॥२८॥ करक आ
योजब घरघर बाट्यो नीर भर भरबा
ज्यो ढोल घर जांन्यो हे ॥ दरदर होरयो
जायनर नर आगे दीन बरबर बक
तननें कअलसांन्यो हे ॥ सरसरसोधे
धन तरनरतो रे पांन जरजर काटत
अधिक मोद मांन्यो हे ॥ फरफर फूल्यो
फिरे डरडर पेंन मूढ हरहर हसत नब
सुंदर संकान्यो हे ॥२९॥ जन्म सिरांनो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ज्ञाईभजनविमुःषसठ काहीकोभ
वनकूपविनमीचमरेहैं गहनअवि
द्याजंनसकनलनीज्यौंमूढकर्मविक
र्मकेरेंकरतनडरेहैं आपहीतेंजान
अंधनर्कनीमेंवारवारअजहूनसंक
मनमाहीअवकरेहैं दुःषकोसमोह
अवलोककेंनत्रासहोईसुंदरकहत
नरनागपासपरेहैं ३० जूठेजगअें
नसुनिसंगह्वेंनदेषैंआपनेंहूनेंन
तोऊअंधरहैंज्ञानीमें केनेरावराजा
कभयेरएचलगएमिलगएधूरमांही
आएनेकहांनीमें सुंदरकहतअवता
हीनसुरतआवेचेतेक्योंनमूढचितला
यहिरहांनीमें भूलेजनदाववजानलोह
केसोतावजातआववजातएसेंजेसेंग
वजातपांनीमें ३१ जगमगपगतजि
सजिभजरामनामकामक्रोधनतम

नचेरि चेरि मारीयें ।। रूठ मूठ हठ त्याग
जाग भाग सुनि पुनि गनज्ञान आनी
आनबारि वारी डारीयें ।। गही ताही जा
ही से सई सती समरन रओ रवात हैत
तान पेरजारीयें ।। सुंदर दरदषोई धो
ई धोई वार वार सार संग रंग अंग हेरि
हेरि धारीये २२ ।। छंद हूमलीयो ।।
हठ जोग धरो तनजात मिया हरि नाम
विनाम:ष धूर परें ।। सठ सोग हरो छिं
नगन किया चरि चांम विनाम षपूरि
जरें ।। मट भोग परो घन घात धीया अ
रि कांम कि नाम:ष जूरि मरें ।। मठ रोग
करो घन घात हिमा पर राम तिनां दु
ष दूर करें २३ ।। गुरु ज्ञान गहें अनिलि
ई सुषी मन मोह तजें सव काज सरें
धरि ध्यान रहें पति पोई मषी [illegible]
हव जें तव लाज परें सुर तांन नहें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हतहोईरूषीतनछोहसजेंअवआज
मरेंपुरयांनलहेंमतधोईदुःषीजनवो
हनजेंजवराजकरें ॥ ३४ ॥ छंदमनहर
काहेंकोंफिरतनरभटकततोरठोर ॥
डागलकीदोरहेंवीदेवसवजानीयें ॥
जोगजग्यजपतपतीरथव्रतादिक
तिनहूंकोफलसोऊमिथ्याईवषां
नीयें ॥ सकलउपायतजिएकरामरा
मभजिपाहीउपदेसमुंनिश्चिदेमही
आनीपे ॥ नाहीतेंसमुझिकरिसुंदरवि
स्वासधरि ॥ औरकोऊकहेंकछूताकी
नहीमानीयें ॥ ३५ ॥ छंदइंद्रवजय ॥ सं
तसदाउपदेसवतावत ॥ केससवेसि
रस्वेतभएहें ॥ तूंममताअजहूनहीछं
डतमोतहूआपसंदेसदयेहे ॥ आजके
कालचलेउठमूरषतेरेतोदेषतकेते
गएहें ॥ सुंदरक्योंनहिरामसंभारतया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निरंजनसोंकरनेहा ॥५॥ तूंकछुऔरविचा
रतहेनरतेरोविचारधस्योईरहेगो ॥ कोटि
उपायकरधनकेहितभागलिष्योतित
नोईलहेंगो ॥ औरकेसांझघरीपलमांझ
सुकालअचांनकआईगहेंगो ॥ रामभ
ज्योनकीयोनहीसुकतसुंदरयोंपछता
ईरहेंगो ॥ ६ ॥ भूलिगयोहरिनामकोंतूंसु
देषधोंकोंनसंजोगवन्योहे ॥ कालअ
चांनकआयेगहेकंठपेषधोंजूठोहितं
नोतन्योहे ॥ छारकरेसवधांमकोंलूटि
अनादिकोंयेसेंहीजीवहन्योहे ॥ कोउन
होतसहाईकुटंवअनादिकोंसुंदरये
सोसुन्योहे ॥ ७ ॥ वीतगयेपछलेसवही
दिनयौं ॥ कालमहावलवंनवडोरि
पुसांधरह्योसिरऊपरतेरे ॥ येकघरी
महिमारिगिरावत लागतनाहीक
छूनहीवेरे ॥ सुंदरसंतपुकारकहेंस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वहूंपुनितोहिकहोंअवटेरे। सोपरह्यो
कहागाफलह्वैकरितोसिरऊपरकालदहा
रे।धामसधूंमसलागिरह्योसठ आईअ
चांनकतोहिपछारे।ज्योंवनमेंमृगकूद
तफांदतचित्रगलेनषसोंउरफारे।सुंदर
कालडरेजिनकेडरतासभुकोंकहीकोंन
अचेतनओंघतकालसदासिरऊपर
गाजे।रोकिरहेंगठकेसवद्वारनितूंन
वकोंनगलिक्केभाजें।आईअचांनकके
सगहेंजवपाकरिकेंपनितोहिजूलाजें
सुंदरकोंनसहायकरेंजवमूंडहिमूंड
भराभरवाजें।१०।तूंअतिगाफलहोइ
रह्योसठकुंजरज्योंकछूसंकनआनें।
मायनहींतनमेंअपनोंवलमत्त।।यो
विषयासुःषठांनें।षोसतघातसवेंदि
नवीनतनीतअनीतकछूनहींजांनें।
सुंदरकेहरिकालमहारिपुदंतउषारी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कुंभस्थलभांनें ॥१०॥ मातपिताजुवतीसु
तवंधवआईमिल्योइनसेंसनवंधा
स्वारथकेआपनेंआपनेंसवसोंपहनां
हिंनजानतअंधा ॥ कर्मविकर्मकरेति
नकेहितभारधरेनितआपनेंकंधा ॥
अंतविछोहभयोसवसोंपुनयाही
नेंसुंदरहेजगअंधा ॥१२॥ छंदमनोह
र ॥ करतकरतधंधकछूवेजांनेंअं
धआवतनिकटदिनअगलेचपा
कटे ॥ जेसेंवाजतीतरकुंदावतहेंअ
चांनकजेसेंवकमछरीकोंलीलत
लपाकटे ॥ जेसेंमक्षिकाकीघातम
करिकरनआयजेसेंसापमुसककों
ग्रसतगपाकटे ॥ चेतरेअचेतनरसुंद
रसंभाररामयेसेंतोहीकालआय
लेईगोहपाकटे ॥१३॥ मेरोदेहमेरोंप
रिवारसवमेरोधनमालमेंतोवहू

गोहमेरो२

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विषमारोहूं मेरैसवसेव कहूं कमको
उ मेटैनाहीं मेरीजरती केमैतो अधि
कपियारोहूं मेरोचंसऊचोमेरोबाप
दादापेसेभयेकरनवडाईमैंतोजग
तउज्यारोहूं सुंदरकहतमेरोमेरोक
रिजांनेसठपेसेनहींजांनैमैतोकाल
हीकोचारोहूं १४ जवतैंजनमधस्यो
नवहीतैंभूलपस्योवालापनमांहीभू
लोसमस्योनरुषमें जोवनभयोहें
जवकांमवसभयोतवजरतीसोंए
कमेकभूलिरह्योसुषमें पुत्रहूमपो
त्रभएभूल्योतवमोहवांधचिंताक
रिकरिभूल्योजोंनैनहीदुःषमें सुंदर
कहतसठतीनोंपनमांहीभूल्यो भूलो
भूलोजाइपस्योकालहीकेमुषमें॥
१५ उठतवैठतकालजागतसोवत
कालचलतफिरतकालकालउर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रस्यो हैं । कहत सुनत काल षात हू पी
वत काल काल ही के गाल मांही हर
हूर हस्यो हैं । तात मात बंध काल सुत
दारा गृह काल सकल कुटंब काल
काल जाल फस्यो हैं । सुंदर कहत ए
क राम विन सब काल काल ही को ग्र
स कीयो अंत काल ग्रस्यो हैं । १९ । जब तें
जनम लेत तब ही तें आयु घटें माई
सो कहत मेरो वडो होत जात हैं । आज
और काल और दिन दिन होत और दौ
र्यो दौर्यो फिरत षेलत अरु षात हैं ।।
बालापन बीत्यो जब जोबन लग्यो हैं
आई जोबन हू बीते बूढो डोकरो दीषा
त हैं । सुंदर कहत ऐसें देषत ही बूझि
गयो तेल घट गयें जैसें दीपक बुझात
हैं । २० । सब कोऊ ऐसें कहें काल हम
काटत हैं काल तो अखंड नास सब

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कोकरत हें जाके भय ब्रह्मा पुन हो
त हें कं पाए मान जाके भय ग्र सुरसु
र इंद्र ऊडरत हें जाके भय शिवग्र
रु शेष नागनी नौं लोक के ईककल
वीने लोंमसपरत हें ।। संदर कहत नर
गरवग मानकरें नूं नोस ह पलपल
कनिमें मरत हें ।। १५ कालसों न वल
वंतको ऊ नहीं दृषीयत सबकों कर
त ग्रंत काल महाजोर हें काल हिको
डर सुं निभगयो मूसायेकं वर जहांजहां
जाई तहां तहां वाको घोर हें ।। कालम
यांनक भयभीत सबकीये लोक स्व
र्ग मृत्यु पताल में कालहीको सोर हें ।।
कालहीको काल एक संदर ग्रखंड ब्र
ह्मवासों काल डरे जो ई चल्यो वही ग्रो
र हें ।। १६ ।। वरषा भएतें जे सें बोलत भं भी
रीस्वर षेडन परत कहूं ने कहून जांनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यें ॥ जेसें पुंगी वाजत अषंड स्वर होत
पुनि ताहू मेंन अंतर अनेक राग गानी
यें ॥ जेसें कोई गुडी कों चढावत गगन
मांही ताहू की कीस धुनी सुनी वेसेंही
वषांनी यें ॥ सुंदर कहत तेसें काल कों
प्रचंड वेग रात दिन चल्यो जाई अचर
ज मानी यें ॥ २० ॥ माया जोर जोर नर राष
त जतन करि कहत हें येक दिन मेरे
काम आई हें ॥ तोही तो मरत कछू वार
नही लागे सठ देषत ही देषत वलूला
सो विलाई हें ॥ धन तो धर्यो ही रहे चल
त न कोडी गहे रीते हाथनि सें जेसा
आयो तेसो जाई हें ॥ करी ले सुक्रत य
ह वरी पांन आवें फिरि सुंदर कहत न
र पुनि पछताई हें ॥ २१ ॥ वार वार सुभयो
फिरें वारवरी ही वात करें वार रोज्यों देत
वापूलागत वरांनो हे ॥ मायाको उपा

पु० ६

यजांनेंमायाकीचातुरीठानें॥मायां
मेंमगनअतिमायालपटानोहे॥जो
बनकेमदमातेगिननकोऊनाते
कामबसकांमनीकेहाथहीबिकां
नोहे॥अतहीभयोबेहालसूजतनमा
येकालसुंदरकहतनयेसोऔरकोदि
वांनोहे॥२२॥झूठोधनझूठोधांमझूठोसु
षझूठोकांमझूठीदेहझूठोनामधरीके
भुलायोहे॥झूठोनातझूठोमातझूठेसुत
दाराभ्रातझूठेहितमांनमांनझूठोमन
लायोहे॥झूठोलेनझूठोदेनझूठोमुषबो
लेबेनझूठेझूठकरेफैनझूठीहीकोंधा
योहे॥झूठहीमेंअंतभयोझूठहीमेंपच
गयेसुंदरकहतसाचकबहूनआयो
हे॥२३॥दीर्घाक्षर॥झूठेहाथीझूठेघोरा
झूठाआगेझूठादोराझूठाबांधाझूठां
छोराझूठाराजारांनीहैं॥झूठीकाया

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

झूठी माया झूठ झूठे धंधे लाया झूठ मूआ
झूठे जीया झूठी या की बांनी हैं । झूठ सो झू
ठ जागे झूठ झूठे झूठ भागे झूठ पीछे झू
ठ आगे झूठे झूठी मांनी हैं । झूठ लीया झू
ठ [illegible] झूठ दीया झूठ षाया झूठ पीया झू
ठ सो झूठ कीया ऐसा झूठ आंनी है २४ झूठ पें
वंध्यो है जाल नाहीं तें असंत काल काल
विकराल व्याल सब ही कों षात है । नदी
को प्रवाह चल्यौ जात है समुद्र मांही ते
सें जग काल ही के मुःष में समात है । दे
ह सों ममत्व तातें काल कौ भै मांनत है
ज्ञान उपजे तें वही काल हू विलात है
सुंदर कहत परिब्रह्म है सदा अखंड आ
दि मध्य अंत येकसो ई ठहरात है २५ ॥
छंद इंद्रवज्रा ॥ काल उपावत काल ष
पावत काल मिलावत है गहि माटी
काल हलावत काल चलावत काल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सिषावतहैसबआटी॥कालवलाव
तकालभलावतकालइवावतहैअ
घाटी॥सुंदरकालमिटैंजवहीपुनिव्र
ह्मविचारपठैंजवपाटी॥२६॥इतिश्री
कालचिंतामणिकोअंगसमाप्तः॥अं
ग॥३॥अथदेहआत्माविछोहकोअं
गप्रारंभः॥छंदइंद्रवज्रा॥बोलतहो
सुकहांगयोपंषीवेश्रवनांरसनांमु
षवेसेंहीवेसैंहीनासिकावेसेंहींअं
षी॥वेकरवेपगवेसवहूसुवेनष
सीसहीरोमअसंषी॥वेसैंहीदेहपरि
पुंनीदीसतयेकविनासवलागतपंषी
सुंदरकोउनजानिसकैयहबोलत
होसुकहांभयोपंखी॥१॥षेलगयोइ
कषेलसुष्याली॥बोलतचालतपीव
तषावतसीचतहेद्रुमकोंजेसेंमाली
लेतहुदेतहुदेषतरीझतोरेनमांनवजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वृततालौ । जामहीकर्मविकर्मकीपैस
वहेयहदेहपरीग्रवठालौ । सुंदरसोकि
नहूनहीदीसतषेलगयोइकषेलसो
व्यालौ ।२। मातपिताजुवतिसुतवंध
वलागतहेसवकोंग्रतिप्यारो । लोक
कुटंवषरोहितराषत । होईनहीहम
तेंकहूंन्यारो । देहसनेहतहांलगजांन
हूंबोलतहेमुषसब्दउचारो । सुंदरचे
ततशक्तिगईजववेगिकहेंघरवारनि
कारो ।३। रूपभलोतवहीलगहीसत
जोलगवोलतचालतआगें । पीवतषा
तसुनेंग्ररुदेषतसोईरहेउठिकेपुनि
जागें । मातपिताभईयामिलिवैठत ।।
प्यारकरेंजुवतिगरलागें । सुंदरचेतन
शक्तिगईजवदेषततांहीसवडरभा
गें ।४। छंदमनोहर । कौंनभांतकर
तारकीयोहेंशरीरयह । पावककेम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हीदेषोपांनीकोजमावनो नासिका
श्रवननैनवदनरसनवेंहाथपाव श्र
गनषशिषकोवनावनो अजवञ्र
नूएचमकरमकओपसुंदरसोभ
नअतिअधिकसुहावनों जाहिछि
नचेतनशक्तिजवलीनहोईताही
छिनलगतहेसवकोंअभावनों प
मृतकाकोपिंडदेहताहीमेंजगति
भईनासिकानयनमुषश्रवनव
नापेहें सीसपावहाथअरुअंगुरी
विराजमानअंगुरीकेआगेपुनिनष
हूलगायेहें पेटपीठछातीकंठचिवु
कअधरगालदसनरसनवहूवच
नसुनायेहें सुंदरकहतजवचेतनां
सगतिगईवहेदेहजारीवारीछारकं
रीआएहे ई देहतोप्रगटप्रहज्योंकी
सोंहीजानीपतनैनकेझरोषेमांही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोपतनदेषीयें ॥ नाककेफरोषेमांही
नेकनसुवासलेनकोंनकैफरोषेमां
हीसुनततनलेषीयें ॥ मु:षकेजरोषेमें
नवचनउचारहोत ॥ जीभहूकोंषटा
सस्वादनविसेषीयें ॥ सुंदरकहतको
उकौंनविधिजांनेंताही ॥ पीरेकारोका
हूहूरजांनोहूनपेषीयें ॥७॥ मातमोप
कोरेछातीकूटिरोवेंहेंबापहूकहत
मेरोनंदनकहांगयो ॥ भईयाहूकह
तमेरिवांहआजदूरभई ॥ बहनकह
तमेरोवीरदु:षदेगयो ॥ कांमनीकह
तमेरेसीससिरताजकहां ॥ उनतको
लहाथहिमेंसोधोरालह्वो ॥ सुंदरक
हनकोउनाहीनहिजांनीसकेंबोल
नहूतोसोपहछिनमेंकहांगयो ॥८॥
रजअरुवीरजकोप्रथमसंजोगभयो
चेतनासंगतिनवकोंनभांतिआई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हैं कोउ एक कहैं वीज मध्य ही की
योग्र वेस किनहू कुं पंच मास पीछे के
सुनाई हैं देह को विजोग जव देषत
ही होइ गयो तव कहो कोन कहां जा
इके समापि हैं पंडित रिषी स्वरत पे
स्वर मनी स्वर कुं सुंदर कहै पर कहिं न
हू न पायि हैं तव लों ही क्रिया सव
होत हैं विविध भांति जव लग घट मां
ही चैतन्य प्रकास है देह के ग्रसत कम
पै क्री या सव थकी जाय जव लग स्वा
सा चलें तव लग ग्रास है स्वास हूय
को है जव री व न लगे है तव सव को
उ कहै अव भयो घट नास है काहू न
ही देष्यो किहि वार कोन कहां गयो सुंद
र कहत यही वडो ईत मास है १० देह
तो स्वरूप तो लों जो लों है अरूप मां ही
सव कोउ आदर करत सनमांन है ॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ट्ठीपागवांधिचारवाहीमरोडेमूछ
वाहूउसकारेअतिधरत्तगमांनहे॥
ईसदैसहीकेलोकआपकेहजूरहो
ईवैठकरिनषेकहावेसुलतांनहे॥
सुंदरकहतजवचैतननांसगतिगईऊ
हदेहताकीकोउमानतानआंनहे॥
११॥इतिदेहआत्माविछोहकोअंगस
माप्तः॥अंग॥८॥अथत्रसमांकोअंगप्रा
रंभः॥छंदइंदव॥नैननकीपलही
पलमैक्षणआधघरीघटिकाजुगई
हैंजांमगयोजुगजांमगयोपुनसांझ
गईतवरातभईहें॥आजगईअरुकाल
गईपरसोंतरसोंकछुओरठईहें॥सुंद
रऐसेंहीआयगईअसनादिंनहीदिंन
होतनईहें॥१॥कनहीकनकोंविललात
नफिरेंसठजाचतहेंजनहीजनकों॥
ततनहीतनकोंअतिसोचकरेंनरषा

तरहेमनहीमनकों।मनहीमनकी
त्रसनामिटी।एनिधावततहेंधनही
धनकोंछिंनहिछिंनसुंदरआपघ
टी।कवहूनगयोवनहीवनकों।र
तेरीतोभूषनकोंहीभगेगीजोदस
वीसपचासभयेसतहोईहजारतो
लाखमगेगी।कोटिअरवषरवअसे
षप्रथिपतिहोंनकीचाहजगेगी।स
र्गपतालकोराजकरोत्रसनाअधि
कीअतिआगलगेगी।सुंदरयेकसंतो
षविनासठतेरीतोभूषकहिनभगेगी
३ लाषकरोडअरवषरवनिनीलप
द्मनहीलगपाटी।जोरहिजोरमंडार
भरेसवओररहीसुजमीनरडाटी।तो
हूनतोहीसंतोषभयोसठसुंदरतेंत्र
सनांनहीकाटी।सूजनतनांहिंनकाल
हितोसिरमारिकेंधापमिलाइतमाटी

४॥ भूषलीएहसहूद्रिसिहोरततताही
नेंतूंकवहूनअघेहे॥ भूषभंडारभरेनही
केसेंहूजोधनमेरकुमेरलोपेहें॥ तूं
अवआगेहीहाथपसारतपाहीतेंही
षकछूनहीऔहैं॥ सुंदरकेयोंनहीतो
षकरेंनरषाईकेषाईकिनोईकषे
हैं॥ ५॥ भूषनचावतरंकहिराजहीभू
षनचाईकेविसुविगोई॥ भूषनचावत
इंद्रसुरासुरऔरअनेकजहांलगजो
ई॥ भूषनचावतअर्धहीउर्धहीतीन
हूलोकगिनेंकहांकोई॥ सुंदरजाईत
हांदुःषहीदुःषज्ञानविनानकहूंसुः
षहोई॥ ६॥ हेंमसनांहजहूंनहीधापी
पेटपसारदीयौजितितेंषहभूषकि
नीयेकपापी॥ वोरनछोरकछूनही
आवतमेंवहुभांतभलीविधमापी॥
देषतदेहभयेसवजीरन तूंनितनोत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नत्र्प्राहीत्र्प्रव्यापी॥सुंदरतोहीसदासम
१० मावतहेत्रसनांत्र्प्रजहूनहीधापी॥
४ हेत्रसनांत्र्प्रजहूनत्र्प्रघांनी॥मीनहू
लोकत्र्प्रहारकीयौहेंसुसानसमुंद्र
पीयोसबपांनी॥त्र्प्रोरजहांनहांताक
नडोलतकाठतत्र्प्रांषडरावतप्रांनी
दांतदिषावतजीभहलावतयाही
तेमेंपहडाकनीजांनी॥सुंदरषानभ
षेकितनेदिनहेत्रसनांहजहूनत्र्प्रघां
नी॥२॥हेत्रसनांकहूंछेहननेरोपात्र्
पतालपरेगयेनीकसमीसगयोत्र्प्र
समांनत्र्प्रघेरो॥हाथहसोदिसिकोप
सारेपुनिपेटभरेनसमुद्रसुमेरो॥नी
नहूलोकलीसमुषभीनरत्र्प्रांषिहूकों
नबंधेचहूंफेरो॥सुंदरहेहधयोत्र्प्रतिदी
रघहेत्रसनांकहूंछेहननेरो॥२॥हेत्र
सनांत्र्प्रवनोकरनोषा॥बादत्र्प्रथामभट

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

केनिसिबासुरदूरकीयोकवहून
हीधोषा।तूंहतीयारनिपाननिको
हानेसाचकहूंमनमांनहूरोषा॥
नोईमिलेंनवतेंहोईवंधनतूंम
रिहेंनावहीहोईभोषा।सुंदरआ
रकहाकहीयेंनहीहेत्रसनांआ
वतोकरनोषा॥१०॥हेत्रसनांअव
नोमनिडोले।कपोंजगमांहीपि
रेजषमारतस्वार्थकोंनपरिज
हीजोले।ज्योंहरिहारगऊनहीमां
ननदूधदोह्योकछूसोपंनढोले
तूंअतिचंचलहाथनआवतनी
कसजाईनहीमःषवोले।सुंदरतो
हिकह्योंवेरकेतीकहेअसनांआ
वतूंमनडोले॥११॥हेत्रसनांकही
केतोहीयाकोंतेंकोईकांनध

सुं० २५

तिनहीएकहूबोलतबोलनपैहसी
पाक्यौ॥ हूंकोईबाततबनाईकेहोंज
वतेंतबपीसतहीसबपाक्यो॥कै
तेकद्यौसभएकरबोधनतेंअब
आगेहीकौरथहाक्यौ॥सुंदरमी
षगईसबहीचलीहेत्रसनांक
हीकेंतोहीपाक्यो॥१२॥हेत्रसनं
तोहीनेकुनलाजातूंहीभ्रमाय
मेरेसपछावतबूडनजायसम
द्रहिजाजा॥तूंहीभ्रमायपहार
चढावतबादअथामरिजाईअ
काजा॥तेंसबलोकभ्रमायभली
विधभांडकीयेसबरंकहूंराजा॥
सुंदरतोहीदुषाईकहोंअबहेत्र
सनांतोहीनेकुनलाजा॥१३॥इ
तित्रस्नाकोअंगसमाप्तः॥अंग

पा॥ अथ धीजउराहनेंको अंग प्रारंभः॥ छंद इंद्रवज्रय॥ पाव दिये चलनें फिरनें कहुं हाथ दीये हरी कृत्य करायो॥ कांन दिये सुनियें हरि को जस नैन दिये तिन मार्ग दिषायो॥ नाक दीये मुष सोभत ताकरि जीभ दई हरि को गुन गायो॥ सुंदर साज दीये परमेस्वर पेट दियो वडो पर पाप लगायो॥ १॥ कूप भरें अरु वाव भरें पुन ताल भरें वरषा रितु नीनों॥ कोटी भरें घट माट भरें घर हाट भरें सव ही भरि लीनों॥ षंदक षास व षार भरें पीपेट भरें न वडो दर दीनो॥ सुंदर रीतोई रीनो रहें यह कोंन षाडो पर

सुं० ॥ ६ ॥

मेस्वर कीनो ॥४॥ कवत किधों पे
ट चूलो किधों भाठी किधों भार
ग्राहै जोई कछू तो कीये सु सवै
जारि जानु है ॥ किधों पोरुषा लवै
धौं वारि किधों सागर है जितो
जल भरे तितो सकल समातु है
किंधों पेट है न किधों भूत प्रेतरा
सी है ॥ पाऊं षाऊं करे कछू नेक
न अघातु हैं सुंदर कहत प्रभु को
न पाप लायो पेट ज वही जनम
भयो तव ही को षातु है ॥ ५ ॥ विग्र
ह तो विग्रह करत अति वार वार
तन पुनि जन कनक वहूं अघा
यो है ॥ घट न भरत क्यो ही घट्यौ
ही रहत नित सरीर सिराई मे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तो कबू वन पायो है। रेह देहक
हतहीकहत तजनमवीसौ पिंड
पिंडकाजनिसदिनललचायो
है। पद गलगलत गलत तनत्र्प
त होई॥ सुंदरकहत वपुकोन
पापलायो है॥७॥ एकपेटकाजए
कएककोआधीनहे। पाजीपेट
काजकोटबालकोआधीनहो
ई। कोटवालसोतोसिकदारआ
गेहीनहे। सिकदारदीवांनकेपी
छेलग्योडोलेपंन दीवांनहूजाए
पातसाहआगेहीनहे। पातसाह
कहेपाषदारमज्जेमोहें ईपेटहीप
सारेनहीपेटवसकीनहे। सुंद
रकहतपमक्योंहीनहीभरेपेट॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तुं० ॥
२८ ॥

ऐकपेटकाजएकएककोआ
धीनहैं ॥ पनेतोप्रभुपेटदीयोज
गतनचायोजिनपेटहीकेली
येघरघरद्वारफिर्योहै ॥ पेटही
केलीयेहाथजोरीआगेठाढोहो
ईजोईजोईकहोसोईसोईऊनकै
स्योहै ॥ पेटहीकेलीयेपुनीमेघसीन
घांमसहेपेटहीकेलीयेजाईरन
मांहीमर्योहै ॥ सुंदरकहतइनपेट
सवभांडकीये ॥ औरगेलछूटेपरी
पेटगेलपर्योहै ॥ ई ॥ पेटसोनवली
जाकेआगेसवहारचलेरावअरु
रंकएकपेटजीनीलीयेहैं ॥ कोऊवा
घमारतविडारतहैंकुंजरकोंयेसे
सूरवीरपेटकाजप्रानदीयेहैं ॥ जं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्र मंत्र साधत आराधत म सानुजा
ई पैं आगे डरत न डरये से ही ये हैं॥
देवता असुर भूत प्रेत तीनों लोक
पुनि सुंदर कहत प्रभु पेट ऊर की
ये हैं ७ प्रात ही ऊठत जब पेट ही
की चिंता तब सब कोऊ जात आ
पु आप के अहार कों कोऊ अनषा
त पुनि आमिष भषत कोऊ कोऊ घा
स चरत कोऊ हार कों कोऊ मीन फ
ल कोऊ वास रस पय पान को ऊ पौन
पीवत भरत पेट भार कों सुंदर क
हत प्रभु पेट ही भ्रमाए सब पेट तु
में दीयो है जगत नहीं न ब्बार कों ८
छं दई द व च॥ पेट सो और न ही को
ई पापी पेट के कारन जी व हते वहू

सुं० २८

पेटहीमांसभषेरसुसुपीं।पेटही
लेकरचोरिकरावकं।पेटहीकों
गठरीगहीकापी।पेटहीपकसग
रेमहीडारन।पेटहूडारनकूपरु
वापी।सुंदरकाहेकोंपेटदीयोप्र
भुपेटसोंऔरनहींकोईपापीहै
औरनकोंप्रभुपेटदीयेतुमतेरे
तोपेटकहूंनहींदीसे।येभरकाई
दीपेरसहूंदिसकोंउकरांधनकों
उकपीसे।पेटहीकारननांचतहैं
सवज्योंघरहीघरनाचतकीसे।
सुंदरआपनषावहूंपीवहूंकोंन
करीकीनऊपरीसे।१०।।छंदम
नहर।।पेटनहूंतोतोप्रभुवेठेहम
रहते।काहेकोंकाहूकेआगेजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकेआधीनहोई॥ दीनदिनवच
नउचारत: कहते जिनकोंतो
महअरथगर्वगुमानआतितिनके
कठोरवैनकावहूनसहते गुंमा
ईभजनसेंअधिकलैलीनअ
तिसकलजोतसागिकेपेकांतनजाई गहने
सुंदरकहतनपहीतमहीलगायो
पापपेटनहूतेप्रभवैठिहमरह
ते॥ ९९॥ पेटहीकेवसप्रभसकल
जिहांनहै॥ पेटहीकेवसरंकपे
टहीकेवसरावपेटहीकेवस
औरषांनसुलतानहैं॥ पेटहीके
वसजोगीजंगमसंन्यासीशेष।
पेटहीकेवसैरिसीमुनितपधा
रिसव॥ पेटहीकेवससिधसाध

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कस्मजानहै सुंदरकहतनही
काहूकोरामीनरहै पेटहीकेव
समप्रभुसकलजिहानहै॥ २२॥ इ
तिधीर्जउराहनेकोअंगसमाप्त
अंग॥ ६॥ अथविस्वासकोअंग
प्रारंभः॥ ॥ छंदइंद्रवज्र॥ होई
निचिंतकरैमतचिंतहीचांचद
ईसोईचिंतकरैगोपाबपसारप
सोकिंनसोवत पेटदीयोसोई
पेटभरैगो जीवजितेजलकेथल
केपुनिपाहनमेंपहूंचायधरैगो
भूषहीभूषपुकारतहैनरसुंदरतूं
कहाभूषमरैगो १ धीरजधारवि
चारनिरंजरतीहीरच्योसोईआप
हीअैहैजेतीकभूषलगीघटमा

नहीं ॥ तेतिकतूं अनपासही पैहैं
जो मन में अमनाकरि ध्यावत ॥ ते
तिहूं लोकन पानअघे हैं ॥ सुंदर
तूं मत सोच करे कछू ॥ चैंच दई जि
न चूंन ही दइहैं ॥ २ ॥ नेकु न धीरज
धारत है नर आतुर होई है सो दि
स धावे ॥ जैपे पसु षैंच तो डारत न वे
धन ज्यो लगि नीरस आहार न आवे।
सुंदर आपकी पोषट भांजन सो
भरिहै मटी सो चउपावे ॥ ३ ॥ भांज
न आप घडे जिनने भरिहै भरिहै भरि
है भरिहै जु ॥ गावन है जिनके गन
कों ढरिहैं ढरिहैं ढरिहैं जु ॥ आदिहू ढरीहै
अंतहू मध्य सदा हरिहैं हरिहैं हरिहै
हरिहैं जु ॥ सुंदरदास सहाय सही क
रिहै करिहै करिहै करिहैं जु ॥ ४ ॥

ज्ञाननना ही महा मजि मूरख जा घर द्वार धनी पहचावै ३० २

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काहेकोंदोरतहेदसहूदिसमी
पु० नरहेषिकीयोहरिजूको॥वेठिर
२० हेहुरिकेमषमूंहिउघारलदांत
घवाईहेहूको॥गर्भथ्यकेप्रतिपा
लकरिजिनहीईस्योनवहीज
डमूंको॥सुंदरकेपोंविललातनपि
रेअवमाषरिहेविसवासप्रभुको
पजादिनतेंप्रभवासनज्योंनर
आईअहारलीयोनवहीको॥षा
नहीषानभएइननेंदिनजानन
नाहीनमूंषकहीको॥होरतथ्याव
नपेटहिषावतनेंसठकीटसहा
अनहीको॥सुंदरकोंविसवास
नराषतसोप्रभुविस्वभरेकवही
कोई॥षेचरभूचरजेजलकेचर
देतअहारचराचरपोषे वेहरि

जुसबकोंप्रतिपालततेऐंहिभां
तितिसीविधतोषैं॥तुमसबमेंऐंवि
सवासनराषतभूलतहेकित
धोपेहिंधोषे॥तोहिनहांपहूंचा
पाहेप्रभसुंदरवेठिरहेंकिंनपो
षे॥७॥छंदमनहर॥काहेकोंव
घूराभयोपिरतअज्ञानीनरते
रोतोरिजकतेरेघरवेठेंआयहैं
भावेतुंसुमेरजाईभावेंजाईभा
वेजाईमारूदेस॥जितनोंकेंभाग
लिष्योतितनोंकपाईहैं॥कूपमांा
भरिभावेंसागरकेतीरभरिजित
नोंकभाडोनीरतितनोंसमाईहैं॥
ताहीतेसंतोषकरिसुंदरविस्वा
सधरीजितनोंरच्योहेघटसोई

सुं०
३१

अमराई है ॥ ५ काहे कों फिरत नर
दीनभयो घरघर देषी यतें रोतें तो अ
हारई कसेर है जाकों देह सागर में
सोसत जोजन कों ताहू कों ताहू कों ने
हेत प्रभु या में नहीं फेर है भूष्यो कों अ
रत नजांनी पें जगत माहीं कीरी अ
रु कुंजर सबनिहीकों देर है ॥ सुंद
कहत विसवास कौं न राषे सठ
वारवार समुझायक ह्यो केतीवेर
है ॥ ६ तेरे तो अधीरज तूं आगली
हि चिंत करें आजतो भर्यो है पेटका
काल कैसी होई है ॥ भूषाई प्रकारें अ
रु दीन उठि षातो जाई अनिही अ
नीन्ताकी मनि गई षोई है ॥ ताकों न
हीजांने सठ जाको नाम विस्वंभ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रजहांतहांप्रगटसबनिदेतसो
ईहै॥सुंदरकहतनतोहीवाकोतोम
रोसोनहीएकविसवासविनया
हीभांतिरोईहै॥१०॥देषधोसकल
विस्वभरतभरनहारचूंचकेसमा
नचूंनसबहीकोंदेतहै॥कीटपसु
पंपीअजगरमछकछपनउनके
नसोहाकोऊनतोकछूषेतहैं॥पे
टहीकेकाजरातदिवसभ्रमतस
ठमेतोजान्योनीकेकरितंतोकोउ
प्रेतहै॥मानषसरीरपायकरतहैह
पहायसुंदरकहतनरनेरेसिरहेनहैं
११॥नतोभयोबावरोउतावरोफिर
तअतिप्रभुकोविस्वासगहीकाहे
नरहतहैं॥नेरेतोरिजकहेसोआई
हैसहजमांही॥योंहीचिंताकरीक

२० ।। तिदेहकोंदहतुहैं ।। निनपदुनष
सिषसजिकेसवायो हैतोहीग्र
२२ ।। नेकीपेकीवहलाजकोंवहतुहैं ।।
काहेकोंग्रज्ञानीकछुसोचमन
मांहीकरेभूषोतुंकहेन रहेसुंदरक
हतुहै ।।१२।। जगतमेंग्राईकेविसारे
हेजगतपतिजगतकीयोहेसोई
जगतभरतुहैं तेरेनिसदिनचिंता
ग्रोरहीपरिहेंग्राईउद्यमग्रनेकभां
तीभोवीकेकारतुहे इतउतजाय
केंकमाईकरिल्यांउंकछूनेकुन
ग्रज्ञांनीनरधीरजधरतुहै सुंदरक
हतयेकप्रभुकेविस्वासविंनवाद
हीकोंव्यासकोचिकेंमरतुहे ।।१३।। इ
ति विस्वासकोग्रंगसमाप्त: ।। ग्रं
ग ७ ।। ग्रथदेहमलीनताग्रंग

हारकोअंगप्रारंभः॥ देहतोम
लीनअतिवहूतविकारभरीता
हूमांहीजराव्याधिसवदुःषरा
सीहेंकवहूकपेटपीरकवहूंक
सिरवायकवहूकआंषकानमु
षमेंवियासीहेंओरहूअनेक
रोगनषशिषपूररहेंकवहूकख
सचलेंकवहूकपासीहेंओसोय
शरीरताहीआपनोकेमान.नहें
सुंदरकहतयामेंकोनसुषवासी
हें १जाशरीरमांहीतूंअनेकसु
षमानरह्यौनाहीतूविचारयामें
कोंनवातभलीहेंमेदमंजामांस
रगरगमेंरगतभरोपेटहूपिटा
रीसीमेंठोरठोरमलीहेंहाडनि
सोंभरयोमुःषहाडनिकेनेनना

कहाथपावसोऊसबहाडनीको
सुं० नलीहै॥सुंदरकेहतयाहीदेषीजि
२३ नभूलेंकोईभीतरमिगारभरीऊप
रतोकलीहै॥२॥छंदइंद्रवजय॥
हाडकोपिंजरचांममढ्योसबमां
हीभर्यौमलमूत्रविकारा॥थूकरू
लालपरेंमुःषतेंपुनीब्याधिवहै
सबञोरहूद्वारा॥मांसकीजीभ
सोंषापसबेकछूनाहीतेंताको
हैंकोनविचारा॥येसेंसरीरमेंपैसि
केसुंदरकेसेंकेकीजीयेसोचञ्चव
रा॥३॥काहेकौंतूंनरचालनटैठोधू
करलालभर्योमुषदीसनआंषि
मेगीडरनांकमेंसेंटो॥श्रोत्रउद्वार
मलीनरहें॥श्रनिहाडकेमांसकेभी
तरवैठो॥सेंसरीरमेंवासकिघोत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वयेकसेहीसतबाम्हनहेहो सुंद
रगर्वकहाइजनेंपरकाहेकोंनून
रचालतहेहो॥४॥आपनीआदी
विचारतनाहींजाहिंनगर्भसंजोग
भयोजवतादिनबुंदछियाहूताही
दूहसमासअधोमुषफूलतेवू
डरह्योपनिवारसमाहीजोरजवी
रजकोपहदेहगुंतोअवचालतहे
बनछांहीं॥सुंदरगर्वगुमानकहा
सठआपनीआदीविचारतनाहीं॥
५॥इतिदेहमलीनतागर्वप्रहा
कोअंगसमाप्तः॥अंग॥ ॥अथ
नारीनिंद्याकोअंगप्रारंभः॥
छंदमनहर॥कामनिकोतनमानों
कहींयेसघनवनउहीकोउजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

येसोतोमूलेहिपरतहैं कुंजरहैं
गतिकटिकेहरिकोभयजामें
वेंनीकालीनागनीअफनिको
धरतहैं कुचहैंपहारजहांका
मचोररहैतहांसाधिकेकटाछ
वांनकोहरतहैं सुंदरकहतये
कअोरडरजामेंअतिरासंसा
वटनषांउषांउहीकरतहैं ९ वि
षहीकीभोमीमांहीविषकेअं
कुरभयेनारीविषवेलिवहीनष
सिषदेषीयें विषहीकेजरमूल
विषहीकेडारपातविषहीकेफू
लफललागेजदिवीसेषीयें वि
षकेतंतुपसारउराईअांटीमा
रसबनरवेषपालपटहीलेषी

ये॥सुंदरकहतकोउसंतनरूवचि
गयेतिनकेनोकहूलतालागीन
हीपेषीयें॥२॥उदरमेंनरकनरक
अघद्वारनिमेंकुचनिमेंनरकभरक
भरि छातीहै॥कंठमेंनरककगालचिं
बुकनरककविंवमुषमेंनरकजी
भलालहूचुचातीहैं॥नाकमेंनर
कआंषकानमेंनरकवहेंहाथ
पाउनषसिषनरकदिषातीहै॥
सुंदरकहतनारीनरककोकुंड
यहनरकमेंजाईपरेसोतोनरक
पातीहैं॥३॥कामनिकेअंगअति
मलिनमहाअसुद्धरोमरोममलि
नमलीनसववुद्धारहैं॥हाडमांसम
जामेदचामसोंलपेटराषेठौरठौर
रक्तकेभरेईभंडारहैं॥मूत्रऊपरीष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनयेकमेकमिलीरहीओरही
१०॥ उदरमांहीविवधविकारहैं॥सुं
५॥ दरकहतनारीनषसिषवितदारूप
ताहीजेसराहैंसोतोवडोईगवा
रहै॥४॥छंदकुंडलीया॥रसिक
प्रीयारसमंजरीओरसिंगारही
जांन॥चतुराईकरिवहूतविधि
विषेवनाईआन॥विषेवनाईआ
नलगतविषयनिकोंप्यारीजागै
महनप्रचंडसराहैंनषसिषनारी
जोरोगीमिष्टांनषाईरोगहीविस्त
रैंसुंदरयेगतिहोईजोरसिकप्री
याधारे॥५॥रसिकप्रियाकेसुनतही
उपजेंवहूतविकार॥जायामांही
विनधरेवहैंहोतनरष्वार॥वहैहैं
तनरष्वारवारजोकवूवनलागे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनत विषय की बात लहर विष ही की जागे ज्यौं को उऊंध्यो हू तो॥ लेई पुनि सेज बिछाई सुंदर ऐसी जानं सुनत रसिक सपा भाई॥६॥

इति नारी निंद्या को अंग समाप्तः॥ अंग ४०

अथ दुष्ट जन को अंग प्रारंभः॥

छंद मनहर॥ अपने न दोष देषे पर के अगन पेषे दुष्ट को स्वभाव उठि निंदाई करत है जैसे कोई महल संवारि राष्यो नीकै करी कि रीत हां जाई छिद्र ढूंढत फिरत है भोर ही ते सांझ लग सांझ ही ते भोर लग सुंदर कहत दिन ऐसे ही भरत है पाव के तरे की नहीं सूझे आग मूंप की ओरनिसौं कहत तेरे सि

रयेंवरनुहे ॥ १ ॥ छंदइंद्रवज्रा ॥ पान
अनेकरहेंउरअंतरदुष्टकहैमुषसें
अतिमीठी ॥ लोटनपोटनयाघही
ज्योंनितताकतहेपनताहीकीपी
ठी ॥ उपरनैंछिरकैजलआनमुहे
ठलगावतजारिअगीठी ॥ यामहीं
कूरकछूमनिजांनहूंमुइहआपनि
आंषिनीदीठी ॥ २ ॥ दुष्टकरेंनहीकोंभ
लाईआपनेंकाजसंवारनकेंहि
नऔरकोकाजविगारनआई ॥
आपनोंकारजहोउनहोउवरोक
रऔरकोडारनभाई ॥ आपहूषोव
नऔरहूषोवनषोयदुनोघरदेत
वहाईसुंदरहेषनहीवनीआवत
दुष्टकौंनहीकोंनवराई ॥ ३ ॥ ज्योंनर

पोषत हैं निज देह ही आन विनास
करे तिहीवार। ज्यौं अहि औरम
नुष ही काटत वाही कछू नही हो
त अहार। ज्यौं पुनि पावक जारि
स वे कछु आपही नास भयो निर
धार। सौं यह सुंदर दुष्ट स्वभाव ह
जांनित जो किन तीन प्रकार। ४।
दुर्जन संग भलो जिंन जानों सर्प
डसे सुं नही कछू नाल कवी छूल
गे सु भलो करि मांनो। सिंघ हू षाए
तो नाही कछू डर जो गज मारत तो
नही हांनो। आगजरो जल बूडि म
रो गिरी जाई गिरो कछु भै मन आं
नो। आगजरो जल बूडि मरो गिरि
जाई गिरो कछु भै मन मांनो। सुंद

रुओरमलेसवहीयहदुर्जनसंग

मलोजिंनजांनो॥५॥इतिदुष्टजन

कौअंगसमाप्तः॥अंग ७०॥अथ

मनकोअंगप्रारंभः॥छंदमनह

र॥हटकिहटकिमनराषतजौ

छिंनछिंनसटकिसटकिचहू

ओरअबजातहैं॥लटकिलटकि

ललचायलोलवारवारगटकि

गटकिकरिविषफलषातहैं॥

टकिटकिताटकिनारतोरतकरमही

न भटकिभटकिकहूंनेकनअघा

तहैं॥पटकिपटकिसिरसुंदरश्री

गनहारीफिटकिफिटकिजाईस

धोकौंनवातहैं॥१॥मनकीप्रतीतको

उकरैसोदिवानोहैपलहीमेंमरिजा

यपलहीमेंजीवतुहे पलहीमेंपरहा
यहेपतविकानोहेपलहीमेंफिरे
नवषंडब्रह्मंडसवदेष्योअनदेष्यो
सोतोमानेनहींछ्रानोहेजातोनहींजा
नहींजानीयतेआवतोनहींमेकछू
येसोवैलाईअवतासोंपरैयोपानोहे
सुंदरकहतयाकीगतीहूनलषीप
रेमनकीप्रतीतकोउकरेसुहिवानो
हेमनकोस्वभावकछूकसोनप
रतुहेंघरीयेंतोधसोहूनआवतहेमे
रोपूतजोईपरबोधीयेसुकौनतधर
तुहेनीतीनअनीतीदेषेंसुभनअसु
भयेषेंपलहीमेंहोतीअनहोतीहूक
रतुहेगुरहूकीनसाधुकीनलोकवेद
हूकीसंककाहूकीनमनेंतनोकाहू
तेडरतहेसुंदरकहतताहीधीजीयें

सुकोंनभांनीमनकोस्वभावकछू
ककह्योनपरतहे ३ मनसोनकोउ
हमदेष्योअपराधीहेकामजवजा
गेतवगिननतनकोउसंककजांनेसव
जोईकरिदेषतनमाधीहे क्रोधज
वजागेतवनेकनसंभारसकेयेसी
विधीमूलकीअविद्याजिनसाधीहे
लोभजवजागेंनवअपतिनवयोंही
होईसंदरकहतइनपेमेंहीमेंषाधी
हे मोहमतवारोनिसदिनहीफिरत
हेमनसोनकहेंहमदेष्योअपराधीहे
४ मनसोनहुंकोउदेष्योदगावाजहै
देषवेकोंदोरेतोअटकीजाईवाहीथे
रसुनवेंकोंदोरेतोरसिकसिरताज
हैं संगवेकोदोरेतोअघाईनसुगंध
करषायकोदोरेतोनधापेमहाराज

हे भोगहीकोंदोरतोत्रपतिनही
होईक्योंहीसुंदरकहतयाहीनला
जहेकाहूकोनकहोकरेआपुनीही
टेकपरेमनसोनकोउहमदेष्योद
गावाजहे ५ मनसोनकोउहेअध
मयाजगतमेदेषेनकुठोरठोरकह
तओरकीओलीनजाईहोतहाड
मांसउरगतमें करतबुराईसरन
जांनेकछूधकाआयदेतरांमनांम
सोंलगतमे वहायेसुरअसुरवहा
येसवभेषजिनसुंदरकहतदिनघा
लतभगतमें ओरउअनेकअंतराई
हीकातरहेमनसोनकोउहेअधम
याजगतमें ६ मनसोनकोउयाज
गतमाहीपिंदहे जिंनठगेसंकावि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धाताइंद्रहैब्रमुनीआपनोऊभ्र
धीपतिठग्योजिनचंद्रहै औरजो
गीजंगमसंन्यासीसेषकौनगिनै
सवनिकौंठगतठगाएनेखछै
है॥ तापसऋषीस्वरसकलपवि
पविगए॥ काहूकैनआवेहाथऐसो
यामेवंदहै॥ सुंदरकहतअवकौन
विधिधीजेताही॥ मनसोनकोउप
जगतमाहीरिंदहै॥७॥ मनकेनचाए
सवजगतमचतहै॥ रंककौंनचावे
अभिलाषधनपायवेकी॥ निसदि
नसोचकरिऐसेंहीपचतहै॥ राजाहि
नचावेसवभौमीहीकोराजलेवे॥
औरउनचावेजोईहैहसौंरचतहै॥
देवताअसुरसिधपन्नगसकल

लोककी दपसु पंछी कहूके सें का
रीवचनहै॥ सुंदर कहत काहू संत
कीक हीन जाई मन के न चाएस
वू जगत नचत है॥२॥ छंद इंद्रव
ज्र॥ कोन कधो सभए समुझा
वत्ते कन मानत है मन भीद॥ भू
लरह्यो विषयासुःषमें कछू और
नजानत है सठ दोदु॥ आंषिन कांन
कांनन नाक विना सिर हाथन पा
वन ही मुषपोंहू॥ सुंदर ताहि गहें
कोउ क्यौं करि निकस्यो जाई वडो म
नलोंदू॥३॥ दोरत है दसहूं दिसकों
सठ वापुलगेपोतवतें भयो मेंडा॥
लाज न कांन कछू नहीं राषत सी
लस्वभाव की फोरत वेंडा॥ सुंदर सी
षकहा कहि दिजी पैंभैंटे न हीवांन

सुं०
६८

छेदें न दीगंडा लाल चलागरश्री
मनकीषरवारे हीवाट अटारहि
पंडा १० स्वांनकहूं केअंगालक
हूं किविलाडकहूं मनकीमतिते
सी टेरकहूं किघोडमकहोंकि
धोमांडकहूं केमंडाईदेजेसी ॥
चोरकहूं वटपारकहूं ठगजार
कहूं उपमाकहूं केसी सुंदरश्री
रकहा कहीपें अवया मनकीग
नहीसनपेसी ११ कैवेरतुंमन
रंकमपोसठमांगनभीषदसी
हिसडूल्यो कैवेरतुंमनरंकम
पोसठमांगनभीषरयोहिसड
ल्यो कैवेरतुंमनछत्रधरयोसि
रकामनिसंग हिंडोरनझूल्यो
कैवेरतुंमनछीनमयो आतिके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे रतं सुषपाईके फूल्यो सुंदरकै वेरतो
हिकसो मन कों नगली केही मारग
भूल्यो १२ इंद्र निके सुःषचाहत हैं म
नलाल चलागिम्रमेंसूठयोंही देषी
मरीचीभलो जलपूरनधावत हैं म
गमूर्षत्योंही प्रेतपिसाचनिसाचर
डोलतभूषमरेनहीधापनकोंही॥
वापूवपूरहिकोंनगहेकरसुंदरदे
रतहेमनसोंही १३ तंमनकैोंनही
आपसंभारेहेसवकोसिरताजतन
छिनज्योंअमिअंतरज्ञानविचारेंजो
कछूओरविषेसुषवंछततोपहहै
हअमोलकहारेंछांडिकूवधभजे
भगवंतहीआपुतरेपुनिओरहीता
रेसुंदरतोहीकह्योकितनीवेरतूंम
नकोंनहीआपसंभारे१४रेमनतूं

सुं० ।।
८१ ।।

भ्रमजोकिनछांडेकोनस्वभावप
ल्योउठिदौरत ।। भ्रमनछांडिचवो
रहाडे: ज्यौंभ्रमकीहाथनीढूगदे
घत आतहोईपरेगजघाडे: ग
हव्यथामटकेनिसवासरएकहू
सीषलगीनहींरांडे ।। सुंदरतोहीस
दासमुझावतरेमनतूभ्रमजोकिन
छांडे ।। ९५ ।। जोमननारिकीवोरनि
हारततोमनहोतहेताहीकोरूपा
जोमनकाहूसोंक्रोधकरेंजवक्रो
धकरेजवक्रोधईहोयजाईतद्रू
पा ।। जोमनमायाहीमायारटेनित
तोमनबूडतमायाकेकूपा ।। सुंदरजो
मनब्रह्मविचारततोमनहोतहेब्र
ह्मस्वरूपा ।। ९६ ।। छंदमनहर ।। कव
हूकहमउठिकवहूकरोईदेत कवहू

वकनतकहूंअंतहूनलहीयेंकवहू
कघाईतोअघातनहीकाहूकरि
कवूहूककहेमेरेकछूनहीचही
येंकवहूआकासजाईकवहूपाता
लजाईसुंदरकहतनाहीकेसेंकरी
गहीयेंकवहूकआपलगेकवहूउं
तरभागेंभूतकेसेचिन्नकरेऐसोम
नकहीये ९७ कवहूतोपांषकोप
रेवाकेहिपावेमनकवहूकधूरके
चारकरिलेनहेकवहूतोगोटि
काउछारतआकासवोरकवहूतो
रानेपीरेंगस्यामस्वेतहेकवहूतो
आंवकोउगाईकरिठाठोकरेकव
हूतोसीसधरज्जदेकरिदेतहेवाजी
गरष्यालयेसोसुंदरकहतमनस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ताईभ्रमतरहेऐसोकोउप्रेतहे॥९८
कवहूकसाधहोतकवहूकचोर
होतकवहूकराजाहोतकवहूक
रंकसो॥कवहूकहीनहोतकवहू
गुमानीहोतकवहूकसूधोहोत
कवहूकवंकसो॥कवहूककामी
होतकवहूकजतीहोतकवहूनि
मलहोतकवहूकपंकसो॥मनको
स्वरूपऐसोसुंदरफटिकजेसो
कवहूकसूरहोतकवहूमयंकसो
॥हाथीकोसोकांनकिधोंपीपर
कोपांनकिधों॥ध्वजाकोउडांनक
हूंथिरनरहतुहै॥पांनीकोसोघेर
किधोंपोनउरझेरकिधोंचक्रको
सोफेरकोउकेसेंकेगहतुहे॥अह

टकीमालकिधोंचषाकोष्यालकि
धोंफेरीपानोबालकछूसुधनेंह
नुहे। धूमकेसोधावनाकोराषवेको
चावेपेसोमनकोस्वभावसोनोसु
दरकहनुहे २० सुषमानेदुःखमा
नेंसंपत्तिविपत्तिमानेहर्षमानेसो
कमानेमानेरंकधनहे। घटिमाने
वढिमानेसुभहूअसुभमानेलाभ
मानेहांनमानेपाहीतेंरूपनहे।
पापमानेपुन्यमानेउनममध्यम
मानेनीचमानेऊंचमानेमानेमे
रोतनहे। स्वर्गमानेनर्कमानेबंध
नमानेमोक्षमानेसुंदरसकलमा
नेनातेंनाममनहे २१ जोईजोईदे
षेकछूसोईमनआहीजोईजोई
सोई

सुनेसोईमनहीकोभर्महें।जोईजो
सु० ईसूंघेजोईषाईजोमसर्सहैसोईजोई
४३ जोईकरैसोईमनहीकोकर्महै।जो
ईजोईग्रहेजोईत्यागेजोअनुरागे
जहांजहांजाईसोईमनहीकोअ
र्महे।जोईजोईकहेंसोईसकलसुर
रमनजोईकल्पेसोईमनहीकोध
र्महै।२२।येकहीविटपविस्वज्योंको
सोहीदेषीयतन्अतिहीसघनताके
पत्रफलफूलहें।आगलेफरतपात
नअेनअेहोतजातपेसेंपाहीनरू
कोअनादीकालमूलहें।दसच्यार
लोकलोपसरिरह्योजहांतहांअ
रधउरधपनिसुक्षमरूस्थूलहें।
कोउतोकहनसतकोउतोकहें

भ्रमसमुंदरकहतभर्महीकोमन

मूलहै ॥ २५ ॥ जोसोनकपूतकोऊकि

नहूनदेषीपूतजोसोनसपूतको

ऊदेषीपतओरहै । तूंहीआपभूले

महानीचहूनेनीचहोईतूंहीआप

जानेतोसकलसिरमोरहै । तूंहीआ

पभ्रमेंतवजगतभ्रमतदेषेतेरेथि

रभयेसबठोरहीकोठोरहै । तूंहीजी

वरूपतूंहीब्रह्महैआकासवतसुं

दरकहतमनतेरीसबटोरहै । २६

मनहीकेभ्रमतेंजगतयहदेषीय

तमनहीकोभ्रमगयेजगतवि

लातहै । मनहीकेभर्मजेवरीमेंउ

पजतसापमनकेविचारेसापजे

वरीसमानहै । मनहीकेभर्मतेम

रीचिकाकोंजलकहेमनहीकेभर्म
० सीपहूपोसोदिषानहे।सुंदरसक
४ लपहरीसेमनहीकोभर्ममनही
कोभ्रमगऐब्रह्महोईजातहे।५
मनहीजगतरूपहोईकेरिविस्त
र्योमनहीअलषरूपजगतसों
न्यारोहे।मनहीसकलघटआप
कअखंडएकमनहीसकलएह
जगतपियारोहें।मनहीआकास
वनहाथनपवनकछूमनकेनरू
परेषत्रधहीनवारोहें।सुंदरकह
तपरमार्थविचारेजवमनमिटि
जाईएकब्रह्मनिजसारोहे।।२९।।ई
तिमनकौअंगसमाप्तः।।अंग।।
११।।अथचाताककौअंगप्रारं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

म॰॥ छंद मनहर ॥ जोई जोई छूटवे
को करत उपाय अग पसोई सोई दृ
ढ करि बंधन परत हैं। जोग जज्ञ ज
प तप तीर्थ ब्रतादि और फंपापातले
न जाई हीमा लेग रत हैं कोन हू प्रका
ई पुंनिके सहूल चाई अंग विभूति
लगाई सिर जटा ऊ धरत हैं। विना
ज्ञान पाअे नही छूटत हृदयग्रंथी
सुंदर कहत पोही भ्रमी के मरत हैं
१ सर्वलघु अक्षर ॥ तपज पकरत
धरत ब्रत जतसत मम व चक्रमभ्र
म कष्ट सहत तन वलकल वसन
असन फल पत्र जल कसत रसन
रसत जन वसत वन ॥ जरत मरत
न रगरत परत सर कहत लहत ह

सुं०
८५

पगजदलवलघन॥ पचतपचात
मरभयपनटरतसठघटघट प्रगट
रहतनलषतजन॥२॥ जोगकरेजोग
करेवेदविधित्यागकरेजपकरेत
पकरेयोंहीआयूषूटीहै॥ जमकरेनि
मकरेतीरथउव्रतकरेपुहमीअ
टनकरेव्रथास्वासजुटिहैं॥ जीवेको
जतनकरेमनमेंवासनाधरेपवि
पचिपैहीमरेकालसिरषूटिहैं यो
रउअनेकविधिकोटिकउपायकरो
सुंदरकहतविनज्ञाननहींछूटीहै॥
॥३॥ वधीकारीहीनरराजनमछाप
हौवनवन[illegible]फिरतउदासहोईघ
रतें॥ केठननतपस्याधरीमेघसीतघाम
सहेकेंदमूलषाईकोउकामनाकेअ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तें। अतिही अज्ञान और विविध उपा
य करे निजरूप भूलि के बंधन जाई प
रतें। सुंदर कहत ऊंची ओर केसें दीषे सु:
षदाय माहि आसीन फेरे मूढ करतें।।
४ ॥ मेघ सहे सीत सहे सीस पर घाम
सहे कठिन तपस्या करिकें कंद मूल षात
हे। जोग करे जाग करे तीर्थ अब्रत क
रे पुंन्य नाना विध करे मन में सहात
हे। और देवी देवता उपासना अने
क करे आंवनि की होंस केसें आकडो
डे जात हे। सुंदर कहत एक रवि के प्र
काश विनु जोंना की जोंनी कहा रज
नि विलात हे। ५ देषो भाई आंधरे ने
ज्यों वजार जूट्यो हे कोई फिरे नागे
पाय गरीव नाप करी देह की दि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुं०
७६

साहिबाई आई लोक धूत्यो है ॥ कोई
दूधाधारी होई कोई फलाहारी तोई
कोई अधोमुष फूले कूलि धूम घूंटो
है कोई नहीं षा पलौंन कोई मुःष
गहें मौन ॥ सुंदर कहत योंही ब्रथा
भूस कूट्यौ है ॥ प्रभु सों तो प्रीति नाही
ग्यान सों परचै नाही है षोभाई अंध
गने ज्यौं वजार लूट्यौ है ६ ॥ छंद इंद्र
वजप ॥ आसन मारी संवारी जटा
नष उज्वल अंग विभूति चढाई ॥ या
हम कों कछु देहि कृपा करि चेरी रहे
बहु लोग लुगाई कोउक उन मभी
जन लावन कोई कल्यावन पानमि
ठाई सुंदर लेकरि जान भयो सब मूष
लोक निपासि दूपाई ७ ॥ उर्धपापगे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धोमुषदैकरीघूटतधुमहीदेहकुं
लावे मेघहूसीनहूघांमसहेसिर
तीनहूकालमसादुषपावे हायक
छूनपरेकवहूकनमूर्षकूकसकू
टिउडावे सुंदरवंछेसवसुःषकों
घरवृडतहैंग्रहजांगणगावे २१
ग्रेहनज्यौग्रहनेहतज्यौपुनीषेह
लगाईकैदेहसंवारी मेघसहेसि
रसीतसहेतनधूपसरेजुंपंचाग
निवारी भूषसहेरहीरूषतरेपर
सुंदरदाससहेदुषभारी डासनछां
डिकेकासनउपरग्रासनमार्यो
पेंग्रासनमारी २ जोकोउकष्ट
करेवहुभांतिनीजातअज्ञानन
हींमनकेरो ज्यौंतमपूरीरह्यौघर

सुं
४८

भीतर केसें हू दूरि न होय अंधेरो ॥
लाठि निमारी पै ठलि निकारी पैओ
रउ पाप करे बहू तेरो सुंदर सूरप्रका
स भयो तब तो कीन हूं न ही देषी पै ने
रो १० धार बह्यौ षड धारी रह्यौ ज
लधार सह्यौ गिर धार धर्यौ है मा
र सह्यौ धन मार रण में कर मार ल
ह्यौ शिर भार पर्यौ है मार तन्यौ
ही मार गयो जम मार दई मन तो
न मर्यौ है सारत जो घट मार प
र्यौ कही सुंदर काज कौन सर्यौ
है ११ कोउ भषपापय पान करें नित
कोउ कषात हैं अन्न अलोंना को
ई कष्ट करें निस वासुर कोई कव
ठी के साधन पोंना कोई कवादवि

।तिकोउकधारीरहैंग्र:
द.येकअज्ञानगयेवि
नहीदीसतकाना॥
अंगविभूतिलगावत
निगटदिगंवरकोउ
पकवोढतकोउकका
वरकोउकवनकलसी
ोउकवोढतहैंवाघं
अज्ञानगयेविनपेस
ही[illegible]अंवर॥९३
।आपहीकेघटमांही
वरहेताईछोडीभूले
ातहैंकोईहारेहारिका
जगन्नाथकोईदोरेम
द्वारनातहैंकोईदोरेव
षमपहारचढेकोईगोके

वादकरेंअतिकोउकधारीरहेंमु:
षमोना।सुंदरयेकअज्ञानगयेवि
नसिधभयेनहीदीसतकाना॥
९२ कोईकअंगविभूतिलगावत
कोउकहोतनिगटदिगंवर।कोउ
कसेतकषापकवोढतकोउकका
परंगेवहुअंवर।कोउकवनकलसी
सजटानषकोउकवोढतहेंजवाघं
वर।सुंदरयेकअज्ञानगयेविनपेम
वदीसतमाही ... ९३
छंदमनहर॥ आपहीकेघटमांही
प्रगटपमेंस्वरहेताईछोडीभूलें
नरहूरदूरजानहें।कोईदोरेंद्वारिका
कोकेईकासीजगन्नाथकेईदोरेंम
थुराकोंहरिद्वारनानहें।कोईदोरेंव
द्रीकोंविषमपहारचढेंकोईनोके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दारजातमनमेंसौहाततहें सुंदरकह
सुं० तगुरुदेवदेईदिव्यनेंनदूरहीकेटू
४८ रविननिकटदिषात्तहैं ॥१४॥ छंद
इंद्रवजय ॥ कोईकजातप्रयागव
नारसीकोईगयाजगंनाथहींधा
वे कोईमथूराबदरीहरिद्वारस
कोईगंगाकुरुषेत्रनाहावे कोऊप
पुष्करह्वैपंचतीर्थदोरेदौरेजद्वा
रिकाआवैं सुंदरवितगस्योघरमां
हीसुबाहिरढूंढतक्योंकरिपावें॥
१५ छांडि भ्रमनरभांडकेदोनांन्ना
गेकछूनहीहाथपस्योपुनपीछेवि
गारिगयोनिजमोंना ज्योंकोईक
कामनीनमारीचलीसंगश्रोरही
देषीसलोंना सोउगपोतजिकेंत
तकालकहेनवनेजरहीमःषमों

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ना तैसैंहीसुंदरज्ञानविनासवछौं
डभयेनरभांडकेदोना १६ ज्यौंको
उकोसकभ्यौनहीमारग तेलकले
घरमैंपसुजोये ज्यौंवनीपागयोवी
सकेतीसकोंवीसहमैंदसहनहीहो
ई ज्यौंकोउचौवेछवेकोंचल्योपंनी
होईदुवेदुईगांठकेषोये तैसैंहीसुं
दरश्रोरक्रीयासवरामविनानिष्फे
नरोये १७ ज्यौंकोउरामविनास
रमूरषश्रोरतिकेगुनजीभमनैंगी
श्रानक्रियागांठकेगडवापंनीहोनहैं
मेरकछूनवरागी ज्यौंहथफेरीदि
षावतचावरश्रंनतोधूरीकीधूरि
छिनैंगी सुंदरमूलभईश्रनसेक
रिसूतेकीभैंसपाडाईजनैगी १८।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

होइउदासविचारविनानरग्रेह
सुं० नज्योवनजाईहोहें॥ग्रंवरछं
८२ डिवघंवालेकरिकेतपकोनन
कष्टसह्योहैं सुंदरकोनकुवधिल
गीकहीयाभवसागमाहीवह्योहै।
९९॥भेषधस्योपरिभेदनजानतभे
दलहेविनुषेदहीपेहैं॥मूषहीमार
ननीहनिवारितग्रन्नतजेफलप
त्रनषैहैं॥ग्रौरउपायअनेककरेप
नीनाहीनेहाथकछूनहीग्रहें॥या
नरदेहवृथासठषोवनसुंदरराम
विनापछनैहै॥२०॥ग्रापनेग्रापने
पानमकामसराहनकोंसवभांति
भलीहे॥पढ्नेनादिकतीर्थदानपु
नकयाजुअनेकचलीहैं॥कोटिक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

औरउपायजहांलागतेमुनीकेन
रवद्धिछलीहैं॥सुंदरज्ञानविनान
कहूंसुषमूलनकीबहुभांतिग
लीहैं॥२१॥कोउकचाहतपुत्रधना
दिककोउकचाहतवांमजनायो॥
कोउकचाहतधातुरसादिककोउ
कचाहतपारदेषायो॥कोउकचाह
तजंत्रनिमंत्रनिकोउकचाहतरो
गगमायो॥सुंदररामबिनासबही
भ्रमदेषहूयाजगयौंडहकायो॥
२२॥काहेकौंतूंनरभेषबनावतका
हेकौंतूंहसहूदिसडूलेकाहेकौंतू
ननवकष्टकरेअतिकाहेकौंतूमुष
तेंकहीफूलेकाहेकोंऔरउपायक
रेअबआंनक्रीयाकरकेंमनमूले

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुं० सुंदरयेकभजेभगवंतहीनोसुषसा
५४० गरमेंनितन्हूलै २३ ॥ इति चाणक
कोअंगसमाप्तः ॥ अंग ॥ १२ ॥
अथविप्रीतज्ञानकोअंगप्रारं
भः ॥ छंदमनहर ॥ ऐकब्रह्ममुष
सोंवनायकरिकहतहें ॥ अंतःकर
णजोविकारनसोंभर्योहे जेसेंठ
गगोवरकोकूपभरिराषतहेंसो
रुपंचअतलेकेऊपरज्योंकर्योहे
जेसेकोईभांडेमांहीप्याजकोंछिपा
पराषेंचीथराकपूरकोलेमुःषवां
धिधर्योहे ॥ सुंदरकहतऐसेज्ञानी
हेंजगतमांहीतिनकोंतोदेषीक
रिमेंरोमनडर्योहे ॥ १ ॥ देहसोंममत्व
पुनीग्रेहसोंममत्वसुतदारासोंमं

मलयुतदारासोंममलमनमाया
मेंरहतहें।थिरतानलहेजेसेंकं
दुकचोगांनमाहीकर्मनिकेवस
माहीधकाकोंवहतहे।अंतःकर
नसहाजगतसोंरचिरह्योमुःषसें
वनामवातब्रह्मकीकहतहे।सुद
रअधिकमोहीपाहीनेअचंभो
आहीभूमीपरिपस्योकोउचंदकों
गहतहे।।मुःषसोंकहतज्ञानभ्र
मेंमनइंद्रीप्रांनमार्गकेजलमें
नप्रतिविंवलहीयें।गांठिमेंनपैसा
कोउभयोरहेंसाउकारवाननिमें
महूरूपैपागनिलहीपे स्वपने
मेंपंचामृतजीमकेत्रपतिभयो
जागेतेंमरतभूषषाईवेकोंचहीये

सुंदर सुभट जैसें कायर भार न गा
ल राजा भोज सम कहां गांगो तेली
कहीये ॥३॥ संसार के सुषनि सों आस
क्त अनेक विधि इंद्रिहू लोलप भ
कवहू न गत्यो है ॥ कहत हैं ये सें मैं तो
पेक ब्रह्म जानत हों ताही तें छोडि
वैं सुभ कर्मन कों रह्यो है ॥ ब्रह्म की
न प्रापति पुनि कर्म सब छूट गये दो
उनतें भ्रम होई अधविचव ह्यो
है ॥ सुंदर कहत ताही सांगी पैं स्वप
च जैसें पाहि भांति ग्रथ में वशिष्ठ जी
हू कह्यो है ॥ ४ ॥ ज्ञानी की सी वात न कहै
मन तो मलिन रहे वासना अनेक भ
री निकु न निवारी है ॥ जैसें कोउ आभू
षन अधिक वनाय राष्यो कलई उ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परकर भीतर भंगारि हैं ज्योंही मन आवे त्योंही षेलत निसंक होई ज्ञान सुनि सीषली ये ग्रंथनि विचारी हैं सुंदर कहत वाके अटकन कोउ आही जोई वा सो मिलि जाई ताही कों बिगारी हैं ५ हंस स्वेत बक स्वेत देषीये समान दोउ हंस मोति चुगे बक मछरी को षात हैं पिक अरु काक कहो उ कैसे करि जांनै जाई पिक अंब डारि काक करहि जात हैं सिद्धो अरु फटिक पषान सम देषीयत वह तो कपोर वही जल मैं समान हैं सुंदर कहत ज्ञानी वाहिर भीतर सुध ताकी पटंतर और वान निकी वान हैं ६

॥इति विप्रीत ज्ञान को अंग समाप्तः॥ अंग १३॥ अथ पवचन विवेक को अंग प्रारंभः॥ छंद मनहर॥ जाके घर ताजी तुरकिन को नवेलो बांध्यो ताके आगे फेरी फेरी टटुवा दिषाईये॥ जाके षासा मलमल सिरसाफ के ठेर परे ताके आगे आनी करि चौसई र षाईये॥ जाके पंचामृत षान षान सब दिनहीं ते सुंदर कहत ताही रावरी षवाईये॥ चतुर प्रवीन आगे मूरष उचार करे सूर्ज के आगे जैसे ज्ञान दिषाईये॥१॥ एक कामी रूप वंत भूषन वसन अंग अधिक विराजमान कहीयत ऐसी है जैसे एक

वाणीफाटेटूटेअंबरउठायेआंनी
ताहूमाहीविपरीतस्त्रीयतजे
सीहैं ।। अेकवारांगनाकसीवहूत
सिंगारकीयेलोकनीकोंनीकील
गेसंतनिकोंभेसीहैं ।। सुंदरकहतवां
णीत्रिविधजगतमांहीजांनेवो
भेसीहैं ।। सुंदरकहतवांणीत्रिविध
जगतमांहीजांनेकोईचतुरप्रवी
नजाकीजेसीहै ।। राजाकोकुंअर
जोस्वरूपकेकुरूपहोईताकोंतो
सिलामकरिगोदलेषिलाईये ।।
औरकोउरैतकोस्वरूपहोईसोभ
नीकताहूकोंतोदेषिकरिनिकट
वुलाईये ।। काहूकोकुरूपकारोकू
वरोहैअंगहीनवाकोघेरदेषीदे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सीमा थोई हला ई ये ॥ सुंदर कहत न वा
के वा पही कों प्यारो हे ई यों ही जा मी
वा नी कों वि वे क पे से पा ई ये ॥ ३ ॥ वो
ली पे तो न व ज व वो ल वे की सुद्ध हो
ई न तो मु : ष मो न क रि चु प हो ई र
ही ये ॥ जो री ये तो त व ज व जो रवो उ
जा नी परै त क छ हू अ र थ अ नु प
जा मे ल ही यें गा ई यें तो न व ज वा
ई वे को कं ठ हो ई ॥ श्र व न के सु न त
ही म न जा ई गा ही पे ॥ न क मं ग छं द मे
ग अ र थ मि लै न क छू सुंदर कहत
ये सी वा नी न ही क ही ये ॥ ४ ॥ ये क न के
व च न सुनै न अ ति सु ष हो ई फू ल सा
र त है अ धि क म न भा व ने ये क नि
के व च न तो अ स मा नो व र ष त अ

वनकैसुनतलगतअलषावनें॥
देककिनिकैवचनकटुककहिविष्र
रूपकरतमरमछेदैदुःषउपजा
वनें॥सुंदरकहतघटघटमैंवच
नभेदउत्तममध्यमअरुअधम
सुहावनें॥५॥काकअरुरासभउ
अलुकजबबोलतहैंतिनकेतोव
चनसुहातकहीकौंनकौं॥कोकि
लारुसारीपुनसूवाजबबोलत
हैंसबकोउकानदैसुनतरवरौंन
कौं॥ताहीतैंसुवचनविवेककरी
वोलीयतयोंहीआकबाकबकि
तोरीयैंन[पौन]कौं॥सुंदरसमझऐसेंव
चनउचारकरौनहींतौसमुझि

कीवैठोग्रहिमौनकोंई॥ प्रथमहीयें
विचारठीमसोनदीजेंडारन्ताहीतेंसु
वचनसंभारिकरिवोलिये॥ जांनेन
कुहेनहेतभावतेसीकहीदेनक
हीयेंसुतवजवमनमांहीनोलीयें
सवहीकोंलागेदुःषकोउनहीप
वेंसुषवोलिकेवृथाहीतातेंछानी
नहीवोलीये॥ सुंदरसमझकारिक
हीयेसरसवाननवहीतोवचन
कपाटगहीषोलीये॥ ७ वचनतोउ
हेजामेंपाईयेंविवेकहेंऔरतोव
चनयेसेंवोलनहेंपसुजेसेंतिन
केतोवोलवेमेठंगहूंन॥ येकहेकी
उरानिदिवसवकनहीरहतये

सें। जेसिविधिकूपमेंवकतमानोंमे
कहेंविविधप्रकारकरिबोलतजग
तसवघटघटप्रतिमुःषवचनअ
नेकहे।सुंदरकहततातेंवचनवि
चारलेहूवचननोवहेजांमेपाईये
विवेकहें। वचनमेंवचनविवे
ककरिलीजिये।जेसेंहंसनीरको
सजनहेअसारजांनीसारजांनीषी
रकोंनिरालोकरिपीजीयें।जे
सेंदधिमथनम थनकाढिले
नघ्रतओररहीपहीसवछांछछां
डीदीजीयें।जेसेंमधुमखीकासुग
मकोभ्रमरलेननेंसेंहीपकरिकि
तांतेवचनअनेकभांतिवचनमेंफ

विवेककरिलीजीयें॥ ९॥ प्रथमहीगु
रुदेवमुःषतेंउचारकरीवेंईतो
वचनआयलगेनिजहीयेंहें॥
तिनकोविवेकरिअंतःकरनमा
हीअतिहीअमोलनगभिन्नभि
न्नकीयेहें॥ आपकोदरिद्रगयोप
रउपकारहेननगहीनिगलिकें
उगलिनगकीयेहें॥ सुंदरकहत
प्रहवांरागीयोंप्रगटभईओरको
ईसचकरिंकजीवजीयेंहें॥ १०
वचनतेंदूरमिलेवचनविरोधहो
ईवचनतेंरागद्वेषवचनतेंदोषजे
वचनतेंज्वालउठेवचनसीतल
होईवचननतेंमरीतवचनहीतें
दोषजेवचननतेंप्यारोलगेवचन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तेंमोषज्ञ। सुंदरकहततयहवचन
कोभेदयेसोवचनतेंबंधहोतव
चनतेंमोषज्ञ।११। वचननेंगुरु
शिषवापपूतप्यारोहोईवचनते
वहुविधहोतउतपातहैंवचन
तेंनारीअरुपुरषसनेहअतिव
चननेंहोउआपआपमेरिसात
हैं। वचनतेंसवआईराजाकेहजू
रहोईवचनतेंचाकरउछोडिकेप
लानहैं। सुंदरसुवचनसुनतअ
तिसुषहोईकुवचनसुनतजही
प्रीतिघटिजानहैं।१२।वचनविवे
ककीयेंवचनमेंभेदहैयेकजोव
चनसुनकर्महीमेंवहीजापक
र्तवहूतविधिसवगकीउमेंरहते।

सुं०
५६

एक है वचन २८ ईस्वर उपासना
के तिन में तो सकल ही वासनां को
छेदु है ऐसे ही वचन ता में [illegible]
[illegible] नें ऐक ही अषंड ब्रह्म सु
दरकहत यों वना वे अंत वेद है ॥
वचन तो अनेक प्रकार सब देषीय
त वचन विवेक कीये वचन में भेद
है १४ वचन तें जोग करें वचन तें
जज्ञ करें वचन तें तप करि देह को
दहतु है वचन तें बंधन करत है अ
नेक विधि वचन तें साग करि वन
में रहतु है वचन तें उरझें वचन हू
तें वचन तें भांति भांति संकट स
हतु है वचन तें जीव भयो वचन
तें सीव होई सुंदर वचन भेद वेद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

योंकहत हैं १८॥ इति वचनविवेककोअंगसमाप्तः अंग १८॥ अथ निर्गुणउपासनाको अंग प्रारंभः॥ छंद इंद्रवजय॥ ब्रह्माकुलालरचेप्रहमांजनकर्मनिकेवसमोहनभावे॥ विस्नहीसंकटआपसहेंभ्रमकहूकोरसककाहूसंतावे॥ संकरभूतपिसाचनिकेपतिपानीकपाललीयेंविललावे॥ याहीतेंसुंदरत्रिगुनत्यागसुनिर्मलएकनिरंजनध्यावे॥ १॥ कोटिकवातवनायकहेंकहाहोतभयासवहीमनरंजन॥ शास्त्रसमृतिरुवेदपुरानवषानतहैंअतिलायकेअंजन॥ पानीमेंवूडतपानीगहेंकतपारपहूंचतहेंमतिभंजन॥ सुंदरताहांलगअंधेकीजेवरि

उ०
१८

जोलोनधाईयेप्रेकोनिरंजन॥अ
मंजनसोजोमनोमलमंजनस
ज्ञनसोजोकहेंगतिगूहैं॥गंजनसो
जोइंद्रिगहेगंजनरंजनसोवजा
वेंअवूहैं॥भांजनसोजोभस्योरस
मांहीविदूजनसोकिनहूनअह
हैं॥मंजनसोजुवढेहचमुंदरामंज
नसोजुनिरंजनसूहैं॥२॥जोप्रभुतेंव
नपतिभईयहसोप्रभुहेंउरइप
हमारे॥जोप्रभुहेंसवकेसिरऊप
रनाप्रभुकोसिरहीहमधारें॥रूप
नोषअलेषअखंडितभिंनरहेंस
वकाजसारें॥नामनिरंजनहेंति
नकेपुनसुंदरनाप्रभुकीवलहा
रें॥३॥जोउपजेविनसगुनधारत
सोपहजानहूंअंजनमायाश्री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ववजापमरेनहीजीवतअउ
तयेकनिरंजनराया।।सोपवत्र
हमदांसिरउपरसुंदरनाप्रभ
सोंमनलाया।।पा।।जोउपज्योक
छुआईजहांलगसोसवनास
निरंतरहोई।।रूपधरसोतुरहेंन
हीनिश्चलगसोसवनासनि
रंतरहोई।।रूपधरयोसुरहेंनही
निश्चलतीनहीलोकगरोक
हाकोई।।राजसतामससालि
कजेगुनदेषतकालग्रसेपुनवो
ई।।राजसतामससालिकजेगु
नदेषतकालग्रसेपुनवोई।।आ
पहीयेकरहेंजनिरंजनसुंदरके
मनमाननसोई।।ई।।देवनिकेसि
रदेवविराजितईसरकेसिरई

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सं० ५८

स्वरकहीयें ॥ लालनिकेसिरला
लनिरंतरषूवनिकेसिरषवल
हीयें पाकनिकेसिरपाकसिरो
मनिदेषविचारउहेदृढगहीयें
सुरएकसदासिरऊपरआरेक
छूहमकोंनहीचहीयें ॥ ७ ॥ मेसम
हेसगनेसजहालगविसवि
रंचिहूकेसिरस्वामी ॥ व्यापक
ब्रह्मअषंडअनावृतवाहिरभीं
तरअंतरजामी ॥ वोरनछोरअ
नंतकहेगनपाहीनेसुंदरहेंघ
ननामी ऐसोप्रभुजिनकेसिर
ऊपरक्योंपरिहेंतिनकोंकहींषा
मी ॥ ८ ॥ इतिनिर्गुणउपासनाको
अंगसमाप्तः ॥ अंग १५ ॥ अथपति
व्रताकोअंगप्रारंभः ॥ छंदइंद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनकी ओर निहारत हि जैसें
जात पतिव्रत एक वृत्ति को ॥ होत
अनादर ऐसी ही भांति उपी
छे फिरे पुन सूरसति को ॥ केन
ही मेंहरखो होई जात षिसे आध
विच जो जोग जती को ॥ रामकृ
ष्ण तें गऐं जन सुंदर ऐकर ति वि
न पारह्रती को ॥ १ ॥ जोहरी को न ज्ञि
आन उपासत सो मतिमंद फजी
त ही होई ज्यों अपने भरता रहि
छांड भई विभचारनि का मनी
कोई ॥ सुंदर ताहि न आदर मान
फिरे विमषी अपनी पत षोई ॥
बूडि मरें किन कूप मझार कहा ज
ग जीवत है सठ सोई ॥ २ ॥ होई अ
नन्य भजे भगवंत ही आर क

१० ॥ छूउ रमें नहीं राषै ॥ देवी रहे व
जहां लग हैं डर के तिनसों कहीं दे
९ ॥ न न भाषे ॥ जोग हू जग्य अनादि कि
या तिनकों तो नहीं स्वप नें अभि
लाषे ॥ सुंदर अमृत पान कियो त
व तो कहीं कों न हला हल चाषै
३ ॥ पेव सही सव ही सव के उरं
न रता प्रभु कों कहीं न गावे ॥ संक
ट मांही सहाय करे छिन सो अप
नें पति क्यों विसरावे ॥ चार प दा
र्थ और जहां लग आठ हू सिध न
वे निध पावे ॥ सुंदर छार परी ति
न के मुःष जो धाम निरंजन रामसि
रजनहारो ॥ सेवक होई रह्यो स
व को निन की टहि कुंजर देत अ
हारो ॥ भंजन दुःख दरिद्र निवा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ऐसे हे मधु न जि आनउ पासन सुंदर हे जिन को मुःषकारो १

रनचिंतकरैप्रनसाजसवारौ ॥ भ
रं दृमनहर ॥ पतिहीसौंप्रेमहो
इ पतिहीसौंनेमहोई पतीहीसौं
षेमहोई पतीहीसौंरतहे ॥ पतिही
हैं जज्ञजोगपतिहीहैंरसभोग
पतिहीसौंमिटैंसोगपतिहीको
जतहे ॥ पतिहीहैंज्ञानध्यानपती
हीहैंपुन्यदानपतिंविनगतिना
हींसुंदरसकलविधियेकपति
व्रतहे ॥ जलकोसनेहीमीनवि
छुरततजेप्रानमनीविनुअही
जैसेंजीवतनलहींपें ॥ स्वांतवि
ड्केसनेहीप्रगटजगतमाहीं
येकसीपट्टसरोसुचानउकही
पें ॥ रविकोसनेहीएनीकमल

हीहै…

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सरोवरमें ससीको सनेही ज
चकोर जैसें रहीये ॥ तैसें ही सु
हृदयेक प्रभुसों सनेह जो रखि
यें कबू दे षी काहू वोर नहीं वही
ये ॥ ८ ॥ इति पतिव्रताको अंग
समाप्तः ॥ अंग ॥ ६ ॥ अथ बिर
हबरा हनेकौ अंग प्रारंभः ॥ छंद
मनहर ॥ पीयको अंदेसो भारी
तोसौं कहो सुन प्यारी यारी तो
री गये सो तो अजहू न आये हें ॥ मे
रे तो जीवनप्रान निस दिन उहे
ध्यान मःषसो नकहो आने
न ऊरलाये हें ॥ जवतें गये विछो
ह कल न परत मोही नाते हूं पूछ
न तो ही कि न वरमाय हें ॥ सुंदर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विरहनीकोसोचसषीवारला रहमकोंविसारअबकोंनके कहायेहैं॥ हमकोंतोरैंनदि नसंकमनमाहीरहेउनकीतो वातनिमेंठिकहूनपाईयें।कब हूंरैससुनीअधिकउछाह होईकवहूकरोईरोईआंसुनी वहाइयें।औरनिकेरसवसहो ईहैप्यारेलालआवनिकीक हीकहीहमकोंसुनाईयें।संद रवहन्ननाहीकाटीयेंसुकोंन भांतिजोईनरुआपनेंसुहाथ तेंलगाईयें॥२॥मोसोंकहेऔर सीहीवासुंकहेंऔरसीहीजा तोंकहेंनाहीकेप्रतीनकेसहो नहें॥काहूसेंसमासकरेंकाहू

सुं०॥
६१॥

सोउदासपिरहेंकाहूसोंतोरसव
सपेकमेकपोतहैं॥ रंगावाजी
द्वघातोमनकीनदूरहोईकाहू
केअंधेरेघरकाहूकेउद्योतनहीं॥
सुंदरकहतजाकेपीरसोकरैए
कारजाकेदुःषदूरगयोताको
मईवोनहें॥३॥हीयेअरजीयेअ
रलीयेअरदीयेअरकीयेअर
कोनसुअनपपाटीपढेहें॥मुष
अरवेनअरनेनअरतेनअ
रमनअरकायासवजंत्रमाहीं
करेहें॥हाथअरसीसहूअवन
अरनषसिषरोमकलईसी
मढेहें॥ऐसीतोकठोरतानमुनी
नहीहेषीजगसुंदरकहतकोई
वज्रहीकेघढेहें॥४॥इतिविरह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नैकोअंगसमाप्तः ॥ अंग ११ ॥ ७० ॥ अ
थ शब्दसारकोअंगआरंभः ॥ छंद
मनहर ॥ भूल्यौ फिरै भर्मतें कहत
कछू औरऔर करत न ताप दूरि क
रतसंतापकौं ॥ दक्ष भयो रहै पुनी
दक्ष प्रजापति जैसें देत पर दक्ष
णान दिशा देत आपकौं ॥ सुंदर क
हत येसें जामें न जुगति कछु औ
रजाप फल पैन जपत निज जापकौं
वाल भयो ज्वान भयो वय वीतैं वृ
धभयो वपुरूप होई के विसरी ॥
योआपकौ ॥ १ छंद इंद्रवज्र ॥
पांनव है जु पीयूष पीवे नित दान
व है जु दलिद्र कौं भांनैं ॥ कान उहैसु
नी पै जसकै सव मान उहै करी
येंसनमानैं ॥ तांन उहैसु नैंनेंन री

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कारनजानेउहेजगदीसहीजाने
वानउहेंमनवेधनसुंदरज्ञानउ
हेंउपजेनअज्ञानें ॥ ३ ॥ सूरउहेंम
नकोंनवसरापतकूरउहेमन
माहीनलजेहें लागउहेंअनुरा
गनहीकहूंभागवहेमनमोह
नजेहें ॥ तज्ञवहेंनिजनलहीजा
ननजज्ञउहेजगदीसजजेहें
रक्तउहेंहरिसोंरतसुंदरभक्तउ
हेंभगवंतभजेहें ॥ ४ ॥ चापउहेंक
सियेंरिपुऊपरदापउहेरलंका
रहीमारें ॥ छापउहेंहरिआपदई
शिरथापउहेथपिओरनथारें
जापउहेंजपीयेंअजपानितव्या
पउहेंनिजव्यापविचारें ॥ वापउ
हेंसबकेंमभसुंदरपापहरेंआ

तापनिवारें ॥ ७ ॥ मौनउहेमयना
हींनजामहीगोंनउहेफिरहोई
नगोंना वेनउहेविसरेविषया
रसरोंनउहेंसवग्रोरग्रलोंना॥
मोंनउहेगुरुसंतमिलेजवसुं
दरशंकरहेंनहींकोंना॥ प ॥ कार
उहेंअविकाररहेंनिरसारउहे
जेंअनीतनभाषें ॥ तेंतउहेलगीअ
तनटूटतसंतउहेंअपनोंसतरा
षें॥ नाद उहेंधुनिवाहतजेसवस्वा
दउहेंरसमुंदरचाषें॥ ई ॥ स्वासउहें
जुउस्वासनछांडतनासउहेफि
रिहोईनवासा पासउहेसतपा
सलगेजमपासकटेप्रभकेनिम
पासा॥ वासउहेग्रहवासनजेवन
वासनहीमिहीठेहरवासा॥ दास

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उहै ग्रु उ राम रहै हरि राम सदा क
१० हीसुंदर दास ॥ ९ ॥ श्रोत्रु उहै श्रुतिसा
२ ॥ रसु नैनि निर[illegible] मैन उहैं निज रूप नि
हारैं ॥ नाक उहै हरि नाक हि राख
त जीभ उहै जग दीस उचारें ॥ हा
थ उहै करियै हरि कौ अरु पाव उ
है प्रभु के पंथ धारैं ॥ सीस उहै करि
स्याम समर्पन सुंदर यौं सब का
ज सारैं ॥ १० ॥ सो व्रत सो व्रत सोई
गयौ सठ रो व्रत रो व्रत केवे रो
यौ ॥ गो व्रत गो व्रत गो इंध सो ध
षो व्रत षो व्रत तें सब षोयौ ॥ जो
व्रत जो व्रत वीत गये दिन वो व्रत
वो व्रत तैं विष वो पयौ ॥ सुंदर सुंदर
राम भज्यौ न हि ठो व्रत ठो व्रत वो
रही ठो यौ ॥ ११ ॥ देषत देषत देषत आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रगबूझतबूझतबूझतआयो।बूझत
सूझतसूझपरीसबगावंतनगावे
गोविंदगायो॥सोधनसोधनसुंद
भयोपुनीताबनतनावतकेंचननां
यो॥जागतजागतजगपसोजबसुं
दरसुंदरपायो॥१०॥इतिशब्दसार
कोअंगसमाप्तः॥अंग १८॥अथभ
क्तिज्ञानमिश्रितकोअंगप्रारंभः॥
छंदइंदवजय॥बैठतरामहिऊठत
रामहीबोलतरामैंरह्योहै।जीमत
रामहीपीवतरामहीधांमहीराम
हीरामगयोहै।जागतरामहीसोव
तरामहीजोवतरामहीरामलह्यो
है।देतहूंरामहीलेतहूरामहीसुंद
ररामहीरामरह्योहै॥१॥श्रोत्रहूंराम
हीनेत्रहूरामहीबक्त्रहूरामहीराम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हीगाजे । सीसहूरामहीहाथ्यहूरा
महीपावनहूरामहीरामहीछोजे
पेटहूरामहीपीठहूरामहीरोम
हूरामहीरामहीवाजे । अंतराम
हीनिरंतरामहीसुंदूरामहीरा
मविराजे ॥ २ भोमीहूरामहीआप
हूरामहीतेजहूरामहीवापूहीरा
मे । व्योमहूरामहीचंदहूरामहीसू
रहूरामहीसीनहीघामे । आदीहू
रामहीअंतहूरामहीमध्यहीरामे
हीपषिनवामे । आजहूरामहीकाल
हूरामहीसुंदरामहीरामहीयामे
३ हेषहूरामअदेषहूरामहीलेष
हूरामअलेषहूरामे । येकहूराम
अनेकहूरामहीशेषहूरामअसे
षहूनामे । मोनहूरामअमोनहूरा

४

महीगोनहूरामहीठामकुठामें
वाहीरामहीभीतरामहीसु
दरामहीहैंजगजामें॥४॥दूरहू
रामनिजीकहूरामहिदेसहू
रामप्रदेसहूरामें॥पूरबरामही
पछिमरामहीदछनरामहीउ
तरधामें॥आगेहूरामहीपीछे
हूरामहीव्यापकरामहीहैंबन
ग्रामें॥सुदरराम दसोदिसपूर
नस्वर्गहूरामपतालहूतामें।
५॥आपहूरामउपावतरामही
भंजनरामसंवारनवामें॥द्रष्ट
हूरामअदृष्टहूरामहीइष्टहु
रामकौंसवकामें॥वर्णहूराम
अवर्णहूरामहीरक्तनपीतन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्वेतनस्यामें।सुंमहूरामअरूंसु
म्हहूराममहीसुंहरराममहीनाम
अनामें ६॥इति भक्तिज्ञानमिश्रि
तकोअंगसमाप्तः॥अंग १९॥
अथविप्रजेसद्वकोअंगप्रारंभ
१९॥ छंदसवैया॥ श्रवनदेषेसु
नेपुनिनेनहजिभांसूंघेनासि
कावोलेगद्राषाईइंद्रिजलपी
वैकिनहिहायसुमेरहितोले॥
उचेपावमांडीनीचेकुंतिनलोक
मेंविचरतडोले।सुंदरदासक
हेसुनज्ञानीभलीभांतियाअ
र्थहिषोले।१।अंधातिनलोकहूं
देषेवेरासुनेवहूतविधिनाद
नकटावासकमलकीलेवेग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

माकरेवहूतसंकादइ। ठापकरि
उठावेपरवतपंगलकरेनिरमै
अहलादजोकोउमाकोअर्थ
विचारेसुंदरसोईपावेस्वाद॥
२॥कुंजरकोंकीरीगलवेठीसिं
घहिषायअघानोस्यालमछ
रिअग्निमांहिसूषपायोजल
मेवोहोतिहोतिवेहाल। पंगच
ठेपरवतकेउपरीमरतकही
हेषिडरांनोकाल। जाकोअनभ
वहोयसुजांनेसुंदरयेसाउल
टाष्याल॥३॥वंदमाहेसमुद्रस
मानोराईमांहीसमानोमेर॥
पानीमांहीतुंवकाडुवीपाहन
नरतनलागीवेर। तिनलोकमें

भयानमासासूर्येकियोसकल
सुं० अंधेरअरषहोयसोअर्थहिपावै
६६ सुंदरकहेमवदमेफेर॥४॥म
छरिवगलाकुंगहिपायोमुसे
षायोकारोसांप॥सुपेपकरिव
लाईषाईताकेमवेगयोसंताप
वेठिअपनीमईपाबाईवेटेअप
नोषायोवाप॥सुंदरकहेमुनोहो
संतोनिनकोकोउनलागपोपा
पापहेवमांहिनेदेवलप्रगट्यो
देवलमांहिप्रगट्योहेवसिष्य
रूउपदेसनलागपोराजाकरेरंक
कीसेव॥वंध्यापुत्रपंगुइकजायो
ताकोघरषोवनकीटेवसुंदरके
हेतसोपंडितनपामाजेकोउपाकी

जाको जांने में वर्षे ॥ कमल मांहि
नैपांनी उपज्यो पानि मांहि तैं नी
पज्यो सूर ॥ सूर मांहि तैं पांनी उ
पज्यौ पांनी उपज्यौ पानि मांहि
तैं नीपज्यौ सूर ॥ सूर मांहि सित
लाना उपजी सीतलता मैं सुष
भरपूर ॥ जासरूप कौ सरूप होई नक
हुं सपैक रसे निकट न दूर ॥
सुंदर कहत सत्य अेह पौंहीया
में तिन जानहू कूर ॥ ७ ॥ हंस चढो
ब्रह्मा के ऊपर गरुड चढ्यो पुनि
हरि की पीठ ॥ बैल चढ्यो है सिव के
ऊपर सो हम दिठो अपनी दीठ ॥
देव चढे पाति के ऊपर रिषि चढे
डापन किर पीठ ॥ सुंदर पै कआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुं० ॥
८७ ॥

चंभाइ वा पानी माहि जरे अगीठा
र॥ कपरा धोमनि कुंगहि धोवे
मांहि वपरि घठे कुंभार ॥ सइवि
चारि दरंजी ही सीवे सोनाता वेच
कार सोनार ॥ लकरि वढ हि कुगहि
छीले घोल सु वेठि धमेलु हार॥
सुंदर दास कहे सुं नहानी जे को
ई याको करे विचार ॥ ई जा घरमें
हि वहूत सुष पायो ना घरमांहि
वसे अवकोंन॥ लागि सवे मीठा
ई षारी मीठो लागो पेक वहे लूंना
परवत उडे हई थिर वेठि येसो को
इक वाजो पोंन ॥ सुंदर कहे न माने
कोई ताने पकरि रही ये मोन॥१०
रजनी माहि दे षी हमरा न ॥ तैल

दिवस महमले षो दे व समाहि १

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भल्योसंपुरनतामेंदिपकजरेज
रेनदिवानपुरुषपेकपानिमांहि
प्रगटोताजुगराकीकेसिजानन॥
सुंदरकोउलहेअर्थयाकोजो
निसकरेपरेजुजान॥ १७३ नयो
मेघवाढौचहुंदिससैंवासन
लग्योअषंडितधार॥ वुड्योमेर
नदिसवसूकिउरलाग्योनिरीद
नयेकसार॥ कांसोपरयोविज
लीऊपरकियोसकलकुटंव
संहार॥ सुंदरअर्थअनोपमायां
कोपंडितहोयसोकरेविचार
१२ वाडिमाहेमालीनीपजोहा
लिमांहिनीपजोषेतहेमहीउ

नहिस्याम रंग नाग्यो भ्रमर ३
नहि करी हूं वो ध्येन ॥ ससिया उ
नहि राहु कों ग्रासो मुरजे उलट
करि ग्रासो केन ॥ सुंदर सूगराको
नजि भाग्यो नु गरा से ति वांध्यो है
न ९३ ॥ अंग नी मथन करि लक
रिकाठी सो वहल करी प्राव अ्रो
धार ॥ पुं नि मथी करि पिव नी
कासो घृत नषा यो वार म वार उ
ध दही की इछा भागी जा कूं म
थन सकल संसार ॥ सुंदर अ्रे
नो भये सूघरे ॥ चिंता रहित येक
लगार ॥ ९४ ॥ पत्र मांहि फोली गहि
ए षे जो गि भी सामांग न जाई जा

गेजगनसोवहीगोरष येसासबद
सुनावेआई। भीष्याकरेवहूनंके
रितांकोंसोवहीभीष्याचेलेपाईं
सुंदरजोगिजुगजुगजीवेताअ
वधूतकीदूखलाई ॥७५॥ परधन
हरेपरनिंदापरधीकोंरापेघरमां
ही। मांसषायमदिरापुनीपीवेना
ही भक्तिकोंसंसेनाही। अऋमग
हेकर्मसबत्यागेनाकिसंगानपा
पनसांई। येसीकरेसोसंतनकहा
वेसुंदरऔरउपजिमरिजांही ॥
७६॥ निरदईहोईतरेपसूघातिक
रपावेनवडेभवमाही। लोभील
गेसबवनकूष्यारोनरलोभीकोंठा

हरनाहीं ॥ मिथ्यावादिमिलेग्रस
कूंसत्यकहेतेजमपुरजाहीं ॥ सु
दरधुपमांहिसीतलनाजरतर
हेसोवेठेछांई ॥ ९७ ॥ बैठईचरषाम
लोसंवाहोपफीरनेलागपोनिकि
मात ॥ वहुसासुकोंकहिसमजा
वेनमेरेठिगवेठिकात ॥ ताकोंता
रनटूटेकबहुपुनिघटेनहिंदी
नरान ॥ सुंदरविधिसुंबनेहूला
हाषासानिपजेउचिजात ॥ ९८ ॥
घरघरफिरेकुवारिकन्याजनेजं
त्रकरतीसंग ॥ वेस्यासोनोभईपति
व्रताएकपुरुषकेलागिअंग ॥ व
लजूगमाहेसतजुगथाप्योपापि

उद्देश्रमकोभंग॥सुंदरकहत न

रथसोपावेंजोनीकेकरिनजे

अनंग॥१०॥विप्रसोईकरनेला

गोचोकाभीतरवेठोआईलक

रीमांहिचुलादियोरोटीऊपर

नवाचढाई॥षिचरीमांहिहंडि

यारांधिसालनआकेघंनराषा

ई॥सुंदरजिमितअतिसूषपायो

अवकेभोजनकीयोअघाई॥

२०॥वेलउलटिनाईककूंलासो

वस्तमांहिभरिगनअपार॥भांति

भांतिकोसोदाकीयोआईदिसां

तेयासंसार॥नायकनीएनिहार

षनटोलेमोहिमीलेपोनीकोभ

रयार॥पुंजीजायसाहकोसौं

सुं०॥
१०॥

पीमुंदरसीरनैंडासेमार॥२१॥
निमाभैकवनमंकूं आयोपरोत
वराभारिमेंढी॥भलीवस्तुकछू
लीनीदिनीघेंचोमाठरि.पावांधी
मैठी॥सोदाकीयोचलिपुनीघ
रकुंलेषाकीयोवारिनरवैठो॥
सुंदरसाहथुसीअतिहूवावेल
गयोपुंजीमेपैठी॥२२॥पहराई
नघरमसोसाहकोरषाकरने
लग्योचोर॥कोनरालकाठोक
रिवांध्योसूफेनहिसांगअरुभो
र॥राजागांमछोडकेभागपोहुवो
सकलजगतमासोर॥परजासू
षिभईनगरिमेंसुंदरकोईजूल
मनजोर॥२३॥राजाफिरेवीपत

को मालो घर घर टुक डा मांगे भी
ष ।। पार पिया हे नीस दिन डोले
घोरा चालिस के न धीष ।। आकञ
रंड किलकरि त्रुपेषांडे वहुनर
समरेई ष ।। सुंदरको उजगतमेवि
रलोया मूरषको लारैसीष ।। २४
पानीजरे पोकारे निसदिन नाको
आगनि वुझावे आई ।। हुंसीतलतंत
पतभयाकों वारवार कहेसमझा
ई ।। मेरि लपटतो हि जोलागे ताते
मीसीतलहोयजाई ।। वहुजर
नि फेरि नहि उपजे सुंदर सुषमे
रहेसमाई ।। २५ ।। षसमपरलोजो
रूके पीछे कसोनमानें भूडिरां
ड ।। जिनतीनफेरे भटकतीयो

सुं० ॥
१५१ ॥

ही नैनो कियो जगत मैं भांड ॥ जो
हू भूपन भागी नै रीतं गील वै
ठिसारि मांड ॥ सुंदर कहै सीष
सून मोरी अवतुं घर घर फिरवो
छांड ॥ २६ ॥ पंषी माहि पंथ चलि
आयो सो वह पंथ लिष्यो नहि
जाई ॥ वाहि पंथ चल्यो उ पंथी नि
रमे है सपहूंच्यो आई ॥ ताहां दूका
ल परै नहि कवहू सदा सूरभष
रहो छ्वाई ॥ सुंदर हू षिन को उ
दिसे असपसूष मे रहै समाई ॥
२७ ॥ अेक अहेरि वन मैं ओपे षे
लन लाग्यो भलि सिकार ॥ कसे
धनुक कमर मे नरकस सावज
घेरि बारंबार ॥ मार हो सि षव मात्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पुनीमासोंमारिवहुरमृगागनकी
डार॥यैसेसकलमारिषरूका
योसुंदरराजहिकीयोजूहारा।
२१॥सुककेवचनअमृतमईये
सेकोकिलाधाररहैमनमांही
सारोसुनेभागवतकवहूसार
सतोउपजावैनांही॥हंसचुगे
मुगताफलअरथहीसुंदरमा
नसरोवरनांही॥काककविस
रनिषैजेतेतेसवहोरकरैक
हिजाई॥२२॥नषहोईद्विजभ्रष्ट
क्रियाकरिकष्टकियेनहिपा
वैठे॥महिमासकलगईति
नकेरीरहतसवनसीरमोरा।
जिनतीनतफिरैनहिकछूआद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

२ तिन कौं कोउ न घाले क्यौरा॥
सुंदरदास कहे समझावे ऐसी
कोउ करो मति औरा ३०॥ सास्त्र
वेद पुरान पढे कौं न पुनी व्याकर्ण
पढे जे कोई॥ संध्या करे गहे षट्क
र्म हीं गुन अरु काल विचारे सोई॥
सीरा का मत वेवनि आवे मन मे
सब न जिराषे होई॥ सुंदरदास
कहे सुन पंडित राम नाम बि
ना राम बिना मुक्ति न होई ३१॥ इ
ति विप्र जे सबद को अंग समाप्त
अंग २०॥ ॥ अथ सुरातन को
अंग प्रारंभः॥ छंद मनहर॥
सोई सूरवीर रुपी रहे जाई रि
न में सुनत नगारे चोट विक

सेकमलमुःपत्रधिकउछा
हपूत्तौमाईहूनतनमें॥फेरेज
वसांगनवकोईनहीधीरधरे
कायरकंपाईमानहोतरेषीम
नमें॥टूटकेपत्तंगजेसेंपरतपा
वकमाहीयेसेंटूटपरेंवहूसांव
तकेघनमें॥मारीघमसांयेकरी
सुंदरजहारेस्यांमसोईसरवीर
रूपरहेजाईरीनमें॥१॥हाथमेंग
हेषगमारवेकोंयेकपगनतम
नआपनोंसमर्पनकीनोहे॥आ
गेंकरमीचकोंपरलोडाकिरन
वीचटूकटूकहोईकेमगाईदल
हीनोहे॥षाईलोनस्यामकोंहराम
षोरकेसेंहोईनामजाहजगनमें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुं०
१३

जीत्योपननीनोहे सुंदरकहे
नयेसोकोउयेकसूरवीरमो
कोंउतारकेसुजसजाईलीनो
हें ॥ २ ॥ घरमाहीसूरमाकहाव
नसकलहेंपावरोपिरहेंरिनमा
हीरजपूतकोउहयगजगाजत
जोरनजहांदलहें वाजतजुंगा
उसहनाईसिंधूरागपुनीसुन
नहीकायरकीछूटिजातकल
हें फलवातवरछीनतरछीतर
वारवहेंमारमारकरतपरतष
लभलहें येसेजुद्धमेंअडिग
सुंदरसुभटसोईघरमाहीसू
रमाकहावतसकलहें ॥ ३ ॥ सूर
माकेंदेषीयतसीसविनधरहें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

असनबसनबहूभूषनसक
लअंगसंपतिविविधभांति
भयोसबधरहे। अबनंगा
रोसुनीछिंनकमेंछांडिजात
येसेनहीजानेंकछूमेरेउहांम
रहे। मनमेंउछाहरनमाहीटू
कटूकहोईनिरभेनिसंकवा
केरचहूनडरहे। सुंदरकहतको
उदेहकोममत्वनाहीसूरमा
कोहेषीयतसीसविनधरहे॥
४। येसेसूरवीरधीरमीरजाय
मारिहेफूवेकोघावजाकेना
किनाकिकरेघावआगेधरिषा
वफिरपीछेनसंभारहे। हाथली
येहथीयारतीछनलगायेधार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वार नहीं लागै सु वपि सुनमहा
हे ॥ चोट नहीं राषे कछू लोट पोट
होई जाई चोट नहीं चूके सीस
पको उतारहे ॥ सुंदर कहत ताही
नेक हू न सोच सोई सूरवीर धीर
मीर जाय मारि है ॥५॥ सोई सूरवी
रधीर स्यांम के हजूर है अधिक अ
ज्ञान वाहू मन में उछाह कीयें री
रौ गज गाहमुः षवरषत नूर है ॥
काहे जव कराल काल सव ठौर
होई अति विकराल पुनि देषत क
रूर है ॥ नेक न उसास लेन फौज कुं
फिटाई देत षेत नहीं छांडे मारि कि
रे चकचूर है ॥ सुंदर कहत ताकी की
रति प्रसिद्ध होई सोई सूरवीर धी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रमामकेहजूरहे ॥ ऐसोसूरवी
रकोउकोटिनमेंयेकहेज्ञानकी
कवचअंगकाहुसोनहोईभंगरो
पसीसफलकत्तपरमविवेकहें।
तीनेत्ताजीअसावारलीयेसमसे
रसारआगेहीकोंपाउधरेभागने
कीटेकहे॥ छूटतबंदूकबांनमचे
जहांघमसांनहेंषीकेपिसनहल
मारतअनेकहे॥ सुंदरसकललो
कमाहीनाकोजेजेकारयेसोसू
रवीरकोउकोटिनमेंयेकहे॥ ८॥
साधुकोसंग्रामहेअधिकसूरवी
रनेंासूरवीररिपुकोनमेंनहेंषिचो
टकारेमारेतवताकीताकीनरवार
नीरसों॥ साधूआठेंजामबेठोम

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीसोजुद्धकरैजाकेमहमायो
१० नहीदेषीयेशरीरसों॥ सूरवीरभू
५ मीपरहूरहीनेरोपिलगेसाधूस
नीकोपकरिराषेघरधीरसों॥ सु
दरकहतजहांकाहूकोनपाउगे
केसाधूकोसंग्राममहूंअधिकसू
रवीरसों॥ ६॥ साधूसोनसूरवीर
कोउहमजांन्योहै॥ षंचकारडीके
मानज्ञानकोलगायोवांनमा
र्योमहाबलमैनजगजिंनराषो
है॥ ताकेअगवाणीपंचजोधाउ
१४ कतलकीयेऔररह्यौसबअरि
दलभांन्योहै॥ ऐसोकोउसुभट
गतमैनदेषीयतजाकेआगेका
लहूसोकंपिकेपरांन्योहै॥ ७॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रवाहततताकीसोभांतिहूंलोकमां
हीसाधूसौनसूरवीरकोईहमजां
नोहे ९ कांमसोप्रवलमहाजी
नेजिनतीनलोकसोतोयेकसाधू
केविचारय्यागेहारयोहे ॥ क्रोधसो
करालजाकेदेषतनधीरधरेसो
उसाधूछमाकेहथ्यारसोंविदारयो
हे ॥ लोभसोसुभटसाधूनोषसोंनि
रायदीयोमोहसोनपतिसाधूज्ञा
नसुंप्रहारयोहे ॥ सुंदरकहतयेसो
साधूकोईसूरवीरताकीताकीस
वहीपिसुनहलमारयोहे १ वेरी
सवमारिकेनचिंनहोयसूतोहे
मारेकामक्रोधसवलोभमोहपी
सडारेइंद्रिहुकतलकरिकीयोर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जपूतोहै मारयौमहामतमनमारे

अहंकारमीरमारेमरदमछरउपे

सोरनरूतोहै मारीआसात्रमा

पुनिपापनिसापनिद्रोउसवको

प्रहारकरिनिजपदपहूंतोहै सुंद

रकहतयेसोसाधूकोईसूरवीरवे

रीसवमारीकेनचिंनहोयसूतोहै

१० साधूसूरवीरवेईजगतमेंआ

येहेंकीयेजनमनहाथइंद्रिनको

सवसाथघेरीघेरीआपनेईनाथ

सोंलगायेहें औरउअनेकवेरीमा

रेसवजुद्धकरिकामक्रोधलोभमो

हषोदकेंवहायेहें कीपोहेसंग्राम

जिनदीयोहैभगाईदलयेसमहा

सुभटसुग्रंथनिमेंगायेहै सुंदर

कहतकबोरसूरयोंहिषपिगायेसा
धूसूरवीरवेईजगतमेंग्रायेहें ९२
येसेकोनसूरवीरसाधूकेसमान
हेंमहामतहाथीमनराष्योहे प
करिजिनग्रातिहीप्रचंडजामेंव
हूनगुमानहें कामक्रोधलोभमो
हवांधेचारोपावपनिछूटनेनपा
वेनेकप्रानपीलवानहें कवहूंजो
करेजोरसावधानसाहमोरसदा
येकहाथमेंग्रंकुसगुरुज्ञानहेंसुं
दरकहतत्र्योकाहूकेनवसहोईये
सेकोनसूरवीरसाधूकेसमान
हें ९३ ॥ इतिसूरातनकोग्रंगस
मापत: ॥ ग्रंग २१ ॥ ग्रथसाधूको
ग्रंगप्रारंभ: ॥ छंदइंद्रवजया ॥

साधूकोसंगसदाअतिनीको॥प्री
तिप्रचंडलगेपरब्रह्महीओरसवे
कछूलागतफीको सदृहदोमन
होईसुनिर्मलहैनप्रभावमिटेस
वजीको गोविदरूज्ञानअनंतच
लेजिहांसुंदरजेसेप्रवाहनदीको
ताहीतेंजानकरोनिसवासरसाधू
कोसंगसदाअतिनीको १ हेजग
मांहीवडोसतसंगाजोकोईमिले
उनसोनरहोतपवित्रलगेहरिरं
गा दोषकलंकसवेमिटिजाईसु
नीचहूजाईवैहोतउतंगा ज्योंजल
औरमलीनमहाअतिगंगमिलो
होईजातहेगंगा सुंदरसुद्धकरे
ततकालजुहेजगमाहीवडोस

नसंगा २ साधूकेसंगतेसाधूही
होईज्योंलट भ्रंगकरेअपनेसम
नासन्नभिन्नकहेनहीकोईज्योंदु
मग्रोरअनेकनिभांतिनचंदनकी
ढिंगचंदनहोई ज्योंजलछुद्रमिले
जवगंगहीहोईपवित्रउहेजलसो
ईसुंदरजातस्वभावमिटेसवसा
धूकेसंगततेसाधूहीहोइ ३ संतनि
कोजप्रभावहेयेसोजोकोउआव
नहेउनकेढिगवाहीसुनावतस
वसंदेसो नाहीकोनेसीहीओष
हीलावतजाहीकोंरोगहीजानत
जैसो कर्मकलंकहिकाटतहेंस
वसुंदकरेउनीकंचनतेसो सुंद
रवस्तुविचारनहेनितसंतनिको
जप्रभावहेयेसो ४ जोपरब्रह्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मिल्योकोउचाहततोनितसंतस
३० मागमकीजें ॥ अंतरमेदिनिरंतर
८ होयकेलेउनकोंअपनोमनदी
जे ॥ वेमुःषहूरउचारकरेंकछू
सोअनयाससुधारसपीजे ॥ सुं
दरप्रकासभयोजवओरआ
नसवेतमछीजें ॥ ५ ॥ जाद्दिनतेस
तसंगमिल्योनववाद्दिनतेभ्रम
भांजगयोहैओरउपायथकेस
वहीनवसंतनिअदूषज्ञानदयो
हे ॥ पोनप्रवालहीकोकरिछूव
नयेकअमोलकलाललयोहें।
कोनप्रकाररहेरजनितमसुंदर
सूरप्रकासभयोहें ॥ ६ ॥ संतसदा
सवकोहितवंछितजानतहेनर
वूडतकाठदेउपदेसमिटाईसवे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भ्रमलेकरिज्ञानजहाजहीवा
है।जेविषयासुषनाहींनछांड
तज्योंकपिमूठीगहेसठगाढें॥
सुंदरवेदुःषकोंसुःषमाननहा
टहीहाटविकारतत्र्याठे॥७॥सो
अनयामतरेभवसागरजोस
नसंगतमेंचलिआवे।ज्योंकाणि
हारनभेदकरेकछूआईचढेति
हीनावचढावे।ब्राह्मणक्षत्रियवै
स्यहसूद्रमलेछचंडालहीपार
लगावे॥सुंदरवारकछूनहीलाग
तपानरदेहअभेपदपावे॥८॥संत
निकीगतिक्योंकोउजांनेंज्योंही
मषाईपीवेअरुवोढहीतेसेहीपे
सवलोकवषानें।ज्योंजलमेंस
सिकेप्रतिबिंववहीआपसमाज

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लजंतुप्रमानें ज्यौं षग छांह ध
रा पर दीसत सुंदर पंषि रहे अस
मानें सो सठ देहनि के अत देषत
संतनि की गति क्यौं कोउ जानें २
जो कछु साधु करे सोई छाजें ज्यौं
षपरा कर ले घर डोलत मांगत भी
ष हीं लाजें जो दुःष सें जप टंवर भू
षन लावत चंदन तो अति राजें जो
कोउ आप कहें मुःष तें कछु जानत
नाहीं वयारही वाजें सुंदर संसप हू
र भयो सव जो कछु साधू करे सोई
छाजें १० येसव जानहु साधू के ल
छन कोउक निंदत कोउक वंदत
कोउक देत हैं आईके भछन कोउ
कह्यो आप लगावत चंदन कोउ कडा
रत धूरि ततछन कोउक हे यह
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मूरष दीसत कोउ कहे यह ग्रा
हि विचछन ॥ सुंदर काहू सो राग
न द्वेष न ये सब जान हू साधू के
लछन ॥ ११ ॥ तात मिले पुनि मात
मिले सुत भ्रात मिले जुवती सु
षदाई राज मिले गज वाज मिले
सब साज मिले मन वांछित पाई
यह लोक मिले सुरलोक मिले वि
धिलोक मिले वैकुंठ हू जाई ॥ सुं
दर ग्रोर मिले सब ही सुष संत स
मागम दुर्लभ भाई ॥ १२ ॥ छंद मन
हर ॥ देव हू भये तें कहा इंद्र हू भये
तें कहा विधि हू के लोक तें वहुरि ग्रा
ईयतु है ॥ मानष भये तें कहा भूपति
भये तें कहा द्विज हू भये तें कहा पार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जाईयतहे पसुहू भयेंकैहापं
षीहू भयेंतनेकहापनंगभयेंतेंक
हाकोंअघाईयतहे छूटिवे
कोसुंदरउपायपयेंकसाधूसंग
जिनकीकृपातेंअतिसुषपाई
यतहे ९२ इंद्रानिअंगारधरिचं
द्रनलगायोअंगराहीदेषीइंद्र
अतिकामवसभयोहे सुकरी
हूकारदमकीचमहूंलोटिकरि
आगेजाईसू करकोमनहरि
लयोहे जेसोसुषसूकरकोंते
सोसुःषमघवाकोंतेसोसुःषनर
पसुपंषिनकोंदयोहे सुंदरकह
तजाकेभयोब्रह्मानंदसुःषसो
ईसाधूजगतमेंजीतीकरिगयोहे

१४ धूलि जेसो धन जाके सूलि
सो संसार सुष मूलि जेसो भाग
देषें अंत जेसो यारी है पाप जेसो
प्रभताई सांप जेसो सनमान बडा
ई विछुन जेसो नागनी सी नारी
है आगि जेसो इंद्रलोक विंप्र जे
सो विधि लोक कीर्ति कलंक जे
सो सिधि सोठ गारी है वासनान
कोई वाकी ऐसी मति सदा जा
की सुंदर कहत ताही वंदना ह
मारी है १५ ऐसो को उ साधू
सो तो रामजी को प्यारो है काम ही
न क्रोध जाके लोभ हीन मोह ता
के मद हीन मछरन को उन विका
रो है दुःष हीन सुःष मानें पाप ही
न पुंन्य जानें हरष न सोक आनें दे
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हहीतेन्यारोहैं निदान प्रसंसा
करेरागहीनदोषधरेलेंनही
नदेंनजाकेकछूनपसारोहै ॥
सुंदरकहततताकीअगमअगा
धगतियेसोकोउसाधूसोतोरा
मजीकोप्यारोहे १६ आठोजाम
जमनेमआठोजामरहेप्रेमआ
ठोजामजोगयजज्ञकीयोबहूदां
नजू आठोजामजपतपआठो
जांमलीयोहतआठोजांमतीर्थ
मेंकरतहेस्नानजु आठोजांमपू
जाविधिआठोजांमआरतिहूआ
ठोंजांमदंडवतसुमर्नध्यांनजु सुं
दरकहतजिनकीयोसबआठो
जांमसोईसाधूजाकेउरयेकभग
वानजु १७ साधूहीकेसंगतेंस्वरा

पज्ञानहोतहैजैसेआरसीकोमे
लकाटतसीकलिगरमुषमेंमफे
रीकोउवहेवाकोपोतहे जैसेवै
दनैनमेंसलाकमेलिसुधकरेप
टलगायेततहांज्योंकीत्योंहीजोत
हे जैसेवायूवादरविषेरकेउडा
ईदेतरविलोआकासमांहीसहा
ईउद्योतहे सुंदरकहतभ्रमछिन
मेंविलाईजाततसाधूहीकेसंगतेस
रूपज्ञानहोतहे १८ संतजनआ
येहेंसोपरउपकारकोंमतकरहरु
जीवसकलजीयेजिनवर्षतवांनी
मुषमेघकीसीधारकों देतउपदे
सकोउस्वार्थनलवलेसनिसदि
नकरतहेब्रह्महिविचारकों औरउ
संदेहसवमेटतनिमषमांहीसुजे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुं०
९२

मिटाईदेतजेसेंअंधकारकौंसु
दरकहतहेंसवासीसुःषसागर
केसंतजनआयेहेंसोपरउपका
रकौं १९ संतनिकेसमकहोऔ
रकहांदीजीयेंहीराहीनलालही
नपारसनचिंतामनीऔरउअने
कनगकहोकहाकीजीये कामधे
नसुरतरुचंदननदीसमुद्रनौकाहू
जिहाजवेठकवहूकछीजीये पृथ्वी
आपतेजवायूव्योमलोंसकलज
डचंदसूरसीतजलतपनगुनली
जीयेंसुंदरविचारहमसोधेसवदे
षेलोकसंतनिकेसमकहोऔरक
हांदीजीये २० संतनिकीमाहीमा
तोऔमुःषसुनाईहेजिनतनमन
प्रानदीनोसवमेरेहेंतऔरउमम

खवुधीआपनीउठाईहे।जागत
उमोवतउगावतहेमेरेगनक
रतभजनध्याननदूसरीनकोईहे
तिनकेमेपीछेलग्योफिरतहो
निसदिनसुंदरकहतमेरीउन
नेंवडाईहे।वहेमेरेआपमेंहोंउन
केआधीनसदासंतनिकीमहि
मानोश्रीमुःषसुनाईहे॥२१॥साधू
कीपरिक्षाकोउकेसेंकरिजांनहें।
जगतमोहारसवहेषतहेऊपर
कोअंतःकरनकोतोनेकनपही
चानहे॥आजनकेभोजनकेहल
नचलनकछूओरकोउकीयाके
नोमधमईवषानहे।आपनेईअव
गनआरोयेअज्ञानीजीवसुंदर
कहततानेनिंदाहीकोठानहें।भा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१७० २३

त्रमेनोअंतरहेरात्तिअहर्दिनके
सोसाधकीपरीक्षाकोउकेसें
करिजानहें ॥२२॥ संतनिकीनिंदा
करेसोतोमहानीचहेउहीदगा
वाजउहीकुषीजुकलंकमहो
उहीमहापापीवाकेनषसिष
कीचहे उहीगुरद्रोहीगोब्राह्म
नहननहारउहीआतमाकोघा
तीहिंसीवाकेबीचहे उहीअघ
कोसमुद्रउहीअगकोपहारसं
दरकहतवाकीउरीमांनमीच
हे उहीहेमलेछउहीचंडालउ
रेतउरोसंतनिकीनिंदाकरेसो
तोमहानीचहे ॥२३॥ संतनकोनिं
देताकोसत्यानासजाईहेपरिहे
विजुरीताकेउपरसोअचानके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

धूरि उडि जाय कहूं ठोर न हीं पाई
है । पीछे केउ पुग महानरक में परे
जाई उपर तें जमहूं की मार वहूं षा
ई है ॥ ताके पीछे भूत प्रेत थावर जं
गम जोनी सहे गो संकट तव पीछे
पछताई है ॥ सुंदर कहत श्रोर भग
ते अनंत दु:ष संतनि कों निंदे ता
कों सत्यानास जाई है ॥ २८ ॥ कूप मे
को मींडक सों कूप कों समुद्र कहत है
राजहंस सों कहत के तो नेरी सर
हे ॥ मसका कहत मेरी सरभर कों
न उडे मेरे आगे गरुड की केतीये
क जर हे ॥ गूवरी लागी ली कों लटा
ई करि माने मोद मधूप कों निंदत
सुगंध जाकों घर है अपनी नजा

नेगतिसंतनिकोनामधरेसुंदर
सुं० कहतदेषोयेसेमूढनरहे २५ को
२८ उसाधूभजनीकहूतोलयलीन
अतिकवहूप्रारब्धकर्मधकाआ
ईदयोहे जैसेकोउमारगमेंचल
तेआपुडिपरेफेरीकरिउठेनवउ
हेपंथलयोहे जैसेचंद्रमाकीपुनि
कलाछीनहोईगईसुंदरसकल
लोकद्वतियाकोनयोहे देवहूको
देवानतनगयोनामेंकहाभयोपीत
रकोमोलसोतोनाहीकछूगयोहे
२६संतनिकोगुनगहेसोतोवडभा
गीहेताहीकेभगतिभावउपजेहे
अनायासजाकीमतिसंतनिसोंस
दाअनुरागीहे अतिसुःषपावेनाके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःषसवदूरहोईऔरहीकाहूकी
जिननिंदासुःषत्यागीहे।संसार
कीपासकाटीपाईहेपरमहंसत
संगहीतेंजाकेयेसीमतिजागी
हे।सुंदरकहतताकोनुरनकल्या
नहोईसंतनिकोगनगहेसोईब
डभागीहें।२७।संतनिकीसेवाकरे
सोईनिस्तरहेंजोगजज्ञजपतप
तीर्थव्रतादीदानसाधनसकल
नहियाकीसरभरहे।औरदेवीदे
वताउपासनाअनेकभांतिसंकस
वहूरकरिनितेंनडरहे।सवहीके
सीसपरपावहेंसगतिहोईसुंदर
कहतसोतोजनमेंनमरहे।मन
वचकायकरिअंतरनराषेकछूसं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तनिकी सेवा करे सोई निस्तरे है ॥
२८ ॥ संतजन निसदिन लेवोई का
तु है प्रथम मसुजस लेत सील हू सं
तोष लेत क्षमा दया धर्म लेत पाप
तें डरतु है ॥ इंद्रनिकौ घेरी लेत मन
हीको फेरी लेत जोग की जुगति ले
त ध्यान ई धरतु है ॥ गुरु को वचन ले
त हरीजी को नाम लेत आतमा को
सोधी लेत भौजल तरतु है ॥ सुंदर क
हत जग संत कछू लेत नहीं संत ज
न निसदिन लेवोई करतु है ॥ २९ ॥ सं
तनजन निसदिन देवोई करतु है
साचो उपदेस देत भली सीष देत
समता सुबुधी देत कुमति हरतु
है मारमदि षाई देत भाव हू भग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तिदेतप्रेमकीप्रतीतिदेतआम
रामरजुहै॥ज्ञानदेतध्यानदेतआ
तमाविचारदेतब्रह्मकोंवनाईदे
तब्रह्ममेचैनहै॥सुंदरकहनजग
संतकछूदेतनाहीसंतजननि
सदिनदेवोईकरतहै॥२०॥इति
साधूकोअंगसमाप्तः॥अंग२२
अथज्ञानीकोअंगप्रारंभः॥छंद
इंद्रवजप॥जाकेजदेमहीज्ञानप्र
कासनताकोस्वभावरहैकौंहीछि
नोनैनमेंवैनमेंसेंजानीयेउठतवै
ठतहीआलसानोजोकछूसकी
येउद्गारतकैसेंहीराषीसकेत
अघानोसुंदरदासप्रसिद्धदिषा
वतधानकोषेतपरारतेंजानो१
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुं० २६

ज्ञानप्रकासभयोजिनकेउरवेघ
टक्यौंहीछिपेनरहेंगेंभोंडलमा
हीदुरेनहीदीपकज्जयपिवेमुः
षमोंनगहेंगे ज्यौंघनसारहीगो
प्यछिपावनतोंहीसुंगंधहीनगप
लहेंगे सुंदरश्रोरकहाकोउजांन
नवूठकीवातवढाउकहेंगे २वो
लनचालनवैठनऊठनपीवनषा
नहूसूवनस्वासे ऊपरतोव्यवहा
रकरेंसवभीनस्वप्नसमानजुभा
से लेकरितीरपनालकोंसाधन
मारतहेपुनफेरग्रकासे सुंदरदे
हश्रीपासवदेषतकोऊकपार
तज्ञानीकोग्रासे ऊ वेठनोवेठेच
लेतोचलेपुनीपीछेतोपीछेंआगे
तोग्रागे वोलेतोवोलेनवोलेतोमों

हि २

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहीसोवेतोसोवेरूजागेतोजागे
षाईतोषाईनहीतोनहीग्रहेतोग्र
हेसुनित्यागेतोत्यागे सुंदरज्ञानीकी
येसीदसायहजानेंनहीकछूराग
विरागे ४ देषतहेपेंकछूनहीदेष
तवोलतहेनहीवोलवषानें सूंघ
तहेनहीसूंघतघ्रानसुनेंसवहे
सुनेंपहकानें भक्षकरेंग्ररूनाही
भषेकछूमेटतहेनहीमेटतप्रानें
लेतहेदेतहेलेतनदेतहेसुंदरज्ञा
नीकीज्ञानीहीजानें ५ काजग्रका
जभलोनवुरोकछूउत्तममध्यम
इषनग्रावे कायकवायकमान
सकर्मसुग्रापविषेनतिहूंठहरावे
हूंकरीहेनकीयोनकरेंग्रवयोम
नइंद्रनिकोंवरतावे दीसतहेव्यव

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुं० ९०

हारविषैनितसुंदरज्ञानीकोउक
पावै ॥६॥ दैषतब्रह्मसुनेंपुनिब्रह्महि
बोलतहैसोईब्रह्महीबानी ॥ मोमी
हूनीरहीतेजहूवायूहूव्योंमहूब्रह्म
जहांलगप्रानी ॥ आदीहूअंतहूमध्य
हूब्रह्महीहैसबब्रह्मपहैमतिठानी
सुंदरहैअज्ञानहूब्रह्महैआपहूब्र
ह्महीजानतज्ञानी ॥७॥ बैठनकेवल
ऊठनकेवलबोलनकेवलबानक
हीहै ॥ जागतकेवलसोवतकेवल
जोवनकेवलष्यालहीहै ॥ भूतहू
केवलभव्यहूकेवलवर्त्तनकेवल
ब्रह्मसहीहै ॥ हैसबहीअर्धमुधैसू
केवलसुंदरकेवलज्ञानउहीहै ॥
केवलज्ञानभयोजिनकेउरतेआ
धउर्धसुलोकनजाही ॥ व्यापकब्रह्म

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आपक ब्रह्म अखंड निरंतर वावि
न और कहूं कछू नाहीं। ज्यौं घट ना
स भयो घट व्योम सु लीन भयो प
न है नभ मांही। सो पुनी मुक्ति जहां
वपु छांडत सुंदर मोक्ष सिला क
हूं काही॥ ९॥ आदी हूं तो नही अंत
है नही मध्य शरीर भयो भ्रम कू
पा॥ भासत है कछू और को और ही
ज्यौं रजु में अहि सीप में रूपा॥ देषी
मरीची उठ्यौ विच विभ्रम जान
न नाहीं उहै रवि धूपा॥ सुंदर ज्ञान
प्रकास भयो जब ये क अषंडित
ब्रह्म अनूपा॥ १०॥ छंद मनहर॥ जा
ही के विवेक ज्ञान ता ही को कुस
ल भयो जा ही वोर जाई वा को ता
ही ठोर सु:ष है। जैसें कोई पायनी पे

CC-0: Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुं०
२२

जारकोंचढाईहलेनताकोंतोन
कोउकाटेषोभरेकोदुःषहे।भावे
कोउनिंदाकरेभावेतोप्रसंसाक
रेवेतोदेषेआरसीमेंआपनोईसु
षहे।देहकोव्योवारसबमिथ्याक
रजानतहेसुंदरकहतयेकआत
माहीरूषहे ११ अंतःकरनजाके
नमगनछाईरहोजडताअज्ञान
ताकेआलसमेंत्रासहे।जगन
कोप्रभावअंतःकरनजाकेविवि
धकर्मताकेकामनाकोवासहे
सत्वगुनअंतःकरनजाकेदेषी
यतक्रपाकरिसुद्धताकेभक्तिको
निवासहे।त्रिगुणातीतसाक्षी
तुरीयास्वरूपजानसुंदरकहतवा
केज्ञानकोप्रकासहे १२ तमोगु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नवधीसोतोतत्वाकेसमानजेसें
ताकेमध्यसुरजकीरचहूनजो
तहे॥रजोगुनवधीजेसेंत्रारसी
कोउंधोवोरताकेमध्यसुर्जकी
कछूकउद्योतहे॥सत्वगुनवधी
जेसेंत्रारसीकीसूधीत्रोरताके
मध्यप्रतिबिंवसुर्जकोपोतहे॥त्रि
गुनत्रतीतजेसेंप्रतिबिंवमिटी
जातसुंदरकहतयेकसुर्जहीहोत
हे॥१२॥सवसोंउदासीहोईकाठ
मनभिन्नकरेताकोनामकहीयत
पर्मविरागहे॥त्रंत:कर्नहूकीवास
नानिवर्तहोईताकोमनीकहतहे
उहेवडोत्यागहे॥वित्तपेमईश्वर
सुनेकहूनन्यारोहोईउहेमनका
हीयतउहेप्रेममार्गहे॥त्रापत्रस्त

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जगतकोपेककरीजानेजवसुंद
सुं० ॥ रकहतब्रह्मज्ञानभ्रमभागहे ॥ ७८
५६ ॥ कोउरूपफूलनिकीसेजपरीसू
तोआईजवलगजाग्योतोलोंअ
तिसुषमान्योहे नींदजवआईत
ववाहीकोंस्वपनभयोजवपरौ
नरककेकुंडमेयोजान्योहे ॥ अति
दुःषपावेपरनिकस्योनक्योंही
जाईजागिजवपरयोतवस्वपन
वषान्योहे ॥ यहजूठवहजूठजा
ग्रतस्वपनदोउसुंदरकहतज्ञा
नीसवभ्रमभान्योहे ॥ ७९ ॥ स्वपु
नेमेराजाहोईस्वपनेमेरंकहो
ईस्वपनेमेंसुःषदुःषसत्यकरि
जानेहे ॥ स्वप्नेमेंवधीहीनमूठन
समझेकछूस्वप्नमेंपंडितवहू

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग्रंथ निवषां नेहे । स्वप्ने में कामी
होई इंद्रनि के वस परे ों स्वपने में
जति होई अहंकार आने हे । स्वप्ने
में जागे पाज वस मफ परी हे त वसुं
दर कहत सब मिथ्या करि माने हे ।
८९ । विधि न निषेध कछु भेद न अ
भेद पुनी क्रीया सो करत दीसे पो ही
नित प्रत हे । काहू को निकट राषे का
हू को तो दूर भाषे काहू सो नि रेन दूर
ऐसी जाकी मती हे । राग हू न दोष
को न सोक न उछाह हदो उ ऐसी वि
धि रहे कहूं रत्ति न विरती हे । बाहीर
व्यौहार ठाने मन में स्वपन जाने सुं
दर ज्ञानी की कछु अद्भुत गती हे ॥
९० । कामी हे न जती हे न सुंम हे न स
नी हे न राजा हे न रंक हे न तन हे न म

नहे॥ सोवे है नै पीछे है न आगे है न
अहै न [illegible] त्यागे है न घर है न व
नहे॥ स्थिर है न डोले है न मौन है न
बोले है नै षाले है न स्वामी है न ज
न है॥ वैसो कोउ हो.वै जन वाकी ग
ति जाने न व सुंदर कहत ज्ञानी स
न सु धपन है॥१९॥ इति ज्ञानी को
अंग समाप्तः॥ अंग २२॥ अथ सां
ख्यज्ञानको अंग प्रारंभः॥ छंद मन
हर॥ छितिजल पावक पवन नभ
मिलि करी सब्द रस परस रूप र
स गंधज॥ श्रोत्र त्वक चक्षु घ्राण
रसना रस को ज्ञान वाक पाणि पा
द गुदा उपस्थ हि वंधज॥ मन बुधि
चित अहंकार ए चौवीस तत्व पची
स मो जीव तत्व करत है द्वंधज॥ प

टवीसमोहेब्रह्मसुंदरसुनिहकं
र्मव्यापकअषंडयेकरसनिरसंध
जु १ श्रोत्रदिगलकवापूलोचन
प्रकासरविनासिकअस्वनिजिह्व
वरुनवषांनीये वाकअग्निहस्त
इंद्रचंद्रउपेंद्रवलमेढप्रजापति
गुदामसुहृकोठांनीये मनचंद्र
वुधिविधिचितवासुदेवआही
अहंकाररुद्रकोप्रभावकरिमानीये
जाकीसत्तापाईसवदेवताप्रकास
नहेंसुंदरसोअनंतमाहीन्यारोकरिजा
नीये २ छंदइंद्रवजय श्रोत्रसुने
दृगदेषतहेरसनारसघ्रानसुगंधपि
यारो कोमलनालकजानतहेपुन
वोलनहेमुखपगहउचारोपारिपाय
हेपरगौनकरेमलमूत्रतजेउभयो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुं०
२१

अथ द्वारो जाके प्रकासे प्रकासत
हैं सब सुंदर सोई है घट न्यारो ३
वुधि भ्रमे मन न चित भ्रमे अहंकार
भ्रमे कहा जानत नाहीं श्रोत्र भ्रमे
त्वक घ्रान भ्रमे रसनां दृग देषी द
सो दिस जाही वाक्य भ्रमे कार पाद
भ्रमे गदद्वार उपस्थ भ्रमे कहू का ही
तेर भ्रमाये भ्रमे सव ही पुनी सुंदर
हंकौ भ्रमे उनमांही ४ वुद्धि को व
द्धि हू चित को चित अहं को अहं मन
को मन वोई नैन को नैन है वैन को वै
न है कान को कान तुचा त्वक होई ॥ घ्रान
को घ्रान है जीभ को जीभ है हाथ कौ जीव
है सुंदर सोई ५ ॥ छंद मनहर ॥ प्रथम
के सैं के जगत पहरयो है जगतगुरु
मो सौं कहो प्रथम ही कौं न तत्व कीनो

हाथ पगे पग होई सीस को सीस है प्रानं को प्रान देषी व को ३०४

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

है। पुर्षके प्रकृतिके महतत्व अहं
कार किधौ उपजायत तम रज सत
तीनो है। किधौ व्यौम वायु तेज आ
पकै अवनि कीन किधौ पंच विषय
प सार करी लीनो है। किधौं दस इंद्रि
किधौ अंतःकर्न कीन सुंदर कहत
किधौं सकल वही नो है॥ १॥ छंद
मनहर॥ उत्तर॥ ब्रह्मते पुरष अरु
प्रकृति प्रगट भई प्रकृतिनें महत
त्व गुन अहंकार है। अहंकार हूते ती
न गुन सत्व रज तम तम हूते महाभू
त विषय पसार हैं। रज हूते इंद्रि द
स प्रथक प्रथक भई सत्व हूते म
न आदी देवता विचार है। ऐसे अनु
क्रम करी सिष सों कहत गुरु सुंद
र सकल प्रह मिथ्या भ्रम जार है।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

७ ॥ प्रश्न ॥ मेरो रूप भोमी है के
२० मेरो रूप आप है के मेरो रूप तेज
६२ है के मेरो रूप पोंन है ॥ मेरो रूप व्यो
म है के मेरो रूप इंद्रि ह्रा अंतःक
र्न है के वे ठो है के गोन है ॥ मेरो रूप
त्रिगुन के अहंकार महतत्व प्रकृ
ति पुर्ष किंधो बोले है के मोन है।
मेरो रूप स्थूल है के सुंन्य आही
मेरो रूप सुंदर पूछत गुरु मेरो रू
प सूक्ष्म है के सुंन्य आही मेरो रू
प सुंदर पूछत गुरु मेरो रूप कोंन
है ९ ॥ उत्तर ॥ तूं तो कछु भोमी नाही
आप तेज बा पून ाही व्योम पंच वि
षे नही सो तो षे म कूप है तूं तो कछु
इंद्रि अरु अंतःकरन नाही तो नगु
न तूं तो नही न तो छाही धूप है ।

नहीनते[illegible]रूपहे ॥ तूंतोअहंका
रनहीपुनीमहतत्वनाहीप्रकृतिपु
रूषनाहीतूंतोस्वअनूपहे ॥ सुंदरवि
चारयेसेसिषसोंकहतगुरूनाही
नाहीकहतरहेसोतेरोरूपहे ॥ टी
तेरोतोस्वरूपहेअनूपचिदानंद
घनदेहतोमलीनजडयाविवेकली
जीये ॥ तूंतोनिहसंगनिराकारअ
विनासीअजदेहतोविनासवंत
नाहीनहीधीजीये ॥ तूंतोषटउर
मीरहीतमहाएकरसदेहकेविका
रसबदेहसिरदीजीये ॥ सुंदरकह
तयोविचारआपुभिंनजानीपरकी
उपाधीकहाआपषेचलीजीये १०
देहहीनरकरूपदुःषकोनवारपा
रदेहहीस्वर्गरूपजूठोसुःषमामो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे देहही कौ वंध मोक्ष देह हीअ मोक्ष
मोक्ष देह ही के क्रियाकर्म सुभासु
भ ठान्यो हे देहही में और देह बसी
है विलाष करे ताही कौं समझ वि
नाआतमा वृषा न्यो हे दोउ देह तें
अलि सदोउ को प्रकास कहे सुद
रचैन सरूप मारो करि जान्यो हे।
११ देह हले देह चले देह ही सों देह
मिले देह षाई देह पीवे देह ही भरत
हे देहही हिमारे गरे देहही पावक
जरे देह रन माही जूझे देह ईपरत हे
देह ई अनेक कर्म करत विविध भांति
चमक की सता पाई ले हु ज्यो फिरत
हे आतमा चेतन सरूप व्यापक सा
क्षी अनूप सुंद्र कहत सो नो जनमे
न मरत हे १२ देह यह किन को हे

देहपंचभूतनिकोपंचभूतकोंनतें
हेतामसअहंकारतें।अहंकारकों
नतेहेजासोंमहतत्वकहेमहतत्व
कोंनतेंहेप्रकृतिमंकारतें।प्रकृति
सोकोंनतेहेपुर्षहेजाकोनामपुर्ष
सोकोंनतेंहेब्रह्मनिराधारतें।ब्रह्म
अवज्ञांन्योहमजांन्योहेतोनिअक
रनिरूपेहमकीयोहेतोचुपभःषद्वा
रतें॥१२॥येकघटमांहीतोसुगंधज
लभरीराष्योयेकघटमाहीतोदुर्ग
धजलभस्योहे।येकघटमाहीपुनीरं
गोहकराष्योआनीयेकघटमाहीतो
आनीभर्हीराउकस्योहे।येकघटनये
कजेलयेकमाहीलगनीतसवहीमें
सवितकोमतिविंबपस्योहेतैसेही
संदरऊंचनीचमध्येयेकब्रह्मदेहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मेदहेषीभिन्नभिन्ननामधरयोहे॥
१४ भोमपरंअपअपहूकेपरेपा
वकहेपावककेपरउनीवायुहूव
हतहे वापूपरेव्योमव्योमहूकेपर
इंद्रीदसइंद्रिनिकेपरअंतःकरन
रहतुहे अंतःकरनपरतीनोगुन
अहंकारअहंकारपरमहतत्वको
लहतुहे महतत्वपरमूलमायाप
परब्रह्मताहीनेपरातपरसुंदरकहू
तुहे १५ भूमतोविलीनगंधगंधतो
विलीनअपअपहूविलीनरसरस
तेजषातहे तेजरूपरूपवायूवायू
हीसपर्सलीनसोसपर्सव्योमश
ब्दतमहीविलानहे इंद्रीदसजमन
देवतविलीनसत्वतीन न्नीन
गुनअहंममतत्वगलिजानुहे मह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तत्वॅप्रकृतिहृपुर्षेलीनसुंदरपुर्षेजा
ईब्रह्ममेंसमातुहे ९६ आतमाअचल
सुद्धयेकरसरहेसदादेहविकाररि
मेंदेह हीसोजानीये जैसेंससीमंड
लअभंगनहीभंगहोईकलाआवे
जाईघटवढसोवषांनीये जैसेंद्रुम
सुथिरनदीकेतटदेषीयतनदीके
प्रवाहमाहीचलतेसोमानीये तैसें
आतमाअनंतदेहकोंप्रकासकरे
सुंदरकहतयोविचारिभ्रममानीये
९७ आतमाशरीरहेउपेकमेकदे
षीयतजवलगअंतःकर्नमेंअग्या
नहेजैसेंअंधीयारीरैनघरमेंअंधेरे
रेमाहीनेंनकोनसुझैकछूतद्यपि
अंधेरेसोअलेपसोवषांनीये सुंद
रकहतनोलोंयेकमेकजानीयत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जोलोंनहीप्रगटप्रकासज्ञानभा
सुं० नहे ।१८। देहजडदेवलमेआतमा
९५ चेतन्यदेवपाहीकोसमझिकरि
यासोमनलाईये ।देवलकोविन
सतवारनहीलागेकछुदेवतोअ
भंगसदादेवलमेंपाईये ।देवकी
संगतिकरिदेवलकीपूजाहोतभो
जनविविधभांतिभोगहूलगाईये ।
देवलतेंन्यारोदेवदेवलमेंदेषीयु
नसुंदरविराजमानओरकहांजाई
ये ।१९। प्रीतसीनपातीकोउप्रेमसे
नफूलओरचितसोनचंदनसनेह
सोनसेहरा ।हदेसोनआसनसह
जसोनसिंघासनभावसीनसेजओ
रगुनसोनगेहरा ।सीलसोस्नानन
हीध्यानसोनधूपओज्ञानसोनदी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पकआतातनमकेहरा। मनसीनमा
लाकोउसोहंसोनजापऔरआनमा
सोदेखनाहीदेहसोनदेहरा।२०। स्वा
सोस्वासरातिदिनसोहंसोहंहोय
जापपाहीमालांचारछुटकैधरतुहे
देहपरइंद्रिपरेअंतहकरनपरेयक
हीअषंडजापतापकुंहरतुहे काठ
कीरुद्राक्षकीहसूतहूकीमालाओ
रईनकेफिरायेकगुकारजसरतुहे
सुंदरकहततातेआतमाचेतनरु
पआपकोभजनसोतोआपहीका
तुहे।२१। षीरनीरमिलेहोउ.पेकठेही
सोईरहेनीरजेसेछांडहंसषीरकों
गहतुहे कंचनमेंओरधातुमिलीक
रीवांनपर्योसुद्धकीकंचनसोना
रज्योंलहतुहे पावकहूहारमध्यसे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहीसोहोहोईरसौमथीकारिका
उ० ठ.वहतारकौंदहनुहे। तेसेंहीसुंदर
९९ मिलौआतमाअनातमाजुभिन्न
भिन्नकरिसोतोसांख्यहीकहनुहै
२२। अन्नमयकोससोतोपिंडहैप्रा
ट.पहप्रानमयकोसपंचवापूही
वषांनीयें। मनोमयकोसपंचकर्म
इंद्रीहैंप्रसिद्धपंचज्ञानइंद्रीपवि
ज्ञानकोसजांनीये। जाग्रतस्वपन
विषेकहीयेचत्वारकोससुषोपती
मांहीकोसआनंदमेमांनीयें। पंच
कोसआतमाकोजीवनामकहीय
नसुंदरशंकरभासमसांख्यपहआ
नीये। २३। जाग्रतअवस्थाजेसेंसद
नमेंवेठीयतनहांकछूहोईताही
भलीभांतदेषीये। स्वपनअवस्था

जैसें देह हरिमें वेठे जायर रहे जोई उहां
उकी वस्तु सव ले षीये । सुषोपति मीं
हरे मे वेठे तेन सूज परे महा अंधधो
र तहां कछू ई न पेषीये । यौ मन अन
सूत घरा वो वरे मो हरे मांही सु दरसा
षी स्वरूप तुरीया विसेषीये २४ । जा
ग्रत के विषे जीव नेन नी में देषीय
न वि विध यो वा र सव इंद्रि गहतु
हे । स्वपने हू मांही पुनी वेसे ही व्योहा
र होत नेन नीते आई कंठ में रह
तु है । सुषपति अरु देमें विलीन होई जा
न सव जाग्रत स्वपन की तो सुधि न
लहतु है । तीन हू अवस्था को ई साषी
जव जांने आपन रीया स्वरूप य हसु
दर कहतु है २५ ॥ छंद इंद्र वजय ॥ मो
मीन सूस मे आप को जान हू अप ते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुं० ९८

सुक्षमतेजकोअंगा।तेजतेसुक्षम
वायूवहेनिनवायूनेंसुक्षमव्योमउ
तंगा।व्योमतेसुक्षमहेगननतीनति
हूतेअहंमहत्तत्वप्रसंगा।ताहूतेंसू
क्षममूलप्रकृतिजुमूलनेसुंदरब्र
ह्मअभंगा॥२६॥ब्रह्मनिरंतरव्याप
कअगिनिअरूपअषंडितहेसवमां
ही।ईस्वरपावकरासिप्रचंडजुसं
गउपाधिलीयेवरतांई।जीवअनंत
मसालचिराकसुदीपपतंगअनेक
दिषांही।सुंदरद्वैतउपाधिमिटैजब
ईस्वरजीवजुदेकछूनाही॥२७॥ज्यो
नरपावकलोहतपावनपावकलो
हमिलेसुदिषाही।चोटअनेकपरें
घनकीसिरलोहवधेकछुपावक
नाहीं।पावकलीनभयोअपनेंघर

सीतलतलो हमयोतबतोंही ॥ सोंयहश्रा
नमदेहनिरंतरसुंदरभिन्नरहेमिलीमा
ही ॥ २८ ॥ श्रासचेतन्यसुहूनिरंतरभिन्न
रहेकहूंछिमनहोई ॥ हेजड चेतन्यअंत:
करनजुसुहुश्रसुधलीयेगुनदोई हेहश्र
सुद्धमलीनमहाजडहालनचालसके
पुनवोई सुंदरतीनविभागकीयेबिन
भूलिपरेभ्रमतेंसबकोई ॥ २९ ॥ छंदई
द्रजय ॥ ब्रह्मश्ररूपश्ररूपीपावक
व्यापकजुगलनहीसतरंग ॥ देहदा
रतेंप्रगटहेषीयतअंत:करनश्रग्निह
यश्रंग ॥ तेजप्रकासकल्पनातोलगि
सौलगरहेउपाधिप्रसंग ॥ जहांकेत
हांलीनपुनहोईसुंदरदोईमहाश्रभं
ग ॥ ३० ॥ देहसरावतेलपुनिमारुतबा
तिश्रंत:करनविचार ॥ प्रगटजोतिप्रह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१० चेतन दीसे जाते भये सकल उजी
६९ यार । व्यापक अगनि मथन करि जो
ये दीपक वहुत भांति विस्तार । सुंद
र अद्भुत रचना तेरी तूं ही येक अनेक
प्रकार ।२०। तिल मैं तेल दुध मैं घृत है
दार माही पावक पही चान । पुहप मां
हीं जुं प्रगट वासना ही षु मांही रस क
हत वषान । पोस तिमां ही अपकी मनि
रंत र वनस्पति मैं सहत प्रमान । सुंद
र भिन्न मिल्यो पुनी दीसत देह मांही
यो आतम जांन ।२१। जाग्रत सुपन सुषो
पति तीनो अंतःकर्न अवस्था पावे । प्रा
न चले जाग्रत अरु स्वपन सुषोपति मे
कछु वे न रहावे । प्रान गये ते रहें न कोउ
सकल देष तां थाट विलावे । सुंदर आ
त्रिस १ तम निरंतर सो तो किन हूं जाप न आ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वे रहु ॥ पंडहू ह तत्व स्थूल कुंभ मे सूक्ष
म लिंग भयो जो तो य ॥ यहां जीव अहां
आभा दीसे ब्रह्म इहू प्रतिविंव होय ॥
घट फूटे जल गयो विले हैं अंतःकरनेक
हे नहीं कोय ॥ तब प्रतिविंव मिले ससी
ही मही सुंदर जीव ब्रह्म मय होय ॥ ३४
छंद मनहर ॥ जेसे व्योम कूंभ के बा
हेर अरु भीतर हु कोउ न र कूंभ कूं हजार
कोस ले गयो ॥ ज्यो हि व्योम इहां सही उ
हां पुनी हे अषंड इहां न विछोहन तो उ
हां मिलाप के भयो ॥ कूंभ तो नयो पुराणो
होई के विनसि जाई व्योम तो न हे पुराणो
न तो कछु हे न य्यो ॥ तेसे ही सुंदर देह आ
वे र हे नास होई आत्मा अचल अविना
सी हे अनामयो ॥ ३५ ॥ देह के संजोग हि
ने कर्ह कर्म अरु स्वाद देह के संजोग क

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेषादोषारोल्लौनकौ। देहकेसंजोगक
हैमूषतेअनेकवातदेहकेसंजोगहि
पकरिरहेमौनकौ॥सुंदरदेहकेसंजो
गदुःषमानेसुषमानेदेहकेसंजोगग
योदुःषसुखकौनकौ॥२९॥आपकीभ्र
संसासुनिआपहिषुसालहोईआप
हिकीनीद्यासुनिआपमुरझाईहै॥आ
पुहिकोसुषमानीआपसुषपावत
हैं आपहिकोदुःषमानीआपदुःषपा
ईहे॥आपहिकीरक्षाकरेआपहिकी
घातकरेआपहिहत्यारोहोइगंगाजो
इनहोईहै॥सुंदरकहतऐसेदेहहिको
आपमानीनीजरूपभूलिकेकरतहा
ईहाईहे॥३०॥इतिसांख्यज्ञानकोअं
गसमाप्तः॥अंग॥२३॥अथअरने
भावकौअंगप्रारंभः॥छंदइंदवजप

ऐक ही आपनो भाव जहां तहां बुद्धि के जोगते विभ्रम भासे । जो पह क्रूर तो क्रूर व ही पनी या के सिषे नें उहां पनी षासे । जो पह साधू तो साधू उहां पनी याके हमेते उहां पुनी हासे । जो सोई आप करे मुःष सुं हरते सोई दर्पन माही प्रकासे ॥ १ ॥ छंद मनहर ॥ जेसें स्वान काच के सदन मध देषी और भूं की भूं कीमरत करत अभिमान जू । जेसे गज फटिक सिलासों अरितो रे दंत जेसें सिंघ कूप माही उजक मुलान जू । जेसें कोउ फेरी षात फिरत मुदेषे जगत सें ही संदर सव तेरी ई अग्या न जू । आपनो ही भर्म सो तो दूसरो दिषाई देत आप के विचारे को उ दूसरो न आंन जू ॥ २ ॥ नीच उंच भलो वुरो स

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

मु॰
१००

ज्ञानदृजेनपुनीपंडितमूर्षसत्रुमि
त्रं करावहे। मानअपमानपुन्नपा
पसुषदुषदोउस्वर्गनर्कबंधमोक्ष
हूकोचावहे। देवताअसुरभूतप्रेतकी
टकुंजरउपसुअरुपंछीस्वानसूक
रविलावहे। संहारकहतपहयेकई
अनेकरूपजोईकछूदेषीयेसोआप
नोईभावहे॥ पाहीकेजागतकामपा
हीकेजागतक्रोधयाहीकेजागतलो
भयेहीमोहमानोहे। याहीकोतोपाही
वैरीपाहीकोतोपाहीमित्रयाकोया
हीसुषदेतपाहीदुःषदातोहे। याहीष
हायाहीरुद्रपाहीविस्नुदेषीयतया
हीहेदेवदेनपक्षसकलसगातोहें। या
हीकोप्रभावसोतोपाहीकोदिषाईदे
तसंहारकहतपेहीआतेमाविख्याता

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हे ॥४॥ याही कोनो भाव याको संक उपजा
वन हे याही कोनो भाव याही निसंक क
रन हे ॥ याही कोनो भाव याको प्रत प्रत
होई लगे याही कोनो भाव याको कुम
निहरन हे ॥ याही कोनो भाव याको वा
पूको वधू ना करे याही कोनो भाव याही
थिर कैंधरन हे ॥ याही कोनो भाव याको
धार में वहाई देत सुंदर याही को भाव
याही लेन रन हे ॥ ५ ॥ आपही को भाव सो
तो आपको प्रगट होत आपही आरोप
करी आप मन लायो हे ॥ हेवी अन्य दे
वको उभावको उपासे ताही कहे मे
नो पुत्र धन ह्र नहीं ते पायो हे ॥ जेसें स्वा
नहाड को चचोर करि माने मोद आ
पही को मुःष फोरी लोह चाट षायो हे
नेसें ही सुंदर यह आपही चैन मआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हीआपनेअज्ञानकरिओरसोवंधा
योहे॥६॥छंदइंद्रवजय॥नीचेनेनी
चेहउचेतेंउपरआगेनेंआगेहेपीछे
नेपीछो॥दूरतेंदूरनजीकतेनेरेहीआ
देतेंआडोहीतीछेतेतीछो॥वाहीर
भीतरभीतरवाहीरज्योंकोउजानतेसो
करइछो॥जेसोईआपनोभावहेसुंदर
नेसोहीहेइगपोलीकेवीछो॥७॥आ
पनेंभावतेसूरसोदीसतआपनेंभाव
तेंचंदसोभासे॥आपनेंभावतेतारेअनं
तजुआपनेंभावतेविदूलतामेंविदूल
तासे॥आपनेभावतेंनूरहेनजहेआप
नेभावतेजोतिप्रकासे॥नेसोहिनाही
दिषावतसुंदरजेसेहीहोतहेजाहीको
आसे॥आपनेंभावतेसेवकसाहि
वआपनेभावसवेकोउध्यावे॥आपनें

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जैसेही आपनें भाव है सुंदर ताही कों तेसोई दिषावे उ० २

भाव तें अन्य उपासत आपने भाव तें भ
क्त ह्वै गावे ॥ आपने भाव ते दुष्ट संघारत
आपने भाव तें बाहिर आवें ॥ ६ आपनें
भाव तें दूर वताव त आपने भाव न जी
व वषां न्यो ॥ आपने भाव तें दूध पिवाये
उ आपनें भाव तें वी ठल जान्यो ॥ आप
ने भाव तें चार भुजा पुनी आपने भाव
तें सिंघ सो मांन्यो ॥ सुंदर आपने भाव
को कारन आप ही पूर्न ब्रह्म पिछांन्यो
१० ॥ आपने भाव तें होई उदास ज आप
ने भाव तें प्रेम सो रोवे ॥ आपने भाव मि
ल्यो पुनी जानत आपने भाव तें अंतर
जोवे ॥ आपने भाव रहे नित जाग्रत आ
पने भाव समाधि में सोवे ॥ सुंदर जेसो
ई चाव है आपनो तेसोई आप तहां त
हां होवे ॥ ११ ॥ आपने भाव तें भूल पर्यो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भ्रमदेहस्वरूपभयोअभिमानीआ
पनेभावतेचंचलनाअतिआपनेभा
वतेबुधिथिरानीआपनेभावतेआ
पविसारनआपुनेभावतेआनमज्ञा
नी सुंदरजेसोईभावहेआपनोनेसोई
होईगयोयहमानी ॥१२॥ इतिआपनेभा
वकोअंगसमाप्तः ॥ अंग ॥२८॥ अथ
स्वरूपविस्मरणकोअंगप्रारंभः ॥ छं
दइंद्रविजय ॥ जाघटकीउनहारहे
जेसिहिताघटचैतन्यतेसोईहीसे ॥
हाथीकीदेहमेहाथीसोमाननचींटी
कीदेहमेंचींटीकरीसें सिंघकीदेहमें
सिंघसोमाननकीसकीदेहमेंमान
नकीसेजेसीउपाधीभईजहांसुंद
रतेसोईहोईरह्योनषसीसे ॥१ जेसेई
पावककाठकेजोगतेंकाठसोहोईर

होइ कठोरा॥ दीर्घ काठ मे दीर्घ लागत चोरस काठ में लागत चोरा॥ आपनो रूप प्रकास करे जब जारे करे तब यो को ओरा॥ ऐसेही सुंदर चेतन्य आपसु आपको जानत नाहीन ओरा॥ २ ॥ छंद मनहर॥ प्रश्न॥ आपही को आप भूलगयो सो तो का हेतें अजर अमर अवि गत अविनासी अज कहत सकल जन श्रुति अवगाहेतें॥ निर्गुन निर्मल अति सुहृद नितये सेही कहत और ग्रं थनि के याहे तें॥ व्यापक अषंड येक रस परिपूरन हे सुंदर सकल रमि रह्यो ब्रह्म ताहेतें॥ सहज सदा उद्योत साहीन मे अचंभा होत आपही को आप भूलगयो सो तो काहेतें॥ २७॥ छंद मन हर॥ उत्तर॥ आपही को आप भूलग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सु० योसुषचाहेतें जेसेंमीनमांसकौंनिगलि
१०२ जातलोभलगिलोहकौंकंटकनहीं
जानतउमाहेतें॥ जेसेंकपिगागरमेंमू
ठवांधिराषेसठछांडनहींदेतसोतोसा
दहीकेवाहेतें॥ जेसेंसुकनारीपरचूं
चमारीकटकनसुंदरसहतदुःष
देषपाहीलाहेतें॥ देहकौंसंजोगपा
ईइंद्रीनकेवसपस्योआपहीकोंआ
पभूलिगयोसुःषचाहेतें॥४॥ छंदइं
द्रवज्या॥ देषहूचैतनमानतकेसो
ज्योकोईमदपीयेंअतिछाकतना
हीकछूसुद्धहेभ्रमयेसो॥ ज्योकोईबा
ईरहेंठगमूरीहीजानेनहीकछूका
रनतेसो॥ ज्योंकोईवालकसंकउपा
वतकंपिउठेंअहत्रानतयेसो॥ तेसें
हीसुंदरआपकौंभूलिसुदेषहचैतन

नमानेहेकेसो। ५। भूलिगयोभ्रम
तेंब्रह्मआपे। ज्योंकोईकूपमेंतांकी
आलापतऐसीहीभांतिसूकूपआ
लापे। ज्यौंलहालनतहेलगिपौनक
हेभ्रमतेंप्रतिबिंबहीकापे। देहकेआ
नकेजेमनकेकल्पनमानतहेसबमो
हीकोआपे। सुंदरपेचपलोअतिसें
करिभूलिगयोभ्रमतेंब्रह्मआपे। ई
ज्योहूजकोउकछांडिमहातमभू
हूभयोकरिआपकोंमान्यो। ज्योंको
उभूपतिसोवतसेजसुरंकभयोस्व
पनेंमहीजांनो। ज्योंकोउरूपकीरा
सीअत्यंतकुरूपकरेभ्रमभेचकआ
न्यो। तेसेंहीसुंदरदेहसोहोयकेयाभ्र
मआपहीआपभूलांनो। ७। येकही
आपकवस्तुनिरंतरविसनहीपह

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सु०
१०८

ब्रह्मविलासे ज्यों नट मंत्र निसों द्र
ष्ट बांधत हे कछु और ही और ही भा
से ज्यों रजनी महीं वृक्ष परे नहीं ज्यों
लग सूरज नाहीं प्रकासे सो यह आप
ही आपन जानत सुंदर होय रह्यो सुं
दर हासे ॥ २ ॥ छंद मनहर ॥ भूत नि
में भूत मिल्यो भूत होय रह्यो हे इंद्रिन
को प्रेरी पुनि इंद्रन के पीछे पर्यो आ
पनी अविद्या करि आपुन न गह्यो हे
जोई जोई देह को संकट आई परे क
छू होई सोई माने आपु या ते दुःख स
ह्यो हे भ्रमत भ्रमत कहुं भ्रम को न आ
वे छोर अंत चिरंकाल वीत्यो पे स्वरूप
को न लह्यो हे सुंदर कहत देखो भ्रम
की प्रवलताई भूत नि में भूत मिलि
भूत होय रह्यो हे ॥ ३ ॥ आप ही को भूल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कति आपही वंधायो हे जेसे सुकन
लीका न छांडि है तपगा न तें जांनेका
हू ओर मोही वांधी लटकायो हे जे
से कपिगुंज निकोठ रकरि मानेआ
ग आगे धारी नापें कछू सीत नगमा
यो हे जेसे कोउ कारज कुं जात हूतो
पूर्व को भर्म तें उलटी फिरि पछिमको
आयो हे जेसे ही सुंदर सव आपही
को भ्रम भयो आपही को भूलकरी
आपही वंधायो हे ॥ १० ॥ येसो भ्रम आ
पही को आप करि लीयो हे जेसे को
उ कामनि के ही ये परछु से वाल स्वप्न
मे कहे मेरो पुत्र कहूं गयो हे जेसें कोई
वर्ष के कंठ हुतिम निंढंढत फिरत कछू
येसो भर्म भयो हे जेसें कोउ वांपू करी
वावरो वकत डोले ओर ही की ओर व

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हेसुहू भूलगयोहे तेमेहीसुंदरनिज
रूपकोविसारिदेतयेसोभ्रमआप
हीकोंआपकरीलयोहे ११ भूलिके
स्वरूपकोंअनाथसोकहतुहेदीनदी
नछीनछीनहोईजातभिन्नभिन्नमा
हीदेहकेसंजोगपराधीनसोरहतुहै
सीतलगेघांमलगेभूषलगेसोकमो
हमानअतिषेहूकोंलहतुहे अंधभपो
पंगभयोमूकहूवधिरभयोपेसेमानी
मानीभर्मनदीमेवहतुहे सुंदरअधि
कमोहीयाहीतेंअचंभाआहीभूलि
केंस्वरूपकोंअनाथसोकहतुहे १२
जेसेकोईकहेमेतोस्वप्नेमेंऊठभयोजा
गिकरिदेषेउहीमनुषस्वरूपहे जेसें
कोईराजापनीसोवतभिषारीहोई
आंषउघरेतोमहाभूपनिकोभूपहे॥

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जैसे कोउ भर्म हूतें कहे मेरो सिरकहां भर्म केगये तें जाने सिर तहरूप हे
तैसे ही सुंदर यह भर्म करि भूल्यो आप
भर्म के गये ते यह आतमा आनूपहे ॥
१३ ॥ जैसे कोई पोसती की पाग पडी भो
मीपर हाथ लेके कहे येक पाग मैं तो प
ई है ॥ जैसें सी षसली मनोरथ नी को
कीयो घर कहे मेरो घर गयो गागरी गि
राई हे ॥ जैसे काहू भूत लग्यो बकत हे
आक वाक सुद्धि सब दूर भई औरे मति
आई हे ॥ तैसे ही सुंदर यह भर्म करि भूलो
आप भर्म के गये ते यह आतमा सदा ई
हे ॥ १४ ॥ आपही चेतन यह इंद्री न चेत
न करि आपुहि मगन होई आनंद वढा
यो हे ॥ जैसे नरासी तकाल सोवन निह
ली बोढ आपही तपत होई आप सुःष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

पायोहे जैसें वाललकरिकों घोराक
रिडाकचंढेंआपअसवार होईआप
हीकुदायोहे जैसें ही सुंदर यह जड़को
संजोग पाए आपसुःषमानि मानिआ
पही भुलायोहे १५ कहूं भूल्यो काम
रतकहूं भूल्यो साधीजनकहूं भूल्यो
ग्रेहमध्यकहूं वनवासीहे कहूं भूल्यो
नीचमानकहूं भूल्यो ऊंचमानिकहूं
भूल्यो मोहवांधिकहूं नोउदासीहे क
हूं भूल्यो मोनधरें कहूं वकवाद करें कहूं
भूल्यो मकेजाय कहूं भूल्यो कासीहे।
कहत सुंदर अहंकार हूं तें भूल्यो आप
येक आवे रोज अरु दुजें आवे हासीहे
९६ मैं वहुत दुःषपायो मैं वहूत सुःषपा
योमैं अनंत पुन्य कीये मैं रे अति पापहे
मे कुलीन विद्यावंत पंडित प्रवीन मे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

हामेतोमूढम्रकुलीनमेरोनीचवाप
हेंमेहोंराजामेरीम्राणापिरेचहूंच
रमांहीमेंसोरंकद्रव्यहीनमोहीतो
संतापहें।सुंदरकहतम्रहंकारहीतें
जीवभयोहंकारगापेयहयेकव्रह्मम्रा
पहें।१७। देहईसुरूपलगेदेहईकुरील
गेदेहईकोसीनलगेदेहहीकोंतावरो
देहईकोतीरलगेदेहईकोसीनलगे
देहईकोंमावरो।देहईकोतीरलगे
देहईकोंतोपलगेदेहईकोंम्रपान
लगेदेहईकोंघावरो।देहईस्वरूपल
गेदेहईकुरूपलगेदेहईजोवनल
गेदेहवृद्धडावरो।देहईसोवांधीहे
नम्रापविषेमानीलेतसुंदरकहत
येसोवुधीहीनवावरो।१९॥छंदई
दवजय॥म्रापहीचेतनब्रह्मम्रषंडि

नसो भ्रमतें कछु अन्न परे षे । ढूंढत ता
ही फिरे जित ही तित साधन जोग वना
वत भेषे । और उ कष्ट करे अति सें कर अ
न स्यात्म तत्व न पेषे । सुंदर भूल गये नि
ज रूप ही हे कर कंकन दर्पन देषे ॥ १९ ॥
सूत्र गले मही मेली भयो द्विज ब्राह्मन
होय के ब्रह्म न जान्यो । क्षत्रि यह होय के
छत्र धर्यो सिर हय गज पय दल सों म
न मान्यो । वैस्य भयो वपु की वय देषत
जू सम पंच वनिज ही ठान्यो । सूद्र भयो मि
लि सूद्र सरीर ही सुंदर आपन ही पहि
चांन्यो ॥ २० ॥ और रवि को रवि ढूंढत हे कहूं
तस मिले तन सीत गमाऊं । ज्यों ससि
को ससि चाहत हे पुनी सीतल हैं करी
तप बुझाऊं । जौं कोउ सांन भये नर टेर
त हे घर में अपने घर जाऊं । त्यों यह सुंदर

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रभूलिस्वरूपहीब्रह्मकहेकवब्रसमहो
पांऊं ।२१। आपुनदेषतहैआपनोमुःष
र्पनकालगयोअतिभूला ।ओंडगहे
षततेरहीजातभयोजवहीपुनरीप
रिभूला ।छायअज्ञानरह्योंअतिअंत
रजांनिसकेनहीआतमभूला ।सुंदर
योउपज्योमनकेमलज्ञानविनाति
जरूपहीभूला ।२२। देहस्वरूपभयोमुः
षबोलेदीनहूंओविललातफिरेनि
तइंद्रिनकेवसछिलकछोले ।सिंघ
नहींअपनोवलजांनतजंवुकज्योंजि
नहीतितडोलेचेतनताविसराईनिरं
तरलेजडतामगांठनषोले ।सुंदर
भूलगयोनिजरूपहीदेहस्वरूपभयो
मुःषवोले ।२३। देहस्वरूपभयोअभिमा
नीमेसुषीयासुषसेजसुःषासनहयग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जमोमीमहारजधांनी होंदुःषीयादि
नरेनभरोदुःषमोहिविपतिपरीनहीछां
नी हैं अतिउत्तमजातिवडोकुल हो
अतिनीचकीयाकुल हांनी सुंदरचै
तन्मतानसंभारतदेहस्वरूपभयोअ
भिमानी २४ गर्भविषेउतपतिभई
जबजन्मलियोसिसुसुहुवजांनी वा
लकुंवारकिसोरजुवाहिकहदुभयो
अतिवृद्धनिसांनी जेसीहीभांतिभई
वपूकीगतितेसोईहोईरह्योयप्रांनी।
सुंदरचैतनतानसंभारतदेहस्वरू
पभयोअभिमानी २५ ज्योकोईत्याग
करेअपनोघरवाहीरजायकैभेषवना
वे मूंडमुंडायकेकानफरायविभूति
लगायजटाउवटावे जेसोईस्वांगक
रेवपूकोपुनितेसोहीमानतेसोहोय

जारे सोयह सुंदर आपन जानत भू
लि स्वरूप ही और कहावे २९ ॥ इति
स्वरूप विस्मरण को अंग समाप्तः ॥
अंग ॥ २५ ॥ अथ विचार को अंग प्रारं
भः ॥ छंद मनहर ॥ प्रथम श्रवन करी
चित्त ये काग्रह धारी गुरु संत आग
म कहे सु उर धारीये द्वितीय मनन वा
र वार ही विचारि देषे जोई कछू सुने ता
ही फेरी के संभारीये त्रतीय प्रकार
निदध्यास ही जु नीके करी निह संग
विचारत आपुन पो नारीये साक्षात
कार याही साधन का तहोई सुंदर कहै
त है न बुधि कों निवारीये १ देषे तो वि
चार करि सुने तो विचार करी बोले तो
विचार करी करे तो विचार है षाई तो वि
चार करी पीवे तो विचार करी सोवे तो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

विचारकरीकरनोहीबारहे। बैठेनोवि
चारकरिउठेनोविचारकरीचलेनोवि
चारकरीसोईमतसारहे। देईनोविचा
रकरीलेईनोविचारकरीसुंदरविचा
रकरपाहीनिरधारहें।२। येकहीविचा
रकरीसुषदुषसमजानेयेकहीविचा
रकरीमलसबधोईये।येकहीविचार
करीसंसारसमुद्रतरें।येकहीविचारक
रीपारंगतिहोईहें।येकहीविचारकरि
बुधिनानाभावतजे।येकईविचारक
रिदूसरोनकोईहे।येकहीविचारकरि
सुंदरसंदेहमिटे।येकईविचारकरियें
कब्रह्मजोईहे।३।।छंदइंद्रविजय।।
रूपकोनासभयोकछूदेषीयेंरूपतो
रूपतोरूपहीमाहीसमावें।रूपकेम
धिरूपअरूपपंडितसोनोकहूंकछू

ईनआवै ।वीचअज्ञानमयोनवतत्व
कोवेदपुरानसबेकोउगावै ।सोईवि
चारकरेजवसुंदरसोधतताहीकहू
नहीपावै ।४।भोमीसोतोनहीगंधकों
छाडततनीरसोतोरसतेंनहीन्यारो ।ते
जसोतोमलरूपरसोपुनीवापूरप
र्सम्हासुपियारो ।वोमरूशब्दजुदेन
हीहोवतयेसेहीअंतःकरनविचारो ॥
अेनवतत्वमिलेइननलनिसुंदरभि
न्नस्वरूपहमारो ।५।सीनरूपषशरी
रकोधर्मजुसीतहुउस्मजराघतठाने ।
भूषतृषागुनप्रानकोव्यापतसोकरु
मोहउभेमनआनेवुधिविचारकरेनि
सवासरचित्तचितेसुअहंअभिमाने ।
सर्वकोप्रेरकसर्वकोसाषीजुसुंदरआ
पकोंमारोहीजानें ।६।येकहीकूपतेंनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रहीसीचलतईपअपकीमहीअंबअना
रा।हीतउहेजलस्वादअनेकनिमि
छकटूकनिषाटाअरूषारा।त्योंहीउ
पाधीसंजोगतेंआतमदीसतआहीमि
त्योसविकारा।कठलीयेंसुविवेकवि
चारसोसुंदरसुद्धस्वरूपहेंन्यारा।७॥
रूपपराकोनजानिपरेकछूउठतहेजे
हीमूलतेंछानी।नाभिविषेमिलिस
किपेस्वरउर्षसंजोगपश्यंतिवषानी।
नादसंजोगभ्रहेपुनिकंठजुमध्यम
याहीविचारतेजानी।अखरभेदमिले
मुःषद्वारसुबोलतसुंदरवैषरीबानी।
८ज्योकोईरोगभयोनरकेघटवैदक
हेंयहवायुविकारा।कोउकहेग्रहआ
ईलगेनातेंप्रन्यकीपेकछूहोईउवा।
कोउकहेग्रहचूकपरीकछूदेवनिदो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सकौयोनिरधारा।तैसेहीसुंदरतंत्र
निकेमतभिन्नहीभिन्नकहेजुविचारा
२।जेविषयनमपूररहेतिन्कौंरज
निमहीबाहरछायो।कोउममुक्षकौंपे
गुरुदेवतौहैंभयेषुतंजुशब्दसुनायो
बादरदूरभयेउनकेपुननारनिसौंर
जुसर्पदिषायो॥सुंदरसूरप्रकासतही
भ्रमदूरभयोरजकौरजपायो॥११॥क
र्मसुभासमकीरजनीपुनीअर्धतमो
मयअर्धउजारी॥भक्तिसोपहअरुन
उदयअंतनिसादिनसंधिविचारी॥
ज्ञानसोभानुउहैनिसवासरवेदपुरा
नकहेंजुपकारी॥सुंदरज्ञानप्रभावव
षाननयोंनिहचेसमकोविधिसारी॥
११॥छंदमनहर॥देहईसोआपमा
निदेहईसोहोईरह्योजडताअज्ञा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ततममूद्रसोईजांनीयें इंद्रिनके
१० व्यापारनिअसंततनिपुनबुद्धिनमे
११ रजोदूहूकरिवैसमहूप्रमानीयें अं
तःकर्नमाहीअहंकारबुधीजाकेर
जोगनवर्धमानसत्रीपहीचानीये॥
मलगुनबुद्धियेकआतमाविचारजा
केसुंदरकहतवहीब्रह्मनबषानीये॥
१२ आतमाकेविषेदेहआईकरिना
सहोईआतमाअषंडसहायेकईरह
तुहेजेसेसापकंचकीकोलीयेरहेको
उदिनजीरनउतारकरिनौतनगहतु
हेंजेसेंद्रुमहूकेपत्रफूलफलआईहो
ततिनकेगयेतेंद्रुमंऔरउलहतुहें॥
जेसेंव्योममांहीअभ्रहोईकेविला
ईजातयेसोहिविचारकरिसुंदरकह
तुहें १३ षरीकीडरीसौंअकालिषतवि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

चारीयत्तलिषत्तलिषतवहीजारीघ
सिजातुहे। लेषोसमभत्योहेंजवसम
झपरीहेतवजोईकछुसहीभयोसो
ईब्ह्मरात्तुहे। ताहीसोंदारमथिप्र
गटपावकभयोवहेदारजरिपुनि
पावकसमानुहे। तेसेहीसुंदरबुद्धि
ब्रह्मकोविचारकरीकरतेंवहबुद्धि
हूविलातुहे। ९४। आपकोसमझदेषो
आपुहीसकलमाहीआपहीमेंसक
लजगतदेषीयतुहे। जेसेंब्योमव्याप
कअषंडपरिपूरनहेंवाहलअनेकना
नारूपलेषीयतुहे। जेसेंभोमीघटज
लतरंगपावकदीपवायूमेंवघूरासो
ईविस्तरेषीयतुहे। येसेंहीविचारतवि
चारहूलीनहोईसुंदरहीसुंदररहित
पेषीयतुहे। ९५। देहकोसंजोगपाईजी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वयेसोनाममयोघटकेसंजोगव
ढाकासहीकहायोहेईस्वरहीस
कलविराटमेविराजमानमठकेसं
जोगमठाकासनामपायोहे महाका
समांहीसवघटमठदेषीयतवाही
रभीतरयेकगगनसमायोहेंनेसेंही
सुंदरब्रह्मईस्वरअनेकजीवत्रिविध
उपाधिमेंह्यग्रंथनिमेंगायोहें ९६ प्र
स्न ॥ देहदुःषपावेकिधोंइंद्रीदुःषपा
वेकिधौंलहतनअहारकौं मनदुःष
पावेकिधोंबुधिदुःषपावेकिधौंचित
दुःषपावेकिधोदुःषअहंकारकौंग
नदुःषपावेकिधोश्रोत्रदुःषपावेकि
धौंप्रकृतिदुःषपावेकिधोपुर्षआधा
रकौं सुंदरपूछतकछूजानिनपरत
तानेंकोनदुःषपावेगुरुकहोयाविचार

Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

दुःषनाहीप्रानकौ मनहूकौ दुषनाहीबुधहूकौदुःषनाही ग्रं० ३

कौ ॥ १७ ॥ कवित्तउत्तर ॥ देहकौतौदुः
षनाहीदेहपंचभूतनिकीइंद्रीनकौं
दुःषनाहींचित्तहूकौंदुःषनाही नाही अभि
मानकौं ॥ गुननिकौंदुःषनाहीश्रोत्र
हूकौंदुःषनाहीप्रकृतिकौंदुःषना
हीदुःषनप्रमानकौं ॥ सुंदरविचार
येमेंशिषकौंकहतगुरुदुःषपेकहे
पीयतवीचकेअज्ञानकौं ॥ १८ ॥ प्रथ
वीमांजनअगकानककाटकपुनिजल
हीनरंगहोउदेखविकारिमानीये ॥ का
रनकार्जयेतोप्रगटहीथूलरूपता
हीतेनजरमांहीदेषीकरिआनीये ॥
पावकपवनमैंभयेतोनहीदेषीय
तदीपकवधूराअप्रगतसबपानी
येआतमांअरूपअतिसूक्षमतेंस
समहैसुंदरकारननातेदेहमेंनजा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नीयें ९९ जैनमततउहेजिनराजको
नमूलिजायदानतपसीलसत्तभाव
नातेनरीये मनवचकायसुद्धसव
सोदयालरहेदोषवुधिदूरकरिह
याउरधरीये जोधनामतनवज्जवम
नकोनिरोधहोईवोधकेविचारसो
धम्रातमाकोकरीयें सुंदरकहतपे
सेजीवनहीमुक्तहोईमूयेनेमुकत
कहेताकोंपरहरीये २० देहवोरदेषी
येतोदेहपंचभूतनिकोब्रह्मात्रस्की
ढलगदेहईप्रधानहै मानवोरदेषी
येतोग्रानसेवहीकीयेकसुधापुनि
नषादोउव्यापतसमानहै मनवोर
देषीयेमनकोस्वभावयेकसंकल्पविक
ल्पकरेसहाईअज्ञानहै आतमाविचा
रकीयेआतमाईद्रीसेंयेकसुंदरकहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नकोउ दूसरो न आन है २० ॥ इति वि
चारको अंग समाप्तः ॥ अंग ॥ २६ ॥ अ
थ ब्रह्म निःकलंक को अंग प्रारंभः ॥
छंद मनहर ॥ येक कोउ दाता गाय ब्रा
ह्मन कौं देत दान एक कोउ दयाहीन
मारत निसंक है ॥ येक कोई तपस्वी त
पस्या मांही सावधान येक कोउ कामनी
नि कौ अंक है ॥ येक कोउ रूपवंत
अधिक विराजमान येक कोउ कोटी
कोट चूंवत करंक है ॥ आरसी मे प्रतिविं
ब सब वही को देषीयत सुंदर कहत ये
सें ब्रह्म निकलंक है १ ॥ रवि के प्रकास
तें प्रकास होत नेत्र नि कौं सब कोउ सु
मा सुभ कर्म कौं करत है ॥ कोउ जग्य
दान तप जप नेम व्रत कोउ इंद्री वस
करी कोउ ध्यान कौं धरत है कोउ परदा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रपरधनकौंतकतजाईकोउहिंसा
करिकरिउदरभरतुहैं सुंदरकहतब्र
ह्मसाक्षीरूपयेकरसयाहीमेंउप
जिकरियाहीमेंमरतुहैं २ जेसेजल
जंतुजलहीमेंउतपनहोपजलहीमें
विरंतजलकेआधारहे जलहीमेंक्री
डाकरिविविधविव्हाररहोतकामक्रो
धलोभमोहजलमेंसहाररहे जलकौं
नलागेकछूजीवनकेरागदोषउनहीं
केक्रियाकर्मउनहीकीलारहे जैसेंही
सुंदरएहब्रह्ममेंजगतसबब्रह्मकूं
नलागेकछूजगतविकारहे ३ खेदज
जरायुजइंडजउद्भिजपंनिचारषांन
तिनकेचोरासीलषजंतुहे जलचर
थलचरव्योंमचरभिन्नभिन्नदेहपंच
भूतनिकीउपजिषपतुहे सोतघांम

पवनगगनमें चलतआईगगनअलिसजामेंमेघहूअनंतहे।तैसेंहीसुंदरयहअदिसवब्रह्ममांहीब्रह्मनिकलंकसदाजानतमहंतहे॥८॥

इतिब्रह्मनिःकलंककोअंगसमाप्तः॥अंग॥२७॥अथआत्माअनुभवकोअंगप्रारंभः॥ छंदइंद्रवजय

हेदिलमेंदिलदारसहीअषीयांउलटीकरीताहीचिनैये।आवमेंषाकमेंवादमेंआतसजानमेंसुंदरजांनिजनैये।नूरमेनूरहेतेजमेंतेजहेजोतिमेंजोतिमिलेंमिलिजैयें।क्याकहीयेकहतेनवनेकछूजोकहीयेंकहतेईलजैये।१।जोकहोहेसवमेंवहयेकतोसोकहेवेसोहेआंषिदिषैयें।जोकहोरूपनरेषदीसेंकछूतोस

वजूठकेमानेईकईयें।जोकहंमुह
१० रनेंननिमाफतोनेंनहूवेनगयेपुन
२५ हैयें।क्याकहीयेकहतेनवनेकछू
जोकहीयेकहतेईलजैयें।२।होतवि
नोदजुतोभ्यभिअंतरसोसुःषआपमे
आपहीपैयें।वाहीरकोंउमगेपापुनीअ
वतकं८तेसुंदरफेरपठैयें।त्वादृनिवे
रनिवेसोनजातमांनगुडगुंगेहीनित
षवैपें।क्याकहीयेंकहतेनवनेकछू
जोकहीयेकहतेईलजैयें।३।व्योम
कोंव्योमअनंतअषंडितआदीनअं
तसुमध्यकहांहे।कोपरमांनकरेपरि
पूरनहैतअद्वैतकछूनजहांहेकार
नकारजभेदनहीकछूआपमेंआप
हीआपनहांहे।सुंदरदीसतसुंदरमा
हीसुसुंदरतांकहीकोनउहांहे।४।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

छंद इंदव ॥ येक के होइ न येक न हो
इ उ हि कि इही न उही न इ ही है सुन
के स्थूल न सूक्ष्म न थूल जिही कीन हीन
हीन तेही है । मूल की डाल न मूल न डाल
वही की मही न वही न मही है । जीव के
ब्रह्म न जीव न ब्रह्म तो है के नही कछू
है न नही है ५ ॥ येक कहूं तो अनेक सो
दीसत येक अनेक नही कछू येसो ॥ आ
दी कहूं त हां अंत न हू आवत आदी न अं
त न मध्य सो के सो ॥ गोप्य कहूं तो आगो
प्य कहां यह गोप्य अगोप्य न ऊभो नवे
सो ॥ जो दूरि कहूं सो इ है न नही सु दूर है तो
स ही परि जैसा को तैसो ॥ ६ ॥ छंद मनह
र ॥ येक को कहे जो कहूं येक ही प्रका
स त है दो उ को कहे तु कोउ दूसरो उ
है षी ये ॥ अनेक कहे तु कोउ अनेक अ
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भासे नाही जाके जेसो आवे तेसो ता
कोई विसेषीये वचन विलास को उ
के सें ही वषांनें व्योम मांही चित्र कहो
के से करि लेषीयें अनभव कीये येक
दोए न अनेक कछू सुंदर कहत ज्यो है
सो ही नाही पेषीयें ७ वचन ई वेद वि
धि वचन ई शास्त्र पुनि वचन स्मृति
अरु वचन पुरांन जु वचन ई और पं
थ वचन ई व्याकर्न वचन ई काव्य छं
द नाटक वषांन जु वचन ई संसक्रत
वचन ई प्राक्रत वचन ई भाषा सव
जगत में जांन जु वचन के परे है सो व
च न में आवे नही सुंदर कहत वही अ
नुभव प्रमांन जु ८ इंद्रि नही जांनी स
के अलप ज्ञान इंद्रिन को प्रांन हू न जांनी
सके स्वास आवे जाई है मन हू न जांनि

सबै संकल्प विकल्प करै बुधि हू न जा
निसकै सु मो सु बनाई है । चित्त अहंका
र पुनि ये हू नहीं जांनी सकै शब्द हू न
जांनि शकै अनमान पाई है । सुंदर क
हत ताही कोउ नहीं जांनी सकै दीवा
कर देषी ये सु ये सी नहीं लाई है ॥ ९ ॥
छंद इंद्रविजय ॥ श्रोत्र न जानत त्व
सु न जानत जानत नाहीं जु सूघत
घ्राने । नाहीं सपरस जुबान सके पुनि
जानत नाहीं नजीभ वषाने । मन न
जांनत बुद्धि न जानत चित्त अहंकार
कैपै पही चांनै । सुंदर शब्द हू जाति
सकै नहीं आनम आपको आपही
जानै ॥ १० ॥ सूर के तेज ते सूरज दीस
त चंद्र के तेज ते चंद्र उजासे । तारे के ते
ज ते तारे उदीसत विजुल तेज तें विजु

चकासे॥ दीपकेतेजनेंदीपकही
सतहीरवेकेतेजतेहीरोईभासे॥ तेसे
हीसुंदरआतमजोंनहूआपकेग्या
नतेंआपप्रकासे॥११॥ कोउकहेयह
सृष्टिस्वभावतेंकोकहेंयहकर्मतें
सृष्टी॥ कोउकहेंयहकालउपावत
कोउकहेंयहईस्वरतिसृष्टी॥ कोउक
हेंयहयेसेहीहोवतकोंकरिमानी
येवातअनिष्टी॥ सुंदरयेककीयेअनु
भवविनजानिसकेनहीवाफहीदृ
ष्टी॥१२॥ कोउतोमोक्षआकासवता
वतकोउतोमोक्षपतालकेमाही॥
कोउतोमोक्षकहेंप्रथवीपरकोउक
हेंकहूंओरकहांही॥ कोउवतावतमो
क्षसिलापरकोउकहेमोक्षमिटेप
रछांही॥ सुंदरआतमकेअनुभवि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नओरकहूंकोईमोक्षईनाही॥२०॥मूये तेमोक्षकहैसवपंडितमूयेतेमोक्ष कहेपनिजेना॥मूयेतेमोक्षकहेअ वीतापसमूयेतेमोक्षकहेसिद्धसेना मूयेतेमोक्षमलेंछकहेतेहूघोषेही घोषेहीघोषेवषाननवेना॥सुंदरआ तमकोअनभौसोईजीवतमोक्षस सुषचेना॥२१॥छंदमनहर॥कोउतो कहतब्रह्मनाभिकेकमलमध्यको उतोकहतब्रह्मअंदेमेंप्रकासहै॥ कोउतोकहतकंठनासिकाकेअग्र भागकोउतोकहतब्रह्मभ्रकुटिमें वासहै॥कोउतोकहतब्रह्मदसमेंदु वारवीचकोउतोकहतभमरगुफा मेंनिवासहै॥पिंडतेंब्रह्मंडतेनिरंत रविराजेब्रह्मसुंदरअषंडजेसेंआ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

एकआकासहे ।१५। आंधरेनेंहाथी
देषीझगरोमचायोहेपावजिनग्रह्यो
सोतोकहतहेऊषरसोपूंछजिनग्र
ह्योतिनलावसोसुनायोहे ।सूंडजि
नग्रहीतिनदगलेकीवांहकहिदंत
जिनग्रह्योतिनमूसरदिषायोहे ।का
नजिंनग्रह्योतिनसूपसोवनायक
ह्योपीठजिनग्रहीतिनविटोराबता
योहे ।जेसोहेतेसोहीनाहीसुंदरसुं
असीजानेंआंधरेनैहाथीदेषीझ
गरोमचायोहे ।१६। न्यायशास्त्रकहे
नहेंप्रगटईस्वरवादमीमांसाईशा
स्त्रमाहीकर्मवादकह्योहे ।विशेषि
कशास्त्रपुनीकालवादीहेप्रसिद्ध
पातंजलिशास्त्रमांहीजोगवाद
लह्योहे ।सांख्यशास्त्रमाहीपुनी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प्रकृतिपुरुषवादवेदांतमुशास्त्रति
नब्रह्मवादगह्योहे॥ संहारकहतषटशा
स्त्रमांहीभयोवादजाकेअरुभ.वज्ञा
नवादमेंनवह्योहे॥ १०॥ प्रज्ञानमानं
दब्रह्मयेसेऋगवेदकहेंअहंब्रह्मास्म
स्मिइतियजुरवेदयोंकहें॥ तत्वमसि
इतिसामवेदयोंवषाननहेंअयंआ
त्माब्रह्मकहिअथर्वणयोलहें॥ येक
येकवचनमेंतीनपदहेंप्रसिद्धतिन
कोविचारकरिअर्थतत्वकोंगहें॥ चार
वेदभिन्नभिन्नसवकोसिद्धांतयेकसं
देसमझिकरिचुपचापहोरहें॥ ११॥
इंद्रनिकेभोगजवचाहेतवआपरहे
नासवंततातेंतुछानंदयोंसुनायोहे
देवलोकइंद्रलोकविधिलोकशिव
लोकवैकुंठकेसुःषलोगगिनानंद

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

गायोहे ॥ अक्षय अषंड येकरस परि
पूरन है ताही ने पूर्णानंद अनभव तें
पायो है ॥ याही के अंतरभूत आनंद ज
हां लों और सुंदर समुद्र मांही सजल
आयो है ॥ १९ ॥ येक तो माया विलास ज
गत प्रपंच यह चार षांनि भेद पाप द्वै
त भास रह्यो है ॥ दूसरो विषै विलास इं
द्रिनि की विषै पंच शब्द स्पर्श रूप रस
गंध रह्यो है ॥ तीसरो वाक विलास सो
तो सब वेद मांही वर्नि के जहां लगि व
चन तें कह्यो है ॥ चौथो ब्रह्म को विलास
तिहूं को अभाव जहां सुंदर कहत व
ह अनभव तें लह्यो है ॥ २० ॥ जीवत हि दे
वलोक जीवत ही इंद्रलोक जीवत ही
जन तप सत्यलोक आयो है ॥ जीवत
ही विधिलोक जीवत ही शिवलोक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जीवतवैकुंठलोकजौअकुंठगायो
हे। जीवतहीमोक्षसिलाजीवतही
मिक्षमांहीजीवतहीनिकटपरमप
दपायोहे। आतमाकोअनुभवजिन
कौंजीवतभयोसुंदरकहततिनसंस
यमिटायोहे। २१। क्षितिभ्रमजलभ्रम
पावकपवनभ्रमव्योमभ्रमतिनको
शरीरभ्रममानीयें। इंद्रीदसतेऊभ्र
मअंतःकर्नभ्रमतिनहीकेदेवतासो
भ्रमतेंवषांनीयें। सतरजतमभ्रमप
निअहंकारभ्रममहतत्वप्रकृतिपुर्ष
भ्रममानीयें। जोईकछूकहीयेंसुंदर
सकलभ्रमअनुभवकीयेंयेकआ
नमांहीजानीयें। २२। भोमीहूविलीनहो
ईआपहूविलीनहोईतेजहूविलीनहो
ईवायूजोवहतुहे। व्योमहूविलीनहो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

इंद्रिगन विलीन होई शब्द हू विली
न होई अहं जो कहत है । महत्तत्व वि
लीन होई प्रकृति विलीन होई पुर्ष
विलीन होई देह जो गहत है । सुंदर स
कल लोक कहीयें सुलीन होई आत
मा के अनुभव आनमारहत है ॥ २३ ॥ मा
या की अपेक्षा ब्रह्म रात्रि की अपेक्षा
दिन जड की अपेक्षा करी चैतन वखा
नीये । अज्ञान अपेक्षा ज्ञान बंध की
अपेक्षा मोक्ष द्वैत की अपेक्षा सो तो
अद्वैत प्रमानीये । दुःष की अपेक्षा सुः
षपा की अपेक्षा पुंन जूठ की अपेक्षा
ताही सत्य करि मानीयें । सुंदर सकल
यह वचन विलास अम वचन रहित
अवचन सो जानीयें ॥ २४ ॥ आतमा के
हत गुरु सूह निर्वंध नित सत्य करि मा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नैसोतोशब्दहूप्रमांनहैं। जैसैंव्योमव्या
पकअषंडपरिपूरनहैव्योंमउपमातें
उपमानसोप्रमानहै। जाकीसत्तापाई
सबइंद्रियचैनन्यहोईयाहीउपमातें
उपमांनउप्रमानहै। अनुभवज्ञानैंत
वसकलसंदेहमिटैसुंदरकहतयह
प्रतक्षप्रमानहै। २५। येकघरदोयघ
रतीनघरचारघरपंचघरतजैनवघ
ठेघरपाईहैं। येकयेकघरकेआधा
रयेकयेकघरयेकघरनिराधारआ
पहीदिषाईहैं। सोतौघरसाक्षीरूप
घरघरमेंअनूपताहूघरमध्यकोउ
स्निठहराईहै। ताकेपरेसाक्षीनषुंद
रकाछूवचनअतीतकहूंआईहैनेजा
ईहै। २६। येकतोश्रवनज्ञानपावकजो
देषीसनमायाजलपरसतवेगवूजि

जानहे।येकहेमननज्ञान विजुलीज्यौ
घनमध्यमायाजलवरषतनतामेंनवू
मातहे।येकनिदध्यासज्ञान वडवा
अनलजेसेंप्रगटसमुद्रमाहीमायज
लषातुहे अनुभवसाक्षातज्ञानप्रल
यअग्निसमसुंदरकहतहूंतप्रपंचवि
लातहे॥२७॥भोजनकीवातसुनिमनमें
मुदितभयोमुःषमेंनपरेज्योलोंमेलि
येनग्रासहे।सकलसामग्रीआनिपा
ककोंकरनलागोमननकरतकव
जीमहोयेआसहे।पाकजवभयोतव
भोजनकर्नवेठेमुःषमेंमेलतजाई
यहेनिध्यासहें।भोजनपूरनकरित्रि
पतिभयोहेजवसुंदरसाक्षातकार
अनुभवप्रकासहे॥२८॥श्रवनकरतज
वसवसोउहासहोईचिंतयेकाग्रस
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

आनिगुरुसबसुनियेचेठिकेयेकान
ठोरअंतःकर्नमाहीमननकरनफेर३
हेत्तानरुनीये ब्रह्मअपरोक्षजानीक
हनहेअहंब्रह्मसोहंसोहंहोईसदानि
दध्यासधुनीयें सुंदरसाक्षात्कारकी
टहोतेंहोईअंगयहअनुभवयहेस
स्वरूपभनीयें ॥२८॥ जबहीजगभास
होईचित्तयेकठौरआनीमगजोंउन
ननादअवनसोकहीये जेसेंस्वाति
बूंदहूकोचात्रुकरटनपुनीयेसेहीम
ननकरेकबंहूलहीये ॥२९॥ रात्रिकोचको
रजेसेंचंद्रमाकोधरेध्यानयेसेंजानि
निदध्यासदृढकरिग्रहीयेयहेअनुभ
वयहेकहीयेंसाक्षात्कारसुंदरपारेते
गलपानीहोईरहीयें ॥३०॥ काहूकोंपू
छनरंकधनकेसेपाईयतकानदेके

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुनततथ्यव नसोईजानीयो उनकह्यो
धनहमदेष्योहे फलानीठोरमनरन
करततभयोकवघरआनीये फेरिज
वकह्योधनगड्योनेरेघरमाहीषोद
नलग्योहेतव निदृध्यासठानीये ध
ननिकस्योहेजवहरिद्रगयोहेनवसुं
दरसाक्षात्कारतपतिवषानीये ३१
चंमकठोकेतें चमनतवारहोतकछू
येसेंही श्रवनज्ञाननतवहीलौंजानीये
कफमनलागेजवप्रगटेपावकज्ञान
सिलगतजाईवहमनतवषानीये
वर्धमानभयेकाठकर्मनीवोजराव
तइहीनिदध्यासज्ञानग्रंथनिमेगा
इये सकलप्रपंचयहजारीकेसमा
ईजातसुंदरकहतवहअनभवप्रमा
नीयें ३२ ॥ इतिश्रात्मअनभवकोअं

गसमाप्तः ॥ अंग ॥ २२ ॥ अथग्यानको
अंगप्रारंभः ॥ छंद मनहर ॥ श्रवनसु
नतअरु:षवोलतवचनघ्रांनसूंघतफू
लनरूपदेषतद्रिगनहे ॥ त्वकसपर्सर
सरसनाअसतकरग्रहतअरुसनअरु
चलतपगनहे ॥ करतगवनपुनिबे
ठतभवनसेजसोवतरवनपुनीबोठ
तनगनहे ॥ जोजोकछूविवहारजांन
तसकलभ्रमसुंहरकहतज्ञानीगग
नमगनहे ॥ १ ॥ कर्मनविकर्मकरेभावन
अभावधरेसुभहूअसुभपरैयातेंन
धरकहे ॥ वसतीनसुंन्यजाकेपापहून
पुन्यताकेअधिकनूंन्यवाकेस्वर्गन
नरकहे ॥ सुषदुःषसमदोउनीचहूंनऊं
चकोउऐसीविधिरहेसोउमिल्योनफ
रकहे ॥ ऐकहीनदोयजानेवंधमोक्ष

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

भ्रममानेसुंदरकहतज्ञानीज्ञानमेंग
रकहे।अज्ञानीकोंदुषकौसमूहज
गज्ञानीयतज्ञानीकोंजगतसबआ
नंदस्वरूपहे।नेंनहीनकोंतोघरबाह
रनसूझेकछूजहांजहांजायतहांत
हांअंधकूपहे।जाकेचक्षुहेप्रकासअं
धकारभयोनासवाकेजहांरहेतहांसु
र्जकीधूपहे।सुंदरअज्ञानीज्ञानीअंत
रवहुतआहीवाकेसदारातिवाकेदि
वसअनूपहे।अज्ञानीअरुअज्ञानीकी
क्रियासबएकसीहीअज्ञआसाओ
ज्ञानीआसननिरासहे।अज्ञजोईजो
ईकरेंअहंकारवुधिधरेंज्ञानिअहंका
रविनुकरतउदासहे।अज्ञसुःषदुःष
दोउआपविषेमानिलेतज्ञानिसुःषदुः
षकौनजानेमेरेपासहे।अज्ञकोजगत

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यह सकल संताप करे ज्ञानी कौ सुदृ
ढ सब ब्रह्म कौ विलास है।८। ज्ञानी लो
क संग्रह कौ करत ब्योहार विधि अंत:
करन मे तौ स्वप्रकासी है रहे देत उ
पदेस नाना भांति के वचन कही सब
कौउ जानत सकल सिरमोर है ह
लन चलन पुनि देह सौ करत नित
ज्ञान मे गरक गति लीये निज ठौर है
सुंदर कहत जैसे दंत गजराज मु:ष
षाईवे के और है दिषाईवे के और है।
९॥ इंद्रिनि कौ ज्ञान जाके सोतौ है पसु
समान देह अभिमान षानपान हीं
सौ लीन है। अंत:करन ज्ञान कछू का वि
चार जाके मनुष ब्योहार सुभ कर्म नी
आधीन है आतमा विचार ज्ञान जाके
निस वासर है सोही साधु सकल ही

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वात मेंप्रवीन है येक परमातमा को
ग्यान अनुभव जाकें सुंदर कहत वह
ग्यानी अमछीन है ईधोषे न रहत
कोउ ग्यान के प्रकास तें जाहीठोर रवि
को उद्योत भयो ताहीठोर अंधकार
भागि गयो अह वन वासतें न तो कछू
वन तें उलटि आवें घर माहीं न तो वन
चलि जाई कन कआवासतें जैसें पं
षी पंष टूटी जाई ठोर पसो आईताही
ठोर गिर रह्यो उडवे की आसतें सुंदर
कहत मिटि जाई सव द्रोड दुष धोषो
न रहत को उग्यान के प्रकास तें ७ जे
से को उदेस जाई भाषा कहें और सी
ही समझें न को उ वासो कहै क्या कह
त है को उहिन रहे करि वोलि सी षेउ
नही की फेरी समझावें तवं को लहै
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ग है तैसें ज्ञानकहे तें सुनत्त विपरी
तलागे आप आपनोई मत्त सब को
गहत्त है ॥ उनही के मतकरि सुदृख
हत्त ज्ञानन्त वही ते ज्ञान ठहराईकेर
हत्त है ॥ ८ ॥ येक ज्ञानी कर्मनि में तत्त
पर देषीयत्त भक्तिको प्रभाव नाही
ज्ञान में गरक हैं ॥ येक ज्ञानी भक्तिको
अत्यंत प्रभावलीये ज्ञान मांही नि
श्चै करि करमसों तरक हैं ॥ येक ज्ञा
नी ज्ञानही में ज्ञान कों उचारक है अ
नी ज्ञानही में ज्ञानकों उचारक हैं ॥
त्ति अरु कर्म इन दुहूनते फरक हैं ॥
कर्म भक्ति ज्ञान तीनो वेद में वषान
कहें सुंदर वताया योग रत्ताही में लरक
हें ॥ ८ ॥ जैसे पंषी पगनिसों चलत अ
वनि आई तैसें ज्ञानी देहकरि कर्मनि
करत है जैसे पंषि उचकरि उगत अ

हारपुनिनेसेज्ञानीउरमेंउपासनाध्य
रतुहेंजेसेपंषीपंषनिसोंउडतगग
नमाहीनेसेज्ञानीज्ञानकरिब्रह्म
मेंचरतुहे।सुंदरकहतज्ञानीतीनो
भांतहेषीयतएसीविधिजांनेंसवसं
सयहरतुहे।१०॥छंदइंद्रवजया॥ये
कक्रीयाकरिऋषिनियावनआदी
रुअंतलोंममलवंध्योहे।येकक्रीया
करिपाककरेजवभोजनलोंकछू
अंनरंध्योहे।येकक्रीयामलत्यागन
हेलगुनीतकरेकहूंनाहीफंध्योहे॥
सोयहकर्मउपासनाज्ञानहेंसुंदर
तीनप्रकारसध्योहे।११।दोउजनेमिलि
चोपरषेलनमांडिधरेपुनिठाररतुपा
सा।जीततहेसुसुषीमनमेंअतिहा
रतहेसोईभरेउउसासा।येकजनोदो

उज्ञो रही षेलत हार न जीत करै जन
मासा ॥ तैसे अज्ञानी के द्वैत भयो भ्रम
सुंदर ज्ञानी के येक प्रकासा ॥ १२ ॥ सवै
या ॥ जीव नरेस अविद्या निद्रा सुःष
स्वप्न सो यो करि है त ॥ कर्म षवास पुट
भरि लाई ताते वहु विधि भयो अचेत
भक्ति प्रधान जगायो कर गही आ
लस भस्यो जंभाई लेत ॥ सुंदर अव नि
द्रा वस नाहीं ज्ञान जागर्न सदा सचेत
॥ १३ ॥ ज्ञानी कर्म करै नाना विध अहंकार
या तन को षोवे ॥ कर्म निको फल कछु न
चावे ॥ अंतः कर्न वासना धोवे ज्यों को उ
षेती को जोत तले करि बीज भूंनि के बो
वे ॥ सुंदर कहै सुनो इष्यां नहीं नागो नाहा
ई सु कहा निचोवे ॥ १४ ॥ इति ज्ञान को अं
ग समास ॥ अंग २८ ॥ अथ निरसंसे को

अंगप्रारंभः ॥ छंद मनोहर ॥ भावै देह
छूटि जाहू कासी मही गंगा अट भावै
देह छूटि जायो क्षेत्र मघहर में। भावै
देह छूटि जाओ विप्र के सदन मध्य
भावै देह छूटि जायो स्वपच के घर में
भावै देहं छूटो है स आर्य अनारज में
भावै देह छूटि जाओ वन में नगर में
सुंदर ज्ञानी के कछु संसय रहे जु ना
हीं स्वर्ग नरक सब भागी गयो भर में।
१ भावै देह छूटि जाओ आज ही पल
क मांही भावै देह रहो चिरकाल जुग
[illegible]जुग अंत जु भावै देह छूटि जायो
ग्रीषम पावस ऋतु सर्द ससीर सीत
छूटन वसंत जु भावै देह सनाय न हू भा
वै उजराय न हू भावै देह सर्प सिंघ वी
जली हनत जु सुंदर कहत ये अज्ञान

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

माञ्चपेंडज्ञानीयाहीभांतिनिरसंसे
भयेसवसंतनजु ॥ २ ॥ छंदइंद्रविजय ॥
केयहदेहगिरोवनपर्वतकेयहदे
हनदीमेवहोजु ॥ केयहदेहधरोधर
तीमहीकेयहदेहकृसानदहोजु ॥
केयहदेहनिरादरनिंदहुकेयहदेह
मसानकहोजु ॥ सुंदरसंसयदूरभयो
सवकेयहदेहचलोकिरहेजु ॥ ३ ॥ के
यहदेहसदासुःषसंपतिकेयहदे
हविपतपरोजु ॥ केयहदेहनिरोगर
होनितकेयहदेहहीरोगचरोजु ॥ के
यहदेहहुतासनपेठहूकेयहदेहहि
मारेगरोजु ॥ सुंदरसंसयदूरभयोसव
केयहदेहजीवोकेमरोजु ॥ ४ ॥ इतिनि
रसंसेकोअंगसमाप्तः ॥ अंग २० ॥ अथ
प्रेमज्ञानीकोअंगप्रारंभः ॥ छंदइंद्र

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जय। प्रीतकीरीतकछूनहींराषत
जानतपातनहींकुलगारो। प्रेमकेने
मकहोंनहींदीसनलाजनकोंनल
ग्योसबपारो। लीनभयोहरिसोंअ
भिअंतरह्योठहूजामरहेमनवारो।
सुंदरकोउकजांनिसकेंपहगोकुल
गांमकोपेडोईमारो। १ ज्ञानंदीयोग
रूदेवकृपाकरिदूरकीयोभ्रमषोलि
किवारो। औरकीयाकहीकोंनकरेअ
बचित्रलग्योपरिब्रह्मपियारो। पावति
नाचलवोकेहिठहरपगुभयोमनथि
तहमारो। सुंदरकोउकजांनीसकेंप
हगोकुलगांमकोपेंडोईमारो। २ ये
कअंषंडितज्योंनभव्यापकवाहिरभी
तरहेइकसारो। दृष्टिनमुष्टिनरूपन
रेषनस्वेतनपीतनरक्तनकारो। चक्रि

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

नहोई रहे अनुभवविन जांहां लगि नाही
न ज्ञान उजारो ॥ सुंदर कोई कजानी सके
यह गोकुल गाम के पेंडोई मारो ३ हं
हू बिना विचरे वसुधा पर जा घट आ
तम ज्ञान अपारो ॥ काम न क्रोध न लो
भ न मोह न राग न दोष न मारो न थारो
जोग न भोग न साग न संग्रह देह दिसा
न ठैक्यो न उघारो ॥ सुंदर कोउ कजानी
सके यह गोकुल गांम को पेंडो ई मारो
४ ॥ लक्ष अलक्ष अदृष्ट न दक्ष न पक्ष
अपक्ष न तलाभारो ॥ जूठ न साच अवा
च न वाच न कंचन काच नहीं न उहारो ॥
जांन अजांन न मान अमान न सान ग
मान न जीत न हारो ॥ सुंदर कोउ कजा
नी सके यह गोकुल गाम को पेंडोई मा
रो ५ ॥ इति प्रेमज्ञानीको अंगसमाप्तः

॥१॥ अथ अद्वैत ज्ञान कौ अंग प्रारंभ

१० छंद इंद्रविजय॥ हौ तुम कौं न हौं अस
२८ अखंडित देह मै क्यौं नही देह कौ नेरे॥
बोलत के मेक हौं नही बोलत जानी
ये कैसें अज्ञान है नेरे॥ हूं एक रौं भ्रम नि
श्चय धारि कहौ गुरुदेव कहौं नित टेरे।
हौ तुम ये सेत हूं पुनि ये सें ईदो ये न हि
नही द्वैत हैतेरे ॥१॥ हूं कछू और के तूं क
छू और की है कछू और कि सो कछू औ
रे हौं अरु तूं यह है वो कछू सो पुन बुद्धि वि
लास भयो फक तौरे॥ हौ नही तूं न ही है
छू सो नही बूझे बिना जिन ही तिन हेरे॥
हौं पुनि तूं पुनि है क छू सो पुनि सुंदर
व्याप रह्यो सब हौ रे॥२॥ उत्तम मध्यम अ
रु भासु भमे द अभे द जहां लग जो है
ही सत भिन्न न वो अरु दर्पन वस्तु विबा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

रतयेकहिलो है।जो मुनियेग्ररुद्र
द्वीपरेपुनिवाविनग्रोरकहूंग्रवको
है सुंदर सुंदरव्यापिरह्योसवसुंदर
मेपुनिसुंदरसोहै।३।जौवनयेकग्रने
कभयोद्रुमनामग्रनतनिजातिहूमा
री।वापीतडागरुकूपनदीसवहैज
लयेकसुदेषोनिहारी।पावकयेक
प्रकासवहूविधिदीपचिरागमसा
लहूवारी।सुंदरब्रह्मविलासग्रषंडि
तभेदग्रभेदकीवुधिसुटारी।४।ये
कशरीरमैग्रंगभयेवहूयेकधराप
रिधामग्रनेका।येकसिलामहीको
रकीयेसवचित्रवनाईधरेइकठेका
येकसमुद्रतरंगग्रनेकहुकैसैकेकी
जीयेभिन्नविवेका।हैतकछूनहीदेषी
येसुंदरब्रह्मग्रषंडितयेककोयेका

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

प॰ ज्यौंमृत्तकाघटनीरतरंगहीनेज
मसालकीयेजूवहूता॥ वायूवधूरनि
गां६करीवहूवादलव्यौमसुव्योम
जुमूता॥ वृक्षसुवीजहेवीजसुब्रह्म
हेपूतसोवापहेवापसुपूता॥ वस्तुवि
चारनयेकहीसुंदरतानेख्यानेतोदे
षीयेसूता॥ ६ भोमीहूचैतन्यअपहूचै
तन्यतेजहूचैतन्यहेजुप्रचंडा॥ वायू
हीचैतन्यव्योमहूचैतन्यशव्दहूचैत
न्यपिंडब्रह्मंडा॥ हैमनचैतन्यबुद्धिहू
चैतन्यचित्तहूचैतन्यआहीउडंडा॥
जोकछूनामधरेसोईचैतनचेतनसु
दाब्रह्मअषंडा॥ ७ येकअषंडितब्रह्म
विराजतनामजुदोकरिविस्वकहावे
अैकईयप्यपुरानवषानतयेकईद
नवसिषसुनावेयेकईअर्जुनउद्धवसौ

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कहीश्रमकपाकरीकेसमुकावे॥मु
दररदैतकछमतिजांनहूयेकईव्या
पकवेदवतावे॥८॥छंदमनोहर॥सी
ष्यपुछेगुरदेवगुरूकहैपुछसीष्य
मेरेयेकसंसयहेकोनपुछेअवही॥
तुमहीयोपेकव्रह्मअजहूमेकहूये
कयेकतोअनेकतोभ्रमसवही॥भ्र
मईहकोनकोहेभ्रमहिकोभ्रममभयो
भ्रमहिकोभ्रमकैसेगुनजानेकवही॥
केसेकरिजांनोप्रभूगुरूकेहेनिश्च
धरिनिश्चयेमेजांन्योअवयेकव्रह्म
नवही॥९॥व्रह्महेठोरकोठोरहूसरो
नकोउओरवस्तूकोविचारकियेव
स्तूपहिचांनीयेपंचततीनगुनविस्त
रेविविधभांतिनामरूपजहांलगेमि
थ्यामायामानीयेसेषनागआदिदे

केबैकुंठगोल्मेकपनीवचनविलास
सवभेदभ्रममांनीये नतोकोउफ़े
नसूरतोकहोसोकोनसुंदरसकल
येहउवावाईजांनीये१०प्रथमहि
देहमेतेंवाहेरकोचोकीपरयो इंद्रिय
व्यापारसूषसत्यकरिजांन्योहे कोन
उसंजोगपाईसदगुरुसोभेटभई
उनउपदेसदेकेभीतरकूआंन्योहे॥
भीतरकेंआवतहिबुधिकोप्रकास
भयोहुकोनदेहकौनजगंतकिनमां
नोहे सुंदरविचारतयोंउपज्योअद्वै
तज्ञानआपकोअषंडब्रह्मयेकप
हिचांन्योहे११ हंसालछंद सकल
संसारविस्तारकरिवरणीयोसर्गपा
तालमतिपुरिभ्रमरहोहेयेकनेंगीनत
गीनतजाईयेसोलगेपेरिकरियेकको

येकहिमगहोहै।येनहियेनसीयेनहि
रहैअवसेषसोवेदहूकहोहै।सुंदरस
हीसोविचारकैंआपनपोआपमेंआ
पकृआपहिलहोहै।१२।येकतूंदोय
तूचारतूँनत्वतेजगतकियो।नामअ
रूपहोईवहूतविधिविस्तरयोतुम
विनाऔरकोउनहिवियो।रावतूरंक
तूदिनतुदानितूंहोईकरीमेलतूलीयो
दियोसकलअहतुममांहिउपजेषपे
कहतसुंदरवडोविपूलहीयो।१३॥
तोहीमेंजगतयहतूहीहैजगतमांही
तोमेंअरुजगतमेंभिंनताकहारही॥
भोमीहीतेंभाजनअनेकविधिनामरु
पभाजनविचारदेषेउहेयेकहेमही।
जलतेंतरंगफेनवुदवुदाअनेकभां
तिसोउतोविचारेयेकवहेजलहेस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

ही। जैसे महापुरुष हैं सब को सिद्धांत
ये कसुंदर अखिल ब्रह्म अनंत वेद है के
ही। १४ जैसे ईषरस की मिठाई भां
ति भांति भई फेर करि गारे इक्षुरस
ही लहतु है। जैसे घृत थीजके ढरा
सो बंध जात पुनि फेर पघरेतें वह
घृत ईर हतु है। जैसें पानी जमीके प
षान ह्वै सो देषीयत सो पषांन फेरि पा
नी होय के वह हतु है। तैसें ही सुंदर यह
जगत है ब्रह्म माही ब्रह्म सो जगतम
य वेद सु कहतु है। १५ जैसें काठ कोरि
ना में पूतरी बनाय राषी जो विचारी दे
षीये तो उहे ये कदार है। जैसें माला सू
त ह्वै कीमनी का ह्वै सूत ही के भीतर ह्वै
पोयो पुनि सूत ही को तार है। जैसें ये
कसमुद्र के जलही को लोन भयो सो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

उ लो विचारे पुनि उहे जल षार हे। जे
से ही सुंदर यह जगत सो ब्रह्ममय
ब्रह्म सो जगतमय याही निरधार हे
१६ जेसे येक लोह के हथीयार नाना
विध कीये आदी मध्य अंत येक लोह
ई प्रमानीये। जेसे एक कंचन में भूषन
अनेक भये आदी अंत मध्य येक कंच
नई जानीये। जसे येक मेन के संवारे नर
हाथी हय आदी अंत मध्य येक मेन
के वषानीये। तेसे ही सुंदर यह जगत सो
ब्रह्ममय ब्रह्म सो जगतमय निस्चे क
रि मांनीये। १७ ब्रह्म में जगत यह ये
सी विधि देषीयत जेसी विधि देषी
यत फूलरी मही में। जेसी विधि गली
मडुली चे में अनेक भांति जेसी विधि

देषीयत चूनरी उचीरमें जैसी विधि
कां गुरेउको रूपरी देषीयत जैसी विधि
देषीयत उदउंदानी रमें सुंदर कहत
लीकहाय परि देषीयत जैसी विधि दे
षीयत सीतला सरीरमें । रूप ब्रह्म अरु
माया जैसे शिव अरु शक्ति ऐनी पूर्व
प्रकृति दोउ कही वेद सुनाय हें पति अ
रूपतनी ईस्वर अरु ईस्वरी हें नारायन
लक्ष्मी हैं वचन कहाये हें जैसे कोई अ
र्धनारी नाटेस्वरी रूप धरे ये कवीज ही
ते दोउ हालि नाम पाये हें नैसें ही सुंदर
वस्तु ज्यौं हे सो हिकरस उभय प्रकार हो
ई आप ही दिषाये हें । १९ ॥ छंद इंदविज
य ॥ ब्रह्म निरीह निरामय निर्गुन निसनि
रंजन और न भासे । ब्रह्म अषंडित हे अध

ऊर्ध्व बाहिर भीतर ब्रह्म प्रकासे । ब्रह्म
ही सूक्षम स्थूल जहां लग ब्रह्म ही सा
ही सौ है षत ब्रह्म तमासे ।२०। ब्रह्म हि
माहि विराजत ब्रह्म ही ब्रह्म विना जि
न और ही जांनो । ब्रह्म ही कुंजर कीट
हू ब्रह्म ही ब्रह्म ही रंक रु ब्रह्म ही जां
नो । काल ही ब्रह्म स्वभाव हू ब्रह्म ही
कर्म हू जीव रु ब्रह्म वषांनो । सुंदर ब्र
ह्म विना कछु नाहीं न ब्रह्म ही जानि
सबै भ्रम भानो ।२१। आदि हूंतो सो हि भ
नहीं है पुनि मध्य कहा कछु और कहा
वे । कारन कारज नाम धरे पुनि काज
कारन माहि समावे । काज देषि भयो
विच विभ्रम कारन देषि विभ्रम वि
लावे । सुंदर या निश्चै अभि अंतर है
न गये फिरि है तन आवे ।२२। छंद मनो

हरा। ब्रह्म अरु माया के तो मांपे नही
अंग हे हैं तकरि देषे जब दैत ही दिषा
ई देत ये क करि देषे तब उहे ये क अं
ग हे सूर्ज को देषे जब सूर्ज प्रकास
रह्यो किर्ण को देषे तो किर्ण नानारं
ग हे भ्रम जब भयो तब माया ऐसो
नाम धस्यो भ्रम के गये ते ये क ब्रह्म
सर्व ग हे सुंदर कहत या की द्रष्टि हूं
को फेर भयो ब्रह्म अरु माया के तो मां
पे नहीं अंग हे। २४ श्रोत्र कछू और
नाही नेत्र कछू और नाही नासा कछू
और नाही रसना ने और हे। त्वक कछू
और नाही वाक कछू और नाही हाथ
कछू और नाहीं पाव न की हो रहे मन
कछू और नाही बुधि कछू और नाहीं
चित्त कछू और नाहीं अहंकार नो रहे

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सुंदर कहत येक ब्रह्म विना ओर नांही
आपही मे आप आप रह्यो सब ठौर है २८
इति अद्वैत ज्ञान को अंग समाप्तः॥ अं
ग ३०॥ अथ जगत मिथ्या को अंग प्रा
रंभः॥ छंद मनोहर॥ जगत कि नाम
सुनि जगत भुलायो है कीयो न विचार
कछू मन कपरी है कोन धारी आई सु
निकरि डरि विषपायो है। जेसें कोउ अ
नछतो येसे ही वलाइ यत वार वीन
गई पर कोउ नही आयो है। वेद हु वरनि
के जगत झूठो कीयो अंत पुनि वेद
जर मूल तें उठायो है। तेसें ही सुंदर या
को कोई येक पावे भेद जगत को नाम
सुनि जगत भुलायो है १ येसो ई अज्ञा
न कोई आपु के प्रगट भयो है मिथ्या द्रष्टि
ह्वै गई है पै चाम द्रष्टि कों जेसे येक ब्र

रसौ मरीच माहीं रहै सु मृग वन देषै फे
रफेर देषै मरीचिकौं। जैसैं येक व्योम पृथि
वी दरसैं छाय रह्यो व्योम नहीं देषत दे
षन बहू हरषि कौं। तैसैं येक ब्रह्म ही वि
राजमान सुंदर है ब्रह्मकौं न देषै कोउ
देषै सब सृष्टिकौं।। अज्ञानछतो जगत
अज्ञानतें प्रगट भयो जैसें कोई बाल
क बेताल देषी डर्‌यो है जैसे कोई स्वप
नें मैं डाक्यो है औ थारे आप मुःषतें न
आवे बोल ऐसो दुःष पर्‌यो है जैसें अं
धीयारी रैन जेवरी न जानें तो ही आ
पही तें साप मानी भय अतिक र्‌यो है
तैसें ही सुंदर येक ज्ञान के प्रकास विन
आप दुःष पाय आय आप पचि मर्‌यो
है ३ ब्रह्मई जगत होई ब्रह्म हू रह्यौ
है मृत्तकासमाई रही भाजन के रूप

माहीमत्यकाकोनामभिटिभाजनईगह्यो
है।कनककसमाईसौंहीहोईरह्योआभू
षनकनककहेनकोउआभूषनकह्यो
है।बीजहूसमाईकरिव्रषहोईरह्यो
पुनिव्रषहीकौदेषीयतबीजनहीलह्यो
है।सुंदरकहतयहयोहीकरिजांनोस
वब्रह्मईजगतहोईब्रह्मदूरिरह्योहै।
४ कहतहैदेहमाहीजीवआईमिलि
रह्योकहांदेहकहांजीवयथाचूकप
र्योहै।बूडवेकेडरतेंतरनिकौउपायक
रेयेसेंनहीजानेयहमृगजलभर्योहै
जेवरीकोसापजेसैंसीपविषैरूपोजा
नीऔरकोऔरहीदेषीयोहीभ्रमकसो
है।सुंदरकहतयहयेकईअषंडब्रह्म
ताहीकौपलटकेंजगतनामधर्योहै
५॥इतिजगतमिथ्याकोअंगसमाप्तः

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

अंग॥२३॥अथआज्ञाजेकोअंगप्रा
रं:॥छंदमनोहर॥वेदकोविचारसो
ईसुनकेसंतनमुःषआपहूविचार
करिसोहीधारीयतुहे।जोगकीजुग
तिजांनिजगतेंउदासहोईसुन्नमेस
माधिलाईमनमारीयतुहे।येसेंयेसें
करतकरतकेतेदिनवीतेसुंदरकह
तआजहूविचारीयतुहे।कारोहीनपी
रोनतोनानोहीनसीरोकछूहायन
परतनातेहाथझारीयतुहे।१।मनको
अगमअतिवचनषकीनहीनतबुद्धि
हविचारकरिवहूषंडीयतुहें।श्रवनन
सुनेनाहीनेनहूनदेषेनाहीरसनाको
रससवरसछांडीयतुहें।तुककोस
र्सनाहीघ्रांनकोनविषेहोइपगनि
हकरिजिनतिनहीडाईयतुहें।सुंद

रकहतअतिसूक्षमस्वरूपकछू
हाथनपरततानेहाथमीडीयत
हेअग्रफाकोसंवारतहेआसनहू
मारीकरिआनहीकोधारधारनाक
सीठीयतहेइंद्रनिकोघेरकरिमनहू
कोफेरउनिअकुटिमेंहेरहेरहीयो
चीटीयतहेसवछटिकाफउनिसं
गमेसमायतहांसमाधिलगाईके
रिआषमीटीयतहेंसुंदरकहतह
मओरउकीयेउपायेहाथनपरतता
नेहाथमीटीयतहेंउबोलेहीनमौ
नधरेवेठेहेनगौनकरेजागेहीन
सोवेसोतोदूरहेननीरोहेआवेही
नजाईनतोथिरअकुलातउनिभू
षोईनषानकछूतानोहीनसीरोहे।
लेनहेनदेनकछूहेतनकहेउगी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

स्याम हीन स्वेत पुनि रातो हीन पीरो है
दूबरो न मेद दूबरो न मेटो के छूलां वो ही
न छोटो ना ने सुंदर कहे न कहां का चही
न हीरो है॥४॥ भूमी हीन आपन तो नेज
हीन तापन नो वायू हीन व्योमन नो पंच
को पसारो हैं हाथ ही न पांऊंन नो नैंन
वे न भाऊं न नोरंक हीन रावन नो ह धही
न वारो है पिंड हीन प्रांन न नो जांन न अ
जांन न नो वंध निर्वान न तो हरवो न भा
रो है द्वैत न अद्वैत न नो भीत न अभीत
ना नो सुंदर कह्यो न जाई मिल्यो ही न न्या
रो है॥५॥ छंद इंद्रविजय॥ पाप न पुंन्य
न स्थूल न सुंक्ष्म न वोले न मौंन न सो
वे न जागे पेक न दोई न पुरुष न जोई
कहे कहा कोई न पीछे न आगे हृद
न वाल न कर्म न काल न द्वंद्व स्वविसा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

लनकूंहेनभागे। वेधनमोसूंअमो
सनमोसनसुंदरहेनअसुंदलागे
ईतलअनलकह्योनहीजातजसु
न्यअसुन्यउरेनपरेहेजोतिअजो
तिनजानिसकेकोउआदीनअंतजी
वेनमरेहे रूपअरूपकछूनहीदीस
तभेदअभेदकरेनहरेहेसुद्धअसुद्ध
कहेपुनिकौंनजुसुंदरबोलेनमोन
धरेहे।८। षोजतषोजतषोजिगयेपुनि
षोजतहेंअरुषोजिहेंआनेंगावतगा
वतगायगरहेवहगावतहेअरुगाय
हेंगानें। देषतदेषतहेषिरहेसवदीसन
हीकछूठोरविकानें। बूझतबूझतबूझि
केसुहरेहेरतहेरतहेरहिरानें।९।पिं
डमेहेपुनिपिंडलिपेनहीपिंडपरेपु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

निसोंहीरहावे॥श्रोत्रमेहेपरिश्रोत्र
सुनेनहींद्रष्टिमेहेपरिद्रष्टिनश्रावे
वुद्धिमेहेपरिवुधिनजांनत्तचित्तमेहे
परिचित्तनपावे॥शव्दमेहेपरिशव्द
थक्योकहिशव्दहूसुंदरहूरवनावे
दीभोमीहूतेसेहीश्रापहूतेसेहीते
जहूतेसेहीतेसेहीपोना॥व्योमहूतेसे
हीश्राहीश्रषंडिततेसेंहीव्रह्मरह्योभ
रिभोंना॥देहसंजोगविजोगभयोत
वश्रायोसोकोंनगयोतोहीकोंना॥
जोकहीयेंतोकहेनवनेंकछूसुंदर
जानीगहीमु:षमोंना॥१०॥येकहीव्र
ह्मरह्योभरपूरितोदूसरोकोंनवना
वनहारो॥जोकोउजीवकहेपरमानते
जीवकहाकछूव्रह्मतेंन्यारो॥जोकहे

जीव भयो जगदीस तें तो रवि मांही क
हा को अंधेरो । सुंदर मौन गही यह जोन
के कोन हू भांति न होत निर्धारो ११
जो हम षोज करें अभि अंतर तो उह
षोज वुरे ही विलावे । जो हम वाहीर
कौं उठि दोर न तो कछू वाहीर हाथ न
आवे । जो हम काहू कौं पूछत हे पुनि
सोई अगाध अगाध वतावे नाहीं तें
कोउ न जानि सके तिही सुंदर कौं नही
ठोर वतावे १२ कोन कहे उसकी मु
षवाते नेंनन वेंनन वेंन न आसन वा
सन स्वासन प्यासन याते सीत न घा
मन ठोर न ठांमन पुर्ष न वामन मा
तन ताते रूप न रेष न शेष अशेष न
स्वेत न पीत न स्याम न राते सुंदर मो
न गहि सिध साधक कोन कहे उस

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कीमुषवाते ।१३। वेरथकेकहितेअ
थकेकहीग्रंथथकेनिसवासरगा
ते । सेशथकेसवग्रंथथकेपुनिषोज
कीयोवहूभांतिविधाते । पीरथकेप
निमीरथकेपुनिधीरथकेवहूवोल
गिराते । सुंदरमौनगहीसिधसाधक
कौनकहेउसकीमुषवाते ।१४। जोगि
थकेकहीजेनथकेऋषिताषसथकि
रहेफलषाते । न्यासीथकेवनवासीथ
केजुउदासीथकेवहूपेरफिराते ।।
शेषमसाईकओरउलाईकथाकीर
हेमनमेमुसकाते । सुंदरमौनगहीसि
धसाधककौनकहेउसकीमुःषवा
ते ।१५। इतिश्रीआश्चर्जकोअंगसमाप्तः
३१। इतिश्रीसुंदरदासजीकृतसुंदरवि
लासग्रंथःसमाप्तः ।। ।। ।।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

॥ अथ सूचीपत्र लिख्यते ॥

१	अथ गुरुदेव को अंग	५८	अथ पतिब्रता को अंग
७	अथ उपदेस चिंतामनि को अंग	६०	अथ बिरह उराहने को अंग
१५	अथ काल चिंतामन को अंग	६२	अथ सब्दसार को अंग
२०	अथ देह आत्मा बिछोह को अंग	६४	अथ भक्ति ज्ञान मिस्रित को अंग
२२	अथ तृस्ना को अंग	६५	अथ बिप्रजे सब्द को अंग
२६	अथ धीर्ज उराहाने को अंग	७२	अथ सुरातन को अंग
२९	अथ बिस्वास को अंग	७७	अथ साधु को अंग
३२	अथ देह मलीनताय रूपहार को अंग	८६	अथ ज्ञानी को अंग
३४	अथ नारी निंद्या को अंग	९०	अथ सांख्य ज्ञान को अंग
३६	अथ दुष्टजन को अंग	९९	अथ आपने भाव को अंग
३७	अथ मन को अंग	१०२	अथ स्वरूप बिस्मरनी को अंग
४४	अथ चानक को अंग	१०६	अथ बिचार को अंग
५०	अथ बिप्रीत ज्ञान को अंग	११४	अथ ब्रह्म निःकलंक को अंग
५२	अथ वचन बिवेक को अंग	११५	अथ आत्मा अनुभव को अंग
५७	अथ निर्गुन उपासना को अंग	१२३	अथ ज्ञान को अंग
		१२९	अथ निरसंसै को अंग

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

१२७ अथ प्रेम ज्ञानी को अंग	मिती जेठ वदी १२ संवत् १९३३॥ लिषतं लाला रामअधीन शाकिन करहई खास
१२८ अथ अद्वैत ज्ञान को अंग	
१२९ अथ जगत मिथ्या को अंग	
१३० अथ आश्चर्ज को अंग	

मुमुक्षु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय
1741

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.

[illegible]
[illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

वेदांग विद्यालय
क्रमांक......१४७......
दिनांक......................

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri.